www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 5 ■ 1-15 जनवरी, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❒ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❒ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❒ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

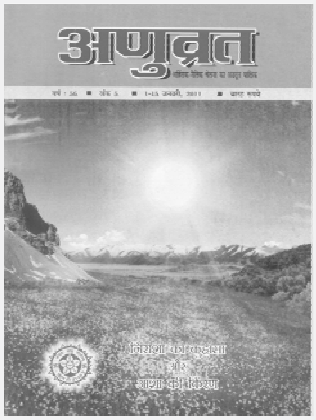

◆ स्वप्न और मन	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
◆ निराशा का कुहासा और आशा की किरण	*आचार्य महाश्रमण*	5
◆ गरीब बच्चों पर नहीं है सरकार की नजर	*नरेन्द्र देवांगन*	7
◆ सपनों के सौदागर	*जसविंदर शर्मा*	9
◆ यहां सब दागी हैं	*राजेन्द्र शेखर*	10
◆ लोकतंत्र का शाही अपमान	*रामशरण जोशी*	12
◆ पुस्तक पढ़ें - आगे बढ़ें	*जनार्दन शर्मा*	13
◆ बुराई का बदला	*राजकुमार जैन 'राजन'*	14
◆ नया वर्ष : नया संकल्प	*कुसुम जैन*	17
◆ कैसे मनाएं नव वर्ष	*प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा*	19
◆ अनुकरणीय व्यक्तित्व	*स्वामी वाहिद काज़मी*	21
◆ सेहत भरी सुबह की सैर	*डॉ. विनोद गुप्ता*	22
◆ इनको कभी न ठगें	*समणी मल्लिप्रज्ञा*	24
◆ 'अणुव्रत' से मिटाइए भ्रष्टाचार	*डॉ. निज़ामउद्दीन*	27
◆ निस्पृह और पुरुषार्थी व्यक्तित्व ओमप्रकाश सोनी	*डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी*	28
◆ पर्यावरण संतुलन का मंत्र : संयम	*साध्वी निर्वाणश्री*	31

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ प्रेरणा	11
◆ सुर्खियां	16
◆ कविता	15, 18, 20
◆ राष्ट्र चिंतन	26
◆ पाठक दृष्टि	30
◆ झांकी है हिन्दुस्तान की	30
◆ लघुकथा/बाल कथा	29, 32
◆ अणुव्रत आंदोलन	33-39
◆ कृति	40

www.terapanthinfo.com

भ्रष्टाचार की सुनामी

सन् 2011 की संध्यावेला में राजनेताओं द्वारा हुए महाघोटाले के जो संवाद सुनाई दिये उससे इस तथ्य को बल मिला कि गांधी के इस देश में ऊपर से लेकर नीचे तक भ्रष्ट आचरण का शासन है, जिसके बोझ तले हर दूसरे भारतीय को वर्ष में कम से कम एक बार अपना काम कराने के लिए रिश्वत देनी पड़ती है।

क्या हो गया है राजनेताओं को? क्या वे राजनीति में इसीलिये आ रहे हैं कि चुनाव जीतकर, दोनों हाथों से उस जनता का दोहन करें जो चुनाव के समय उनके चेहरों में स्वच्छ छवि की मासूमियत देख विजयी बना संसद या विधानसभाओं में भेजती है। निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा जनता का विश्वास जिस तरह से खंड-खंडित किया जा रहा है उससे जनतांत्रिक शासन प्रणाली की चूलें भी हिल उठी हैं। जिन लोगों के हाथों में देश की कमान है उन्हें उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की इस सूक्ति पर चलना होगा 'यश त्याग में मिलता है, धोखे से नहीं।' यदि राजनेता इसी तरह धोखा देते रहे तो जनतंत्र से जनता का विश्वास ही उठ जाएगा।

1.7 लाख करोड़ रुपए के 2-जी स्पेक्ट्रम घोटाला दंश से देश संभल भी नहीं पाया कि घोटालों के इस मौसम में उत्तर प्रदेश से 2 लाख करोड़ रुपए के अनाज घोटाले के समाचारों से पूरा देश स्तब्ध रह गया। इन घोटालों ने भ्रष्टाचार रूपी गंगा में सुनामी का खतरा पैदा कर दिया है। क्या भ्रष्ट आचरण करना हमारे राजनेताओं की नियति बन गई है? क्या बिना घोटाला किये कोई बड़ा आदमी नहीं बन सकता? आंकड़े तो यही संकेत दे रहे हैं कि खूब भ्रष्टाचार करो और संचार के माध्यम से प्रसिद्धि पाओ। आजादी के 63 वर्षों में राजनेताओं एवं नोकरशाही ने छोटे-बड़े घोटाले कर देश को दुनिया के भ्रष्ट देशों में चौथे पायदान पर पहुंचा दिया है। दुनिया के 86 देशों में व्याप्त भ्रष्टाचार के आकलन से यह तथ्य सामने आया है कि अफगानिस्तान, नाइजीरिया और इराक के बाद भारत चौथे नम्बर का देश है, जहां भ्रष्टाचार, आर्थिक अनियमितताओं और घूसखोरी का बोलबाला है।

हिन्दुस्तान दैनिक में प्रकाशित समाचार- **3,00,000 करोड़ डकार गये 10 घोटालेबाज, सिर्फ गरीबों से 900 करोड़ ले लेते हैं घूसखोर तथा सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी- कौड़ियों के भाव बेच दिया 2-जी स्पेक्ट्रम,** हमारे कान खड़े कर देती है। अभी तक जो बड़े घोटाले हुए हैं उनमें प्रमुख निम्न घोटालों से हमारी जनतंत्रीय छवि धूमिल हुई है -

• **बोफोर्स घोटाला**	**64 करोड़ रुपए**
• **यूरिया घोटाला**	**133 करोड़ रुपए**
• **चारा घोटाला**	**950 करोड़ रुपए**
• **शेयर बाजार घोटाला**	**4000 करोड़ रुपए**
• **सत्यम घोटाला**	**7000 करोड़ रुपए**
• **स्टांप पेपर घोटाला**	**43000 करोड़ रुपए**
• **कॉमनवेल्थ गेम्स घोटाला**	**70000 करोड़ रुपए**
• **2-जी स्पेक्ट्रम घोटाला**	**1.67 लाख करोड़ रुपए**
• **अनाज घोटाला**	**2 लाख करोड़ रुपए (अनुमानित)**

शिष्टाचार बनते जा रहे भ्रष्टाचार का सामना करने के लिए आवश्यक है कि जन-जन को भ्रष्ट आचरण के खिलाफ सतर्क किया जाये और उन्हें नैतिक-मानवीय मूल्यों से परिचित कराया जाये। जिस दिन जनता भ्रष्टाचार के विरोध में खड़ी होगी उसी क्षण से भ्रष्टाचार रूपी दानव अपने पंजे फैलाना बंद कर देगा। अणुव्रत आंदोलन का यही प्रयास है कि व्यक्ति-व्यक्ति नैतिक मूल्यों से आबद्ध हो। वर्ष 2011 की स्वर्णिम किरणें भ्रष्टाचार रूपी अंधेरे को हटाने में सक्षम बनें, इसी उम्मीद के साथ स्वागत है वर्ष 2011 का।

• डॉ. महेन्द्र कर्णावट

www.terapanthinfo.com

स्वप्न और मन

आचार्य महाप्रज्ञ

अध्यात्म के लोगों ने इस संसार को दो-तीन उपमाओं में उपमित किया है--स्वप्न, इन्द्रजाल और मृगमरीचिका। संसार स्वप्न-जैसा है। संसार इन्द्रजाल के समान है। संसार मृगमरीचिका के समान है। भारतीय साहित्य में स्वप्न की बहुत चर्चा प्राप्त है। भारतीय विद्या की अनेक शाखाओं में स्वप्न के विषय में बहुत लिखा गया। अष्टांगनिमित्त शास्त्र का अंग है स्वप्नशास्त्र। भारत के लोग स्वप्न में बहुत विश्वास करते रहे हैं। ढाई-तीन हजार वर्ष पुराने साहित्य में स्वप्न-पाठकों का विस्तार से उल्लेख प्राप्त है। स्वप्न-पाठक स्वप्न को सुनकर उसका फल बताते थे। उनका फल-निरूपण अक्षरशः सही होता था। स्त्रियों को गर्भावस्था में स्वप्न आने की बात मिलती है। वे स्वप्न-पाठकों से उस स्वप्न का फलाफल जान लेती थी। जैन साहित्य, बौद्ध और वैदिक साहित्य में स्वप्न की घटनाएं प्रचुरता से प्राप्त हैं।

नींद और स्वप्न का संबंध है। प्रत्येक व्यक्ति स्वप्न देखता है। वह उसे याद रख सके या नहीं, विश्लेषण कर सके या नहीं यह दूसरी बात है।

जैन आगमों में स्वप्न संबंधी विश्वस्त जानकारियां यत्र-तत्र बिखरी पड़ी हैं। आदमी की तीन अवस्थाएं होती हैं सुप्त अवस्था, निद्रा अवस्था और अर्धनिद्रा अवस्था। आदमी जब आधा जागता है, आधा सोता रहता है तब उसे स्वप्न आते हैं। स्वप्न में वास्तु-दर्शन के आधार पर उसके अनेक प्रकार होते हैं। उनके कुल 72 प्रकार हो जाते हैं। कुछ महास्वप्न होते हैं और कुछ सामान्य स्वप्न। कुछ स्वप्न यथार्थ होते हैं और कुछ अयथार्थ। कुछ स्वप्न सच्चे होते हैं और कुछ स्वप्न झूठे होते हैं। कुछ स्वप्न क्लेष उत्पन्न करने वाले होते हैं और कुछ स्वप्न समाधि उत्पन्न करने वाले होते हैं। चित्त-समाधि की प्राप्ति के अनेक कारण हैं। उनमें एक कारण है स्वप्न। ऐसे स्वप्न आते हैं, जिनसे उलझन सुलझ जाती है।

विज्ञान की अनेक खोजों के साथ स्वप्न की बात जुड़ी हुई है। वैज्ञानिक को पूरा समाधान नहीं मिल रहा था। स्वप्न ने उसकी गुत्थी सुलझा दी। सिलाई मशीन की खोज हुई। पूरा समाधान नहीं मिला। स्वप्न में समाधान मिल गया।

मनोविज्ञान का पूरा एक विभाग 'स्वप्न-विज्ञान' से जुड़ा हुआ है। विशेषावश्यक भाष्य में बताया गया है कि संस्कारों के कारण स्वप्न आते हैं। मनोविज्ञान मानता है कि दमित इच्छाएं, अवचेतन मन की इच्छाएं, स्वप्न में प्रकट होती हैं। दिन में चेतन मन काम करता है। चेतन में बुद्धि है, तर्क है, काट-छांट करने की शक्ति है। वह दिन में कार्यरत रहता है। जब आदमी सो जाता है तब वह निष्क्रिय हो जाता है और अवचेतन मन सक्रिय हो जाता है।

स्वप्न श्रुत, दृष्ट या अनुभूत घटना का ही आता है। अश्रुत, अदृष्ट या अनुभूत घटना का कभी स्वप्न नहीं आता। कुछ लोग कहते हैं--हमें ऐसा स्वप्न आया, जिसका दृश्य न श्रुत था, न दृष्ट था और न अनुभूत था। यह बात अन्यथा भी नहीं है। इसका भी पुष्ट कारण है। हमारी स्मृति केवल इस मस्तिष्क की स्मृति नहीं है, इससे परे की स्मृति है, पूर्वजन्म के संस्कारों की स्मृति है। इन संस्कारों की परतें हमारे मस्तिष्क में हैं। संभव है, आज का मस्तिष्क-विज्ञानी इसे न जान पाया हो। अभी मस्तिष्क के अनेक रहस्य अज्ञात हैं। हजारों-हजारों वैज्ञानिक मस्तिष्क के अध्ययन में संलग्न हैं, पर आज भी वह रहस्य बना हुआ है।

आचार्य कालूगणी कहते, जब कभी किसी समस्या का समाधान नहीं मिलता तो मैं उस समय उसको छोड़ देता। रात को स्वप्न में समाधान मिल जाता। ऐसा लगता है कि मानो कोई समाधान प्रस्तुत कर रहा है। कालूगणी को स्वप्न आया। स्वप्न में छोटे-छोटे सफेद बछड़े देखे। वह यथार्थ स्वप्न था। उसका फलित यह हुआ था कि शासन में छोटे-छोटे संत बहुत आए। श्रीमज्जयाचार्य और आचार्य तुलसी के अनेक स्वप्न लिखे पड़े हैं। उनकी सचाई असंदिग्ध है। उन स्वप्नों से प्रेरित होकर श्रीमज्जयाचार्य ने अनेक कार्य संपादित किये। स्वप्न बहुत प्रेरक होते हैं।

संस्कृत का एक उच्चकोटि का ग्रंथ है कादम्बरी। उसके लेखक हैं बाणभट्ट। इस ग्रंथ की पूरी कल्पना स्वप्न में ही की गई थी। कल्पना को विस्तार दिया और महान् ग्रंथ बन गया।

स्वप्न की भाषा सांकेतिक होती है। उसे जो नहीं पकड़ पाता, वह स्वप्न को नहीं जान पाता। वह उसमें उलझ जाता है। उसका रास्ता बहुत टेढ़ा-मेढ़ा होता है। उसके दृश्य विचित्र होते हैं। कल्पना किसे कहते हैं? आदमी ने शेर देखा है। आदमी ने आदमी को देखा है। स्वप्न में एक ऐसा प्राणी देखा, जिसका सिर शेर का है और शेष शरीर मनुष्य का। नरसिंह का रूप सामने आ गया। यह है कल्पना। कल्पना और स्वप्न की भाषा सांकेतिक होती है।

www.terapanthinfo.com

सारे स्वप्न यथार्थ ही नहीं होते, अयथार्थ भी होते हैं। उन पर भरोसा करने वाला धोखा भी खा जाता है। स्वप्न का बहुत बड़ा विज्ञान है। यह जीवन-दिशा को बदलने वाला, नीरस को सरस बनाने वाला होता है। यदि हम स्वप्न के प्रतीकों को समझ सकें, उसकी सांकेतिक भाषा को जान सके तो स्वप्न में बहुत लाभान्वित हो सकते हैं।

एक भिखारी भीख के लिए घर-घर घूम रहा था। कुछ मिला नहीं। अंत में एक घर में उसे थोड़े दाने मिले। कुछ दाने खा-पीकर वह सो गया। कुछ दाने शेष रह गए। थका-मांदा था ही। सोते ही नींद आ गई। सपने में देखा कि एक फरिस्ता आकर उससे भीख मांग रहा है। भिखारी ने शेष बचे दानों में से एक दाना उसे दे दिया। यहाँ सपना पूरा हो गया। वह प्रातः उठा। उसने देखा उसके पात्र में और दाने वैसे ही पड़े हैं, केवल एक दाना सोने का हो गया। उसने सोचा यदि मैं सारे दाने उस फरिस्ते को दे देता तो आज निहाल हो जाता।

सारे स्वप्न यथार्थ ही नहीं होते, अयथार्थ भी होते हैं। उन पर भरोसा करने वाला धोखा भी खा जाता है। एक पुजारी ने स्वप्न में देखा कि उसका मंदिर घेवरों से भर गया है। उसने सोचा, अच्छा अवसर है। मैं गांववालों को भोजन करा दूं। सुबह उठा। सारे गांव को न्योत दे आया। सभी लोग मंदिर पर आ गए। पुजारी सो रहा था। भोजन का समय अतिक्रान्त हो गया। एक व्यक्ति ने पुजारी को उठाकर, निमंत्रण की बात कही। पुजारी बोला--ठहरो! मैं स्वप्न ले रहा हूँ। स्वप्न में जब घेवरों से मंदिर भर जाएगा, तब मैं आपको भोजन करा दूंगा। ये सब स्वप्न के घेवर थे।

स्वप्न के देवता पर, ज्योतिषी और स्वप्न पर पूरा भरोसा करना खतरे से खाली नहीं होता। कुछ लोग कहते हैं, मुझे स्वप्न में देवता ने ऐसा कहा है। वह उसके अनुसार काम करता है और फंस जाता है। इसमें एक बात और है कि स्वप्न की भाषा को समझना बहुत कठिन होता है। उसमें दिखता कुछ है और उसका अर्थ कुछ और ही होता है। इसीलिए ये सारी गड़बड़िया होती हैं।

आगमों में तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव की माताएं गर्भावस्था से पूर्व स्वप्न देखती हैं। वे स्वप्न वस्तुपरक होते हैं। उनमें कलश, छत्र, सरोवर, माला आदि-आदि देखे जाते हैं। उनका अर्थ भिन्न-भिन्न होता है। ये सारे प्रतीक हैं। इन प्रतीकों का सही अर्थ जानना सहज नहीं होता। सभी तीर्थंकरों के प्रतीक चिह्न हैं। किसी का मृग, किसी का शेर, किसी का छत्र और किसी का सर्प।

स्वप्न हैं प्रतीकात्मक

दिन में जो घटनाएं घटती हैं, उनके स्वप्न भी आते हैं। यह पुनरावृत्ति होती है। चेतन मन में जो बात रही, वह अचेतन मन के द्वारा प्रकट हो जाती है। कुछ बातों का पूर्वाभास भी होता है। जो घटना भविष्य में घटित होने वाली है, उसको पहले ही जान लिया जाता है। यह है पूर्वाभास। यह बहुत सही होता है।

स्वप्न का संबंध संस्कारों, पूर्व की घटनाओं, सुनी हुई या जानी हुई सूचनाओं से है। यह सूचना अवचेतन मन भी दे सकता है और कोई दिव्यात्मा भी दे सकता है। दिव्यात्माओं के कुछ विषय होते हैं। वे प्रत्यक्ष होकर कुछ नहीं कहते। स्वप्न में कुछ बातें बताते हैं। आपवादिक रूप में ही प्रत्यक्ष कुछ कहते हैं। वे दिव्यात्माएं अमंगल या मंगल की बात बता देती है।

स्वप्न के अनेक प्रकार होते हैं। काल के आधार पर भी उनका विभाजन होता है। कुछ स्वप्न दिन में आते हैं और कुछ रात में। कुछ रात के पहले प्रहर में और कुछ दूसरे-तीसरे और चौथे प्रहर में आते हैं। कौन-सा कल्याणकारी होता है और कौन-सा अकल्याणकारी इसे सब नहीं जानते। स्वप्नशास्त्र के भी अपने नियम हैं। एक नियम है कि कल्याणकारी स्वप्न आने के बाद तत्काल उठकर ईश्वर जाप में लग जाना चाहिए। पुनः नींद नहीं लेनी चाहिए। जो पुनः सो जाते हैं, उनके स्वप्न का इष्ट परिणाम नष्ट हो जाता है। दिन में लिये जाने वाले स्वप्न को दिवास्वप्न कहते हैं। इनमें भी कल्पना होती है। ये यथार्थ भी होते हैं।

स्वप्न के विषय में हमारी जानकारी बहुत ही कम है। यदि पूरी जानकारी हो तो उससे पूरा लाभ उठाया जा सकता है। स्वास्थ्य, संपदा, व्यापार, अध्यात्म विकास आदि के साथ स्वप्न जुड़े हुए होते हैं। एक विदेशी लेखक की टांगें टूट गईं। उसने स्वप्न में देखा कि एक फरिस्ता आया है, उसकी टांगें ठीक कर रहा है प्रातः वह उठा, देखा कि उसकी टांगें ठीक हैं। वह चल-फिर सकता है।

अध्यात्म-विद्या ने वस्तु की नश्वरशीलता को दिखाने के लिए स्वप्न की उपमा दी गई है। जैसे स्वप्न की चीजें नश्वर होती हैं, स्वप्न नश्वर होता है, वैसे ही संसार के सभी पदार्थ नश्वर है। एक भिखारी ने स्वप्न देखा कि वह राजा बन गया है। उसके महल है, रानियां है, हाथी-घोड़े हैं और वह ठाट-बाट से रह रहा है। इतने में ही एक कुत्ता आता है और सिरहाने रखे भिक्षापात्र को चाटने लगता है। भिक्षापात्र फूट जाता है। उसके स्वप्न का राजसी ठाट-बाट भी चुक जाता है। यह है संसार की नश्वरता।

स्वप्न का बहुत बड़ा विज्ञान है। यह जीवन-दिशा को बदलने वाला, नीरस को सरस बनाने वाला होता है। यदि हम स्वप्न के प्रतीकों को समझ सकें, उसकी सांकेतिक भाषा को जान सके तो स्वप्न में बहुत लाभान्वित हो सकते हैं। सचमुच यह गूढ़ विद्या है।

www.terapanthinfo.com

निराशा का कुहासा और आशा की किरण

आचार्य महाश्रमण

आदमी के विकास में एक बहुत बड़ी बाधा है निराशा। कुछ व्यक्तियों में यह दुर्बलता होती है कि कहीं थोड़ी भी असफलता मिल जाए तो वे उस कार्य को निराश होकर छोड़ देते हैं। वे सोचने लगते हैं हमारी किस्मत ही हमारा साथ नहीं दे रही है। हम कोई बड़ा काम नहीं कर सकते। यह सोच व्यक्ति में निराशा उत्पन्न करने वाली और विकास को अवरुद्ध करने वाली हो सकती है। आदमी के जैसे विचार होते हैं, जैसा दृष्टिकोण होता है, वह वैसा ही बनने लगता है। कमजोर नींव पर ऊँचा मकान कैसे बन सकता है? जिस कार्य में बहुत बड़ी सफलता मिल सकती थी, निराश व्यक्ति उससे वंचित रह सकता है। यदि विचारों में निराशा है, उदासीनता है तो फिर सफलता कैसे मिलेगी?

संन्यासी जिस मकान में ठहरा हुआ था। उसका मालिक चौर्य-कर्म करता था। जब वह अपना कार्य करके पुनः लौटता तब संन्यासी के पास जाता। संन्यासी पूछता आज क्या मिला? उत्तर मिलता आज तो कुछ नहीं मिला। संभवतः कल कुछ मिल जाएगा। इस प्रकार एक महीना बीत गया। वह हमेशा खाली हाथ आता, लेकिन कभी निराश नहीं हुआ। संन्यासी को भी एक बोध पाठ मिल गया कि साधना में सफलता न भी मिले तो निराश नहीं होना चाहिए। आशावादिता के साथ प्रयास करते रहना चाहिए।

युवक शक्ति का प्रतीक होता है। वह अपनी शक्ति का प्रयोग अच्छे कार्यों में करे और इस बात से हमेशा सावधान रहे कि निराशा का कुहासा उसके पथ को अंधकारमय न बना दे। कुछ लोग परिस्थितियों के सांचे में ढल जाते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो सांचे को बदल देते हैं। युवक में संकल्प, साहस और कुछ कर गुजरने की तमन्ना होती है। वह परिस्थितियों के सांचे में ढलना नहीं, वक्त के सांचे को बदलना जानता है। युवक अपनी युवावस्था का भरपूर उपयोग करे। कार्यकर्ता बनकर काम करे। चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में काम करे। धर्म के क्षेत्र में या समाज के क्षेत्र में काम करें।

जहाँ सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और निर्भीकता होती है, वहाँ सफलता अवश्य मिलती है। ईमानदार व्यक्ति सत्य के लिए उत्सर्ग करने को तैयार रहता है। वह किसी पर अत्याचार नहीं कर सकता। यदि दुनिया में ईमानदारी व्याप्त हो जाए, व्यक्ति-व्यक्ति ईमानदारी का उपासक बन जाए तो अनेक-अनेक समस्याओं को तो पैदा होने का मौका ही नहीं मिलेगा और अनेक समस्याएं अपनी मौत मर जाएंगी।

युवक की पहली महत्त्वपूर्ण अर्हता है कि उसके जीवन में ईमानदारी अवश्य होनी चाहिए। वह व्यक्ति निष्प्राण है जिसके जीवन में ईमानदारी का प्राण नहीं है। यदि युवा पीढ़ी के जीवन में ईमानदारी बोलती है तो मानना चाहिए कि बहुत बड़ी शक्ति उपलब्ध हो गई। ईमानदारी केवल व्यवसाय के क्षेत्र में ही नहीं, आदमी के हर आचार, विचार और व्यवहार में होनी चाहिए।

रोम की राज्यसभा में हेल विडियस नामक एक न्याय-परायण और सत्यनिष्ठ सदस्य था। एक बार वहाँ का बादशाह राज्यसभा में एक अनुचित प्रस्ताव पारित कराना चाहता था, किन्तु उसे हेल विडियस का डर था। इसलिए उसको अपने पास बुलाकर कठोरता से कहा 'विडियस! यदि इस प्रस्ताव का तुमने विरोध किया तो सिर उड़ा दिया जाएगा।' विडियस ने साहस के साथ कहा 'मृत्यु का भय मुझे आदर्श से विचलित नहीं कर सकता। मेरे सामने समाज और देश के हित का प्रश्न सबसे पहले है। यदि न्याय की रक्षा के लिए मुझे जीवन की आहुति देनी पड़ी तो परम सौभाग्य मानूंगा।' हेल विडियस का उत्तर सुनकर बादशाह ने अपना निर्णय बदल दिया। जहाँ सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और निर्भीकता होती है, वहाँ सफलता अवश्य मिलती है। ईमानदार व्यक्ति सत्य के लिए उत्सर्ग करने को तैयार रहता है। वह किसी पर अत्याचार नहीं कर सकता। यदि दुनिया में ईमानदारी व्याप्त हो जाए, व्यक्ति-व्यक्ति ईमानदारी का उपासक बन जाए तो अनेक-अनेक समस्याओं को तो पैदा होने का मौका ही नहीं मिलेगा और अनेक समस्याएं अपनी मौत मर जाएंगी।

अनेक लोग देवी-देवताओं की पूजा

www.terapanthinfo.com

करते हैं, किन्तु आदमी ईमानदारी देवी की पूजा अवश्य करें। इसकी पूजा के लिए न धूप-दीप की जरूरत है, न मस्तक झुकाने की जरूरत है और न ही इसे स्थापित करने के लिए घर में कोई स्थान की अपेक्षा है। इसे प्रतिष्ठित करने के लिए तो व्यक्ति के हृदय, मन, दिमाग और भावों का स्थान चाहिए। यदि मन-मंदिर में ईमानदारी देवी की प्रतिष्ठा कर सकें तो अन्य देवी-देवता तो स्वयं आकृष्ट हो सकते हैं। आगम में कहा गया 'देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।' देवता तो स्वयं उस व्यक्ति को नमस्कार करते हैं जिसके जीवन में ईमानदारी, अहिंसा, संयम आदि हो।

युवक की दूसरी महत्त्वपूर्ण अर्हता है कि वह अपने जीवन में नशे को स्थान न दे। अधिक नशा करने वाला व्यक्ति अपना जीवन तो बर्बाद करता ही है, परिवार व अन्य लोगों को भी नुकसान पहुँचा सकता है। प्रारम्भ में तो वह शौकिया के रूप में शुरू करता है। बाद में नशा उसकी आदत बन जाता है। युवावस्था काम करने की अवस्था होती है। इस अवस्था में जोश होता है, दौड़-धूप करने का सामर्थ्य होता है, खूब श्रम किया जा सकता है। जवान बेटे से मां-बाप को भी बहुत आशाएं होती हैं। वह परिवार का भरण-पोषण करने वाला और मां-बाप का सहारा होता है। इस समय यदि वह नशा करने लग जाए, अपनी कमाई परिवार वालों को देने की अपेक्षा उनसे ही मांगने लग जाए, तो सारी आशाएं धूमिल हो जाती हैं। ऐसी परिस्थिति से उबरने के लिए जरूरत है दृढ़-संकल्प, आशा और आत्मविश्वास की। एक युवक ने अपने बारे में लिखा है 'अचानक मुझे शराब की लत लग गई। मैं चौबीसों घंटों नशे में डूबा रहने लगा। हालत यह हो गई कि सुबह बिस्तर से उठते ही शराब से कुल्ला करता और रात सोने तक या यूं कहो कि बेहोश होने तक पीता रहता। जिस दिन शराब नहीं मिलती, उस दिन हालत खराब हो जाती। शरीर कांपने लगता, पैर बेजान हो जाते, आँख-नाक से पानी रिसने लगता, मस्तिष्क चेतना शून्य-सा हो जाता। शराब पाने के लिए मैं मीलों का सफर कर लेता। मुझे लगा, मेरे शरीर में खून का स्थान शराब ले चुकी है। सब रिश्तेदारों ने मुंह फेर लिया। माता-पिता, भाई-बहिन समझा-समझा कर थक गए। मगर मैं किसी की नहीं सुनता था। मुझे झटका तब लगा जब मेरी बेटी ने मुझे बताया कि सब उसे शराबी की बेटी कह कर पुकारते हैं। उस दिन मैंने पहली बार सोचा कि बच्चों का भविष्य गर्क हो रहा है। आज के बाद मैं शराब कभी नहीं पीऊँगा। मेरे विचारों में परिवर्तन आया। आत्मविश्वास और नए जीवन की आशा जाग उठी। बस, उसी दिन से जीवन में बदलाव आना शुरू हो गया। पीने की मात्रा तेजी से घटने लगी। पंद्रह दिन बीतते-बीतते मुझे शराब से घृणा हो गई।'

युवक की तीसरी महत्त्वपूर्ण अर्हता है कि ज्यादा गुस्सा न करे। बार-बार गुस्सा करना, बात-बात में उत्तेजित हो जाना, आवेश की स्थिति बन जाना ये सब जीवन-विकास में बाधक बन सकते हैं। कुछ समय के लिए गुस्सा आ सकता है, किन्तु उस गुस्से को टिका कर न रखें। जो किसी के द्वारा कुछ कहे जाने पर उस बात की गांठ बांधकर लम्बे समय तक मन पर भार रखता है, बार-बार तनावग्रस्त बन जाता है, दूसरों के साथ अशोभनीय व्यवहार करता है, वह व्यक्ति अपने कार्य में सफल नहीं हो सकता। आदमी यह प्रयास करे कि कलह की स्थिति विनोद में बदल जाए, कटु वातावरण सौहार्द में बदल जाए।

आदमी अहिंसाप्रधान जीवनशैली अपनाने का प्रयास करे। समय-नियोजन के साथ योजनाबद्ध तरीके से काम करें। करणीय और अकरणीय का विवेक रखे। इन सब बातों के साथ एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है आत्म-चिंतन।

आदमी को निश्चिन्त होकर शांत वातावरण में आत्म-सम्प्रेक्षा करनी चाहिए। मैंने अब तक क्या किया, अर्थात् अतीत का सिंहावलोकन करे। कौन से करणीय कार्य अवशेष हैं, अर्थात् भविष्य में मुझे कौन-कौन से कार्य करने हैं? ऐसा कौन सा काम है जो मेरे लिए करणीय है, शक्य है, फिर भी मैं आलस्यवश, प्रमादवश, निराशवश नहीं कर रहा हूँ। इन बिन्दुओं पर व्यक्ति प्रतिदिन चिंतन करे और कहीं कोई कमी हो तो उसे दूर करने का प्रयास करें। आदमी निराश न बने। हर काम बड़ी आशा और उत्साह के साथ करे। किसी कवि ने सुंदर कहा है

रात लम्बी है मगर तारों-भरी है,
हर दिशा का दीप पलकों ने जलाया।
सांस छोटी है मगर आशा बड़ी है,
जिन्दगी ने मौत पर पहरा बिठाया।।

निराशा कोई साधारण बीमारी नहीं, बल्कि यह एक भयंकर महामारी की तरह है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● दूरभाष : 22809695

www.terapanthinfo.com

गरीब बच्चों पर नहीं है सरकार की नजर

नरेन्द्र देवांगन

बच्चों के स्वास्थ्य का मामला हो या फिर उनके लापता होने की समस्या, विश्व ने इस ओर कभी भी ध्यान नहीं दिया या यूं कहें कि इस दिशा में कभी गंभीरता से ध्यान ही नहीं दिया। गरीबी और भुखमरी के सबसे पहले शिकार बच्चे ही होते हैं। कल्पना कीजिए जब आपको भूख लगे और दो दिनों तक खाना नहीं मिले, तब क्या होगा? फिर अपनी जगह एक नन्ही जान को रखकर देख लीजिए। नन्ही जान पर क्या असर पड़ता होगा, जब खाने-पीने के दिन हैं तब भूखे रहना पड़ता है। ऐसे में बड़े होने पर उसके स्वस्थ होने की क्या गारंटी है। देश और प्रदेश की बात करें, तब कागजों पर योजनाएं काफी अच्छी लगती हैं, पर उनका अमल सही तरीके से नहीं हो पाता। भले ही वह बच्चों के टीकाकरण की योजना हो या लापता हो चुके बच्चों को ढूंढ़ने का मुद्दा हो।

अंतर्राष्ट्रीय चैरिटी संस्था 'सेव द चिल्ड्रेन' का कहना है कि अगर सरकारें गरीब परिवारों पर ध्यान दें तो 5 साल से कम उम्र के लाखों बच्चों की जान बचाई जा सकती है। 'यूनीसेफ' ने भी अपनी एक रिपोर्ट में ऐसी ही कई बातों का खुलासा किया है। यूनीसेफ और सेव द चिल्ड्रेन की रिपोर्टें ऐसे समय में आईं, जब अक्टूबर 2010 के अंत में दुनियाभर के नेता सहस्राब्दी लक्ष्यों पर हुई प्रगति की समीक्षा के लिए न्यूयार्क में मिलने वाले हैं। सहस्राब्दी विकास से जुड़े लक्ष्य 2015 तक के लिए थे। इनके तहत दुनियाभर में गरीबी और दुःख को एक हद तक कम करने का उद्देश्य रखा गया था। अभी आई रिपोर्टों से लगता नहीं कि इन उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में कोई खास प्रगति हो पाई है। ऐसी स्थिति में संशय है कि लक्ष्यों को 2015 तक पूरा किया जा सकेगा?

कुल मानव तस्करी में आधे बच्चे:

एक साल में मुंबई से करीब 8 हजार बच्चे लापता हुए। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के एक आकलन के हवाले से 2002 में दुनियाभर से करीब 12 लाख बच्चों की तस्करी हुई, वहीं यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट के आंकड़ों(2004) का दावा है कि दुनिया में तस्करी के शिकार कुल लोगों में से आधे बच्चे हैं। अकेले बच्चों की तस्करी से हर साल 10 अरब डॉलर के मुनाफे का अनुमान है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के बाल मजदूरी से जुड़े आंकड़ों (2000) का अनुमान है कि सैक्स इंडस्ट्री में 18 लाख बच्चों का शोषण हो रहा है। इनमें भी खासतौर से लड़कियों की तस्करी विभिन्न यौन गतिविधियों के लिए हो रही है। इसी तरह अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का यह भी अनुमान है कि घरेलू मजदूरी में भी लड़कियों की संख्या सबसे ज्यादा होती है। ऐसे बच्चों की तस्करी करने के लिए इनके परिवार वालों को अच्छी पढ़ाई-लिखाई या नौकरी का झांसा दिया जाता है।

- यूनाइटेड नेशंस चिल्ड्रेंस फंड, फैक्ट शीट 2005 का अनुमान है कि दुनिया के 30 से ज्यादा सशस्त्र संघर्षों में बच्चों का इस्तेमाल किया जाता है। कुछ बच्चों को गरीबी के कारण तो कुछ को जबरन उठाकर सेना में भर्ती किया जाता है।
- 1990 से 2005 के बीच सशस्त्र संघर्षों में 20 लाख से ज्यादा बच्चे मारे गए।
- यूनाइटेड नेशंस चिल्ड्रेंस फंड, फैक्ट शीट 2005 ने यह भी कहा कि अक्सर पिछड़े, अनाथ, विस्थापित, विकलांग या युद्धक्षेत्र में रहने वाले बच्चों को सैन्य गतिविधियों में लगा दिया जाता है।
- प्राकृतिक आपदाओं की ऊहापोह में भी बच्चों की तस्करी करने वाले गिरोहों की सक्रियता बढ़ रही है। इस दौरान ये गिरोह अपने परिवार वालों से बिछुड़े और गरीब परिवार के बच्चों को निशाना बनाते हैं।
- गरीबी के चलते कई माता-पिता अपनी बेटियों को आर्थिक संकट से उबारने का उपाय मानते हैं और पैसों की खातिर उसकी शादी किसी भी आदमी से कर देते हैं।
- यूनाइटेड नेशंस चिल्ड्रेंस फंड, जन्म पंजीयन के मुताबिक 2000 में 41 प्रतिशत बच्चों के जन्म का पंजीयन नहीं हुआ। बच्चों की कानूनी पहचान न होने से उनकी तस्करी करने में आसानी हो जाती है। ऐसे में लापता बच्चों का पता-ठिकाना ढूंढ़ना मुश्किल हो जाता है।
- तस्करी और लापता बच्चों के

www.terapanthinfo.com

बीच गहरे रिश्ते का खुलासा एन. एच.आर.सी. की रिसर्च रिपोर्ट (2004) भी करती है। इसमें कहा गया है कि भारत में एक साल में 30 हजार से ज्यादा बच्चों के लापता होने के मामले दर्ज होते हैं, इनमें एक तिहाई का पता नहीं चलता।

- तस्करी के बाद ज्यादातर बच्चों का इस्तेमाल खदानों, बागानों, रासायनिक और कीटनाशक कारखानों से लेकर खतरनाक मशीनों को चलाने के लिए किया जाता है।

मुख्य तथ्य :

- एनएफएचएस-3(नेशनल फैमिली हैल्थ सर्वे) सर्वेक्षण के अनुसार देश में 5 वर्ष से कम आयु के लगभग आधे बच्चे कुपोषित हैं। 1998-99 से लेकर 2005-06 की अवधि में 6 से 35 माह तक के बच्चों में एनीमिया(खून की कमी) का स्तर 74 से बढ़कर 79 प्रतिशत हो गया।
- मध्यप्रदेश में कुल 23 फीसदी बच्चे ही आंगनबाड़ियों में दर्ज हैं। यानी सामान्य बच्चों तक पहुँचने की बात तो दूर, अभी तक कुपोषित बच्चों तक भी नहीं पहुँच पाए हैं।
- एनएफएचएस-3 के अनुसार 6 वर्ष से कम आयु के महज 43.8 फीसदी बच्चे ही आंगनबाड़ी सेवाओं का लाभ उठा पाए हैं। हालांकि, बच्चों को संपूरक भोजन मुहैया कराने की जिम्मेदारी आंगनबाड़ी केंद्रों की है, पर मध्यप्रदेश में लगभग आधे बच्चे (49.8 प्रतिशत) ही इस सुविधा का लाभ उठा पाए।
- भारत में बच्चों में खून की कमी(एनीमिया) आम बात हो गई है। एनएफएचएस-3 सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 6-9 वर्ष की आयु के 10 में से 7 बच्चे(69.5 प्रतिशत) रक्त अल्पता(एनीमिया) से ग्रसित हैं जिनमें 3 प्रतिशत गंभीर रूप से एनीमिया की चपेट में हैं। सर्वेक्षण के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र, निम्न परिवार, अनुसूचित जाति व जनजाति में एनीमिया का संकट दूसरे समूहों के मुकाबले अधिक विकट है।
- मध्यप्रदेश की बात की जाए तो देश में खून की कमी से जूझते बच्चों के मामले में बिहार(78 प्रतिशत) के बाद मध्यप्रदेश का दूसरा स्थान है। यहाँ 4 में से करीब 3 बच्चे (74.1 प्रतिशत) एनीमिया से ग्रस्त हैं।
- भारत सरकार व विश्व स्वास्थ्य संगठन के टीकाकरण कार्यक्रम के अनुसार प्रत्येक शिशु के 12 माह का हो जाने तक उसे सभी प्राथमिक टीके लगा दिए जाना चाहिए, पर एनएफएचएस-3 के अनुसार मध्यप्रदेश में केवल 40.3 प्रतिशत बच्चों का ही पूरी तरह टीकाकरण हो पाया है। इनमें भी शहरी क्षेत्र के 69 प्रतिशत की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में महज 32 प्रतिशत बच्चे ही पूर्ण टीकाकरण करवा पाए हैं। मध्यप्रदेश में 5 प्रतिशत बच्चे ऐसे भी हैं जिन्हें किसी प्रकार का टीका नहीं लगा है।

हर साल 90 लाख बच्चों की मौत :

सेव द चिल्ड्रेन की रिपोर्ट 'ए फेयर चांस एट लाइफ' के अनुसार पिछले 10 साल में कम से कम 40 लाख ऐसे बच्चों की मौत हुई, जिन्हें मरने से बचाया जा सकता था। रिपोर्ट कहती है कि जिस तरह से सरकार ने अमीरों के बच्चों को बचाने की कोशिश की, वैसी कोशिश गरीबों के लिए नहीं की गई। सहस्राब्दी लक्ष्यों के अनुसार 2015 तक शिशु मृत्यु दर को दो तिहाई कम करना था, लेकिन यह लक्ष्य पूरा नहीं होता दिखता है। सेव द चिल्ड्रेन की प्रमुख जैस्मीन वाइटब्रेड कहती हैं कि हर साल 5 साल से कम उम्र के 90 लाख बच्चों की मौत हो जाती है। उनका कहना है कि सरकार के लिए यह सुविधाजनक होता है कि वे मध्यम आय वाले परिवारों की मदद करें। सेव द चिल्ड्रेन का कहना है कि हर विकासशील देश में यही परंपरा देखी गई कि मदद उसी को ज्यादा मिले, जिसकी आय थोड़ी बहुत जरूर है। हालांकि, सेव द चिल्ड्रेन का कहना है कि अगर गरीबों को मदद मुहैया कराई जाए तो शिशु मृत्यु दर को कम करना ज्यादा आसान होगा।

खरोरा 493225, जिला-रायपुर (छ.ग.)

www.terapanthinfo.com

सपनों के सौदागर

जसविंदर शर्मा

छेदीलाल रातभर अपने पड़ोसी के मोबाइल से कोशिश करते रहे। 'कौन बनेगा करोड़पति' वालों से सर्म्पक नहीं हो पाया। मन बहुत भारी हो गया। कार्यालय में दिनभर उखड़े-उखड़े से रहे। उनके सहकर्मी विनोदीलाल ने टिफिन खोलते हुए कहा, 'क्या छेदीलाल, तुम भी किन बेकार के चोंचलों में फंस गए। पिछले बीस सालों में सामान्य ज्ञान की कोई पुस्तक पढ़ी है तुमने? एक अखबार पढ़ते हो, उससे क्या तीर मार लोगे? वहाँ बहुत टेढ़े सवाल पूछे जाते हैं। यूं सब को बुला-बुलाकर दो-दो करोड़ लुटाने लग जाएं तो वे लोग सड़क पर आ जाएंगे। सब हेराफेरी है परले दर्जे की। चैनलों के ठेकदारों का आपसी झगड़ा है सब। विज्ञापन पाने की जंग है सारी।'

छेदीलाल ने मुंह का कौर निगलते हुए कहा, 'मैं तो कहता हूँ बड़े बाबू आप भी करोड़पति बनने के लिए फोन करिए। भगवान जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है।' बड़े सर की मस्काबाजी उनके साथियों को बहुत खली।

रेशमसिंह डकार लेता हुआ बोला, 'क्यों छेदीलाल मस्का लगाते हो सर को। बड़े बाबू, आप भी किस अहमक की बातों में आते हो। और बेकार में समय और पैसा बरबाद करोगे। पहले भी लाखों लोगों ने इस में प्रवेश पाने के लिए हजारों रुपए दांव पर लगाए थे। अभिताभ बच्चन द्वारा शुरू किए गए इस प्रोग्राम के लिए के बी सी वालों के पास हर रोज चार लाख एस एम एस आते हैं। उनमें से सिर्फ दस लोग ही चुने जाते हैं। फिर सारी दुनिया के सामने आप मूर्ख करार दिए जाएं, हम तो इस हक में नहीं हैं। हमारे बड़े बाबू के बारे में लोगों को पता चले कि उन्हें सिक्किम की राजधानी का नहीं पता या जर्मनी की करंसी वह नहीं जानते। ऐसी जहालत झेलकर अगर बीस तीस हजार रुपए हाथ में आ भी गए तो क्या खुशी और क्या गम।'

छेदीलाल जरा भी हतोत्साहित नहीं हुए। उसी चाव से बोले, 'छोड़ो सर जी, यह तो वही बात हुई कि हाथ न पहुँचा तो थू कड़वी। भगवान जब देता है तो शक्लें नहीं देखता। फिर क्या ठाठ होंगे उनके जिनको के बी सी वालों की तरफ से बुलावा आएगा। एक साथी के साथ मुम्बई में आने-जाने का अच्छा किराया और फाइव स्टार होटल में ठहरना। और दामाद सरीखी आवभगत। भाई मैं तो बार-बार फोन करूँगा।'

बड़े बाबू खाना खाकर थोड़ी देर तक गहरी सोच में डूबे रहे, बोले, 'छोड़ो भाई छेदीलाल, क्यों हमारा और अपना भेजा खराब करता है। अपनी सीट का काम तो तुम से ढंग से होता नहीं और चले हो करोड़पति बनने। तुम्हारा प्रोमोशन दस बरसों से अटका हुआ है। अंग्रेजी का एक छोटा-सा पेपर तुमसे पास नहीं हो रहा। तुम्हारे साथ के सभी लोग कब से सीनियर सहायक बन गए और तुम पिछले बीस सालों से क्लर्क की कुर्सी पर ही लदे हुए हो। तुम्हारी किस्मत इतनी ही तेज होती तो तुम सारी उम्र एल डी सी न बने रहते। चलो जाओ, गृह मंत्रालय से सम्बधित फाइल लाओ और हिन्दी रिर्पोट बनानी शुरू कर दो।'

छेदीलाल भारी मन और बोझिल कदमों से ऑफिस के मेन गेट से बाहर निकल गए। दिन के दो बजे थे। बला की गर्मी पड़ रही थी। छेदीलाल ने सोचा कि इस तरह लोग उनके सपनों का कत्ल नहीं कर सकते। अपने आप ही उनके कदम दोस्त मुसद्दीलाल के दफ्तर की तरफ मुड़ गए। छेदीलाल का यह दोस्त उनके मन की हर व्यथा को जान लेता था। इस दोस्त के पास मोबाइल था और छेदीलाल के उन पर कई एहसान थे।

खैर छेदीलाल का नम्बर लग गया और उन्होंने एस एम एस करने में सफलता हासिल कर ली थी। वह वापिस दफ्तर लौटे तो उनके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। अब देखते हैं कि उनका छप्पर कब तक सलामत रहता है।

5/2डी रेल विहार मंसादेवी
पंचकूला-134109 हरियाणा

www.terapanthinfo.com

यहाँ सब दागी हैं?

राजेन्द्र शेखर

(सी.बी.आई. के पूर्व निदेशक)

जब रक्षक ही भक्षक हो जाए, तो देश का हश्र क्या होगा? अक्सर यह जुमला पुलिस के क्रूर बर्ताव पर कहा जाता है, क्योंकि पुलिस का मुख्य काम आमजन की सुरक्षा है। इसी जुमले या उक्ति के अनुसार देश की शुचिता को बरकरार रखने का जिम्मा सम्भालने वाले ओहदेदारों या जिम्मेदार लोगों का बेदाग होना भी अनिवार्य है। इसमें दो राय होने की बिल्कुल गुंजाइश नहीं है। कुछ दिन पहले नियुक्त केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त के बारे में सर्वोच्च न्यायालय ने तल्ख टिप्पणी करते हुए केन्द्रीय सरकार से पूछा है कि एक व्यक्ति जो खुद ही कथित अपराधी है, क्या उसका केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त होना शर्मिंदगी का कारण नहीं होगा, जबकि जनता उसके अनुसन्धान करने के अधिकार पर उंगली उठा सकती हैं?

इसका जो उत्तर केन्द्रीय अटॉर्नी जनरल ने दिया है, वह कई मायने में हास्यास्पद है। वे कहते हैं कि यदि बेदाग छवि अनिवार्य है, तो जितनी भी न्यायिक नियुक्तियां है, उन सब के लिए यह मापदंड अनिवार्य हो जाएगा। पहली बात तो यह कि अटॉर्नी जनरल महोदय सांकेतिक रूप से यह मान रहे हैं कि उक्त नियुक्ति बेदाग होने के मापदंड को ध्यान में रख कर नहीं की गई है। सही बात यह है कि जिस जिम्मेदार अधिकारी पर दूसरों को बेदाग रखने की जिम्मेदारी है, कम से कम वह तो अनिवार्य रूप से बेदाग छवि वाला हो।

न्याय का सबसे अहम उसूल, 'न्याय करना ही काफी नहीं है, जाहिर तौर पर भी न्याय किया जाना महसूस होना चाहिए,' इस उसूल का जितनी भी न्यायिक नियुक्तियां हैं, उन पर भी लागू होना आवश्यक है। जनता का विश्वास जीतने व विश्वास कायम रखने के लिए यह जरूरी है।

भ्रष्टाचार पर सकार की सफाई शर्मनाक है। लगता है, वह भ्रष्ट लोगों को बचाना चाहती है। नियुक्तियों के समय यह ध्यान रखना चाहिए कि भ्रष्टाचार दावानल की तरह फैल रहा है और साफ छवि के लोग ही भ्रष्टाचार का मुकाबला कर सकते हैं।

केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त पी.जे.थॉमस की नियुक्ति में यह तथ्य स्पष्ट प्रतीत होता है कि थॉमस को केन्द्रीय सतर्कता आयोग का भार विपक्ष के नेता के विरोध के बावजूद शायद किसी राजनीतिक मजबूरी की वजह से सौंपा गया है, जबकि ऐसे पद पर किसी की नियुक्ति से पहले जनमानस की सांकेतिक सहमति और बेदाग छवि का तो ध्यान रखना ही चाहिए। ऐसी नियुक्तियों के समय यह ध्यान रखना चाहिए कि भ्रष्टाचार दावानल की तरह फैल रहा है और साफ छवि के लोग ही भ्रष्टाचार का मुकाबला कर सकते हैं।

केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त का दायित्व सी.बी.आई. के अनुसन्धान कार्य पर नजर रखने का तथा उचित समय पर सी.बी.आई. के निदेशक की नियुक्ति पर अपनी राय देना और भ्रष्टाचार पर मजबूत पकड़ रखना है। क्या पी.जे.थॉमस यह दायित्व भली भांति निभा पाएंगे, जबकि केरल की अदालत में उनके खिलाफ भ्रष्टाचार निरोधक कानून के तहत चालान लंबित है? यह कैसी विडंबना है कि एक कानून जिसे लागू करने का भार जिसको दिया गया है, वही व्यक्ति उस कानून के तहत आरोपी है।

www.terapanthinfo.com

भ्रष्टाचार इतना बेलगाम हो गया है कि उस पर एक बेदाग अफसर ही नियंत्रण कर पाएगा। एक विश्वस्त सर्वे के मुताबिक, देश की जनता अपने वाजिब काम के लिए एक साल में कल्पना के परे 26,728 करोड़ रुपए की रिश्वत देने पर मजबूर है। यह भारी भरकम रकम वाजिब काम के लिए दी जाती है, तो गलत काम के लिए घूस का क्या आकार होगा, इसका अंदाजा लगाइए। 1999 में जब विट्ठल केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त थे, तब भ्रष्टाचार के इंडेक्स पर भारत का स्थान 66वें नंबर पर था। उन्होंने वादा किया था कि सेवानिवृत्ति से पहले वे उसे तीस नहीं तो चालीस पर ले आएंगे, लेकिन इस दिवास्वप्न को लेकर वह सेवानिवृत्त हो गए। आज राष्ट्रमंडल खेलों में हुआ घोटाला, 2-जी स्पेक्ट्रम, आदर्श सोसायटी घोटाला, एलआईसी हाउसिंग लोन कांड जैसे घोटालों की वजह से यह इंडेक्स 87 पर पहुँच गया है। क्या एक दागी अफसर में माद्दा है कि वह इस महिषासुर को आड़े हाथों लेकर ध्वस्त कर पाएगा? वैसे भी स्पष्ट है कि हमारी सरकारें भ्रष्टाचार के मुद्दे को ज्यादा महत्त्व नहीं दे रही हैं। यह इन तथ्यों से उजागर होता है कि लोकपाल विधेयक अरसे से लंबित है और केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त की सालाना रिपोर्ट 1999 के बाद संसद के पटल पर नहीं रखी गई हैं। विट्ठल का 'जीरो टोलरेंस' अर्थात् शून्य सहिष्णुता (जिसका ध्येय था कि भ्रष्टाचार को किसी भी रूप या आकार में बर्दाश्त नहीं किया जाए) का आह्वान शायद उनके साथ ही सेवानिवृत्त हो गया।

लगता तो यही है कि केन्द्र सरकार भ्रष्टाचार के मुद्दे पर अपनी नींद नहीं खोने वाली। जागे रहने का जिम्मा आम आदमी को ही लेना पड़ेगा। यह कहने के बावजूद सुरेश कलमाड़ी, ए.राजा और अशोक चव्हाण की छुट्टी कर देना शुभ संकेत है, इसी कड़ी में यह आवश्यक हो जाता है कि पी.जे.थॉमस की छुट्टी करने पर सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिए। भाजपा के लिए भी जरूरी हो गया है कि वह येदियूरप्पा को राजनीतिक मोहरा न बनाकर कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद से हटाने का मानस बनाए। जैसा भ्रष्टाचार और भाई भतीजावाद येदियूरप्पा ने दर्शाया है, वैसे कम ही उदाहरण मिलेंगे। जब पर्दाफाश हुआ, तो कहा जाता है, उनके सगे-सम्बन्धी जिनको फायदा पहुँचाया गया, उन्होंने 40 लाख रुपए की जमीन को वापस न करके 20 करोड़ में बेचने का निर्णय लिया, इससे बढ़कर भ्रष्टाचार का नंगा नाच नहीं हो सकता।

अब जनता के मानस में जो विश्वास घर कर गया है, उसको बदलने के लिए अथक प्रयास करने पड़ेंगे। जनता की अटूट धारणा है कि बड़े पदों पर बैठे भ्रष्ट तत्वों का अंत में कुछ भी नहीं बिगड़ पाता है। हमारे शासकों को आंकड़े के फेर से निजात पाने के लिए क्या ये आंकड़े काफी नहीं हैं कि हमारा देश जहाँ भ्रष्टाचार में अग्रणी है, वहीं भूख के मामले में धरातल पर 94वें नंबर पर स्थित है। इस देश में 24 करोड़ लोग हर रात भूखे सो जाते हैं। अमीरी-गरीबी के बीच बढ़ती खाई से स्थिति भयावह होती जाएगी। इस स्थिति में नरेगा भी क्या करेगा, जबकि जमीनी स्तर पर उसमें भी बेइंतिहा भ्रष्टाचार है।

राजस्थान पत्रिका से साभार
27 नवंबर 2010

प्यास का मातम

प्रेरणा

मुनि सम्बोध कुमार

शहर के आखिरी कोने में गरीबी रेखा के नीचे परिवारों के लिए बनी बस्ती का कतरा-कतरा आज मातम में डूबा हुआ था। जिन्दगी के सिर्फ दस अर्से जीकर झुलसती गर्मी में मौत का शिकार बनी उस मासूम के मां बाप अपने ख्वाबों की इमारत के बिखरने से होश गंवा बैठे थे तो समूची बस्ती की आँखों से छलक रहे अश्कों की गर्म बूंदें तपती माटी की आग को जैसे भड़का रही थीं।

पिछले पंद्रह दिनों से पानी की सप्लाई बंद हो गई थी। टेंकर से अल्टर्नेट पानी सप्लाई का सरकारी फरमान भी सियासी घोटालों की भेंट चढ़ गया।

सूरज आग बरसा रहा था। जिस पर पानी की किल्लत की त्रासदी। उसी जिस्म झुलसती गर्मी में पानी-पानी चिल्लाते हमेशा-हमेशा के लिए मौत की गोद में सो गई। चाहकर भी कोई बचा नहीं पाया उसकी जिन्दगी, पानी की एक बुंद भी उन्हें मयस्सर नहीं हुई। गिड़गिड़ाने, धरने पर बैठने, अनशन करने, मुख्यमंत्री को ज्ञापन देने के बावजूद।

गमगीन आँखों से अंतिम विदाई देने उमड़े जनसैलाब ने शहर की सबसे व्यस्त सड़क के किनारे पर हरे-भरे स्वीस गार्डन में बहते बेइंतहा बेफिजूल पानी को बेबस नजरों से देखा और धीरे-धीरे जनाजा आगे गुजर गया।

गुजरते कारवां की जुबां का दर्द था काश उस बेहिसाब बहते पानी की दो बूंदें उस मासुम के प्यासे हलक को मयस्कर हो जाती तो वह बेमौत नहीं मरती। हम गरीबों के नसीब में पानी नहीं सिर्फ उसकी प्यास से तड़प कर बेमौत मरना है। वो तो दौलत वालों की अमानत है।

लोकतंत्र का शाही अपमान

रामशरण जोशी

जयपुर में जोधपुर के पूर्व राजघराने के सदस्य ने विवाह रचाया। बधाई, लेकिन विवाह की शैली, तैयारियों ने दो-तीन रोज के लिए एक बारगी यह भ्रम पैदा कर दिया कि भारत लोकतंत्र में नहीं, रियासत या शाही काल में जी रहा है महाराजा, महारानी, रानी, राजकुमार, राजकुमारी, प्रिंस, प्रिंसेज, पोशाक, बग्घी, तलवारधारी, अंगरक्षक जैसे बेशुमार संबोधन व प्रतीक थे, जो सामंती युग की नुमाइंदगी कर रहे थे। इस शादी ने माधवराव सिंधिया की पुत्री की ग्वालियर में हुई शादी की याद ताजा करा दी। दिसम्बर 1987 में यह शादी संपूर्ण राजसी वैभव, भव्यता और माहौल के बीच सम्पन्न हुई थी। तब मैंने लिखा था, 'यदि देश का लोकतांत्रिक नेतृत्व लोकतांत्रिक आस्थाओं मूल्यों के प्रति ईमानदार होता तो समय से पहले ही विवाह के विरुद्ध आवाज उठाता!' लेकिन ऐसा नहीं हुआ और आज भी नहीं हुआ।

बेशक विवाह-शादी व्यक्तिगत मामले हैं। राज्य को इसमें दखल देने की जरूरत नहीं है, लेकिन आज सवाल 21वीं सदी में भारत को नितांत लोकतांत्रिक, आधुनिक, समतावादी और समृद्ध बनाने का है। जयपुर के पाँच सितारा होटल में आयोजित इस विवाह ने मुझे मुम्बइया फिल्म 'गुलाल' की भी याद ताजा करा दी। फिल्म के कथानक में बतलाया गया था कि किस प्रकार पूर्व शाही परिवार के सदस्य 'राजतंत्र' को पुनर्जीवित करने में जुटे हुए हैं और विद्रोह के लिए सेना का गठन भी कर रहे हैं। हाल ही में जयपुर में मैं एक टैक्सी चालक से टकराया। तब उक्त ड्राइवर ने गौरतलब टिप्पणी की थी सा'ब, यह काएका लोकतंत्र हैं? सभी चोर-डाकू हैं। भिरस्ठाचार फैला हुआ है। देख लेना, म्हारे राजस्थान में फिर से राजा-महाराजा का जमाना आएगा। ये टोपीवाले नेता जाएंगे।' इस टिप्पणी ने भी मुझे झकझोर कर रख दिया।

आखिर इस टिप्पणी के क्या कारण हैं। निस्संदेह भारत ने राजतंत्र को बहुत पहले खत्म कर दिया। 1952 से 'संसदीय लोकतंत्र' की बयार भी हमारे यहाँ बह रही है, हम चुनावों से सरकारें बदलते भी रहे हैं। लेकिन मूल प्रश्न यह है कि क्या हम सामंती संस्कारों, मूल्यों, विचारों और प्रवृत्तियों को भी ध्वस्त कर सके हैं? क्या यह टिप्पणी या सोच निर्वाचित नेतृत्व को कठघरे में खड़ा नहीं करती हैं?

देश के दो सबसे शक्तिशाली व्यक्ति सोनिया गांधी ने 'सामाजिक लोकतंत्र' और प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 'क्रोनी पूंजीवाद' की बातें की। दोनों ने राष्ट्र को नैतिक पतनशीलता, निरंकुश उपभोक्तावाद, पिछलग्गू पूंजीवाद, विषमता जैसी प्रवृत्तियों से भी खबरदार किया। लेकिन सवाल फिर उठता है कि आखिर ये प्रवृत्तियां जन्म ही नहीं, मजबूत भी कैसे हो रही हैं? इनका खात्मा क्यों नहीं हो रहा है? कौन-सी ताकतें इनके लिए जिम्मेदार हैं? इनकी पहचान और इनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की जा रही है? वास्तव में ऐसी प्रवृत्तियां और ताकतें शाही मानसिकता को सुरक्षा देती हैं और मजबूत करती हैं। ये ताकतें न ही 'सामाजिक लोकतंत्र' को मजबूत होने देती हैं, और न ही 'जनवाद' को आने देती हैं, लेकिन 'परजीविता', निरंकुश, भद्दा व भौंडा उपभोक्तावाद को पनपाए रहती हैं। हमारे यहाँ सभी प्रकार के कानून हैं। विवाह व बारातियों की संख्या के बारे में भी कानूनी उपाय हैं। कुछ वर्ष पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रफुल्ल पटेल ने उदयपुर में अपनी बेटी का विवाह पूरी शान-शौकत के साथ किया था। सामाजिक न्याय के स्वयंभू प्रहरी लालू प्रसाद यादव ने भी बिहार में अपनी पुत्रियों की शादी भी इसी शैली में की थी। तब जोधपुर या ग्वालियर के पूर्व राजपरिवारों से क्या शिकायत करें?

राजस्थान पत्रिका से साभार
27 नवंबर 2010

पुस्तक पढ़ें - आगे बढ़ें

जनार्दन शर्मा

एक सुभाषित के अनुसार व्यक्ति की पहचान उसकी पुस्तको से होती है, पुस्तकें व्यक्ति की श्रेष्ठ मित्र होती हैं। वस्तुतः पुस्तकें व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्पण है। परन्तु लगता है उपरोक्त कथन अपनी चमक खो रहा है, लोगों में पुस्तक पढ़ने की आदत कम होती जा रही है। अभी हाल में अग्रणी पत्रिका 'रीडर्स डाइजेस्ट' के अग्रलेख में तथा सर्वे में पाया गया कि 21वीं सदी में लोगों में बढ़ती कम्प्यूटर साक्षरता ने पुस्तक प्रेम व हस्त-लेखन को दूर कर दिया है, जो लोगों के नैतिक उत्थान व शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिये हानिप्रद है। **यह निर्विवाद है कि पुस्तकें पढ़ने और हस्त लेखन से व्यक्ति की याददाश्त बढ़ती है, आत्म विकास होता है तथा मस्तिष्क तरोताजा रहता है। कारण स्पष्ट है, पुस्तक पढ़ने से व लेखन से मस्तिष्क व हाथ का प्रयोग होता है, इसके अभाव में दोनों को उपयोग के अभाव में जंक लगने का भय है। अतः पुस्तक प्रेम को पुनः एक अभियान के रूप में जागृत करना अपरिहार्य हो गया है।**

एक विद्वान ने कहा है जो व्यक्ति किताबों के साथ रहता है, उसे किसी विश्वसनीय दोस्त, प्यार करने वाली प्रेमिका, शिक्षा व ज्ञान देने वाले गुरु एवं सुख व आनंद देने वाले भोजन और सेवक की जरूरत नहीं होती। पुस्तकें व्यक्ति को एकान्त में बातें करके कंपनी देती हैं।

ऐसा विश्वास है कि व्यक्ति का चरित्र उसकी किताबों से, व्यवहार व संगत से जाना जाता है। इसीलिये एक सूक्ति उपयोगी कही जाती है अच्छी पुस्तकें, अच्छी संगत और प्रार्थना ये तीनों आपको त्रिलोकी का राजा बना सकती है।

इसीलिये एक महान चिन्तक ने यहाँ तक कहा है मुझे यूरोप के साम्राज्य का ताज व पुस्तकों में से किसी एक को चुनने के लिये कहा जाय, तो मैं पुस्तकों का चयन करूँगा। पुस्तकें मस्तिक का श्रेष्ठ भोजन है।

जिज्ञासु और अनुसंधानकर्त्ता व्यक्ति के लिये पुस्तकें व पुस्तकालय एक आदर्श शरणगाह है। वहाँ उसे किसी भी विषय पर उपयोगी एवं तथ्य परक सामग्री मिलती है। एक अंग्रेजी कहावत के अनुसार पुस्तक पढ़ने से व्यक्ति पूर्ण बनता है, विचार विमर्श से तत्पर और लेखन से स्पष्ट व सही बनता है। लोग पुस्तके पढ़ते हैं, वे प्रशंसा के पात्र है, **हम विद्वान मनीषी बेन जॉन्सन को सलाम करते हैं, जो पुस्तकालयों को पढ़ जाते थे।**

आज मास्को व न्यूयार्क इस बात के लिये भी प्रसिद्ध है कि वहाँ विश्व के बड़े पुस्तकालय हैं, जहाँ अनुसंधान कर्त्ताओं को प्रचुर सामग्री मिलती है। कलकत्ता में भारत की बड़ी नेशनल लाइब्रेरी भी मशहूर है। वहाँ जाने पर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू (जो स्वयं भी पुस्तक प्रेमी व कई प्रसिद्ध पुस्तकों के लेखक थे) ने कहा था ज्ञान के इन सभागारों से मैं अपरिचित नहीं हूँ, किन्तु व्यस्तता (राष्ट्रसेवा) के कारण कुछ दूर हो गया हूँ।

एक विचारक ने कहा है जो व्यक्ति पढ़ना जानता है, वह अपने व्यक्तित्व को विस्तृत बनाने की क्षमता रखता है और अपने जीवन को बहुआयामी स्वरूप देता है। यही नहीं पुस्तक पढ़ने वाला व्यक्ति अपने जीवन को सुखी, दिलचस्प व महत्त्वपूर्ण बनाने में सक्षम होता है।

दार्शनिक भाव में कहा जाता है कि व्यक्ति एक जीवन जीता है परन्तु पढ़ने वाले व्यक्ति के लिये यह कथन यथार्थ नहीं है, वस्तुतः पुस्तके पढ़ने वाले व्यक्ति के लिये जिन्दगियों की कोई सीमा नहीं है। क्योंकि अध्ययनशील व्यक्ति पुस्तकों के माध्यम से उपन्यास कहानी, आत्म कथा, इतिहास आदि का अध्ययन करके पृष्ठ दर पृष्ठ अनन्त जीवनियां, जिन्दगियां, विश्व के सभी भागों की, सर्वकालों की जिन्दगियों को आत्मसात करता है और उत्साह से युक्त तरोताजा हो जाता है।

इसीलिये कहते है, आप खूब पढ़े, खूब भूले, फिर भी खूब याद करें। (अर्थात याद रखेंगे)।

जैसाकि हमने पूर्व में उल्लेख किया है कि सूचनाक्रान्ति, कम्प्यूटर व इन्टरनेट के प्रसार के कारण लोगों में पढ़ने की पुस्तक प्रेम की कमी आई है, जिससे मनुष्य के स्वास्थ्य व स्मरण शक्ति पर प्रभाव पड़ने की संभावना बढ़ती जा रही है, अतः विश्व स्तर पर संयुक्त राष्ट्र शिक्षा विज्ञान एवं सांस्कृतिक संगठन-यूनेस्को ने एक योजना शुरू की है, जिसमें टाइम्स फाउन्डेशन तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के सहयोग से 'एक पुस्तक दान करे' योजना के अन्तर्गत पुस्तकालयों में पुस्तक संख्या बढ़ाकर स्कूली छात्रों में पुस्तक प्रेम बढ़ाने का आदर्श प्रयास किया जा रहा है। राजीव गांधी पुस्तकालयों की शुरुआत भी सही कदम है। अतः हम पुस्तक पढ़े-आगे बढ़े।

सत्य सदन, पुष्कर (अजमेर)

बुराई का बदला

राजकुमार जैन 'राजन'

जंबू भालू और मोटू हाथी एक ही कक्षा के छात्र थे। जंबू भालू जंगल के थानेदार रॉकी भालू का बच्चा था। जबकि मोटू हाथी बहुत ही गरीब था। उसके पिता भीमा हाथी मजदूरी करके किसी प्रकार अपने परिवार का पालन पोषण कर रहे थे।

जंबू भालू को थानेदार का बच्चा होने का बहुत ही घमण्ड था। इसी कारण वह अपनी कक्षा के अन्य जानवरों को हिकारत से देखता था। सबसे ज्यादा नफरत तो उसे मोटू हाथी से थी। वह जानबूझ कर उसे किसी न किसी तरह परेशान करता रहता। कभी वह मोटू के बस्ते में से पेन या किताब आदि चुरा लेता या फिर उसके बस्ते को ही कहीं छिपा देता।

कक्षा के सभी छात्र जंबू भालू से डरते थे। इसलिए उसके खिलाफ अध्यापकों से शिकायत करने की किसी की भी हिम्मत नहीं होती थी। अगर कोई जानवर उसकी शैतानियों का विरोध करता तो वह उससे झगड़ पड़ता। चीकू खरगोश, गौरी बंदरिया व कालू मेमने से भी वह कई बार झगड़ चुका था।

मोटू हाथी जंबू भालू की शैतानियों से काफी परेशान था। कई बार उसने जंबू को समझाने का प्रयास किया कि उसे ऐसी हरकतें नहीं करनी चाहिए। मगर वह कुछ समझने के बजाय मोटू को ही बुरा भला कहने लगता। तब मोटू निराश-हताश होकर अपना-सा मुंह लेकर रह जाता।

मोटू हाथी पढ़ने में बहुत होशियार था। अध्यापक व अन्य जानवर भी उससे बहुत खुश रहते थे और उसकी तारीफ करते थे।

लेकिन जंबू भालू को यह सब अच्छा नहीं लगता। वह किसी भी जानवर के मुंह से जब भी मोटू की प्रशंसा सुनता तो ईर्ष्या से जल उठता। एक दिन मौका पाकर मोटू के बस्ते से गृह कार्य की कॉपियां निकाल कर कहीं छिपा दी।

जब अध्यापक जंबू जिराफ ने कक्षा में गृह कार्य जांचने के लिए छात्रों को बारी-बारी से अपनी कॉपियां लाने के लिए कहा तो, मोटू हाथी रूआंशा हो उठा। वह बोला, 'श्रीमन्, गृहकार्य तो मैंने कर लिया था, किंतु मेरे बस्ते में कॉपियां नहीं मिल रही है, शायद कहीं खो गई हैं।

अध्यापक लंबू जिराफ मोटू हाथी का उत्तर सुनकर बहुत ही नाराज हुआ। उन्होंने मोटू को स्टूल पर खड़ा रहने की सजा दे दी।

जंबू ने जब मोटू को सजा मिलते हुए देखा तो मन ही मन बहुत खुश हुआ। मोटू इस बात को जानता था कि जंबू ने ही ऐसी हरकत की होगी पर वह उससे कुछ नहीं बोला। दूसरे दिन कॉपियां उसे मिल गईं।

एक दिन तो जंबू ने शैतानी की हद ही कर दी। मध्य घंटी के समय जानवर नास्ता कर रहे थे। मोटू भी एक कौने में नास्ते के लिए अभी बैठा ही था कि जंबू भी वहाँ आ गया। उसने मोटू से रौबदार आवाज में पूछा, 'क्या है बे, क्या माल लेकर आया है?'

'प्याज और बाजरे की रोटी, खाओगे दोस्त?' मोटू ने प्यार से जवाब दिया।

'हूँह.... मुझे खिलाएगा, प्याज-रोटी, तेरी यह मजाल?' जंबू गुस्से से बोला और मोटू के हाथ से सारा खाना छीन कर दूर फैंक दिया।

मोटू हाथी मन मसोस कर रह गया। उस बेचारे को भूखा ही रहना पड़ा। जब शाम को छुट्टी हुई तो उसने जंबू भालू को समझाने की कोशिश करते हुए कहा, 'तुम्हें अन्न का अनादर नहीं करना चाहिये था।'

जंबू ने इसे अपनी बेइज्जती समझ मोटू को जोरदार धक्का दिया। मोटू संभल न पाया और नीचे गिर गया। अचानक एक नुकीला पत्थर उसके सिर से लगा और वह घायल हो गया। उसी हालत में वह किसी तरह अपने घर पहुँचा।

इस घटना की खबर किसी तरह स्कूल के प्रधानाध्यापक जंपी गैंडा को भी लग गई। इससे पहले भी उन्हें जंबू के गलत आचारण की शिकायतें मिल चुकी थीं। वह दोषी को उचित दण्ड देना चाहते थे।

कुछ दिन गायब रहने के बाद जब जंबू भालू स्कूल आया तो प्रधानाध्यापक जंपी गैंड़ा ने उसकी कक्षा के सभी छात्रों को स्कूल के प्रार्थना स्थल पर एकत्र होने का आदेश दिया।

जब सभी छात्र वहाँ इकट्ठे हो गए

तो जंपी गैंडे ने मोटू हाथी से पूछा, 'बोलो बेटे, तुम्हें किसने चोट पहुँचाई थी?'

मोटू ने नजरें घुमाकर अपने सभी सहपाठियों को देखा। फिर सहसा उसकी नजर जंबू पर जाकर ठहर गई। वह सहमा हुआ था।

जंपी गैंडे ने जब यह देखा तो बोले, 'तुम्हें किसी से डरने की जरूरत नहीं है। दोषी छात्र को सजा अवश्य मिलेगी।' हालांकि वह जानते थे कि दोषी कौन हैं फिर भी वह मोटू से ही कहलवाना चाहते थे। वह आगे बोले, 'सिर्फ सजा ही नहीं बल्कि मैं उसे वार्षिक परीक्षा में भी नहीं बैठने दूंगा।'

मोटू ने एक बार फिर जंबू की ओर देखा, जो कि गरदन नीची किए हुए खड़ा था। उसमें इतनी भी हिम्मत नहीं थी कि वह एक बार अपनी नजर ऊपर कर ले।

मोटू कुछ क्षण सोचने के बाद प्रधानाध्यापक से बोला, 'श्रीमन्, दोषी मैं स्वयं ही हूँ और कोई नहीं! मैं खुद ही ठोकर खाकर गिर पड़ा था। जिससे चोट लग गई थी।'

प्रधानाध्यापक जंपी गैंडा मोटू के चेहरे को ताज्जुब से देखने लगा। फिर जंबू भालू को अपने पास बुलाकर कहा, 'तुम्हें शर्म आनी चाहिये। तुम्हारा कसूर होते हुए भी मोटू हाथी ने तुम्हें बचा लिया।'

'मुझे माफ कर दीजिये श्रीमन्! आईन्दा ऐसी गलती कभी नहीं करूँगा।' जंबू ने डबडबाई आँखों से प्रधानाध्यापक की तरफ देखा।

'माफी तो तुम्हें मोटू हाथी से मांगनी चाहिये,' वह बोले वह चाहता तो सजा के साथ-साथ तुम्हारा एक साल भी खराब करवा सकता था। पर उसने ऐसा नहीं किया।

जंबू ने मोटू की तरफ देखते हुए कहा, 'मुझे माफ कर दो, दोस्त! जबाव में मोटू ने अपनी सूंड जंबू के गले में डाल दी। सभी जानवर प्रसन्न थे।

आकोला 312205 (चित्तोड़गढ़) राज.

आदमी, आदमी क्यों नहीं बना ?

पता नहीं आदमी क्यों नहीं जानता
आदमी, आदमी क्यों नहीं बना?
वह जय अम्बे गौरी गान
क्यों कर गाता है?
वह तो साक्षात देवी है-
आदमी, क्यों नहीं जानता?
आदमी! तन्दूर में डालता है
भून कर खा जाता है
उसे मारता है घसीटता है
घर से कमाई करने निकालता है।
बाप को लूटता है
बाल पकड़कर खींचता है
हाथ पैर मरोड़ता है
भूखा नंगा रखता है
बाल बच्चों को पीटता है
क्या जय अम्बे गौरी को
अपनी देवी नहीं मानता है?

आदमी; आदमी क्यों नहीं बना है?
वह आदमी है या शैतान?
पता नहीं आदमी क्यों नहीं जानता है?
आदमी, उसकी खूबसूरती पर
क्यों फेंकता है तेजाब?
काटता है क्यों बोटी-बोटी
वह जय अम्बे गौरी गान
पता नहीं क्यों कर गाता है?
आदमी, माँ अम्बे गौरी को
पता नहीं कमाई की वस्तु
तू क्योंकर मानता है?
अरे आदमी!
तुम्हें ही क्यों नहीं मालूम
आदमी; आदमी है या शैतान?
अगर आदमी हो आदमियत सीखो?
माँ दुर्गा! काली रणचंडी!
जब जानेगी तेरी शैतानियत
बनकर दुर्गा/काली रणचंडी महाकाली
तुझे नरभक्षी सा खा जाएगी?
आदमी; तू आदमी क्यों नहीं बना?
पता नहीं आदमी
दुर्गा को क्यों नहीं जानता?
तुझे किसी भी जन्म/पुर्नजन्म में
आदमी! संभल जा/तुझे खा जाएगी!

♦ सुरेश 'आनंद
आनंद परिधि एल 62
पं. प्रेमनाथ डोगरानगर
रतलाम 458001 (म.प्र.)

देसी शराब के दाम बढ़ाकर जुटेंगे और 22 करोड़ रुपये

सरकार पांच से दस रुपये जा रही है बढ़ाने

गुलशन राय खत्री ॥ नई दिल्ली

सरकार अब देसी शराब महंगी करने जा रही है। देसी शराब में यह बढ़ोतरी पांच रुपये से लेकर 10 रुपये तक की होगी। इस बार सरकार का तर्क है कि उसकी खरीद चूंकि महंगी हो गई है इसलिए उसे शराब महंगी करनी पड़ रही है। खरीद महंगी होने की वजह से सरकार को भी नुकसान हुआ है। सरकार का मानना है कि दरों में बढ़ोतरी होने से उसे सालाना 22 करोड़ रुपये की अतिरिक्त आमदनी होगी।

दिल्ली सरकार के सूत्रों के मुताबिक देसी शराब को महंगा करने के लिए सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं और उम्मीद है कि अगले एक सप्ताह से दस दिन के भीतर देसी शराब की नई दरें लागू कर दी जाएंगी। दिल्ली सरकार ने शराब के लिए जो प्रस्ताव तैयार किया है, उसके मुताबिक 180 मिली का जो पव्वा अभी 15 रुपये में मिलता है, उसे महंगा करके 20 रुपये किया जाएगा। इसी तरह 375 मि.लि. वाला जो अद्धा अभी 30 रुपये का मिलता है उसकी कीमत बढ़ाकर 35 रुपये की जाएगी। इसी तरह देसी शराब की 750 मि.ली. वाली बोतल की कीमत 60 रुपये से बढ़ाकर 70 रुपये करने का प्रस्ताव है।

सूत्रों का कहना है कि देसी शराब की खरीद महंगी हो [illegible] उसकी खरीद 181 करोड़ रुपये से बढ़कर 200.50 करोड़ रुपये हो गई है। इस वजह से सरकार को इसी वित्तीय साल में 11.6 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। दिल्ली सरकार का कहना है कि वह देसी शराब पर अपना मुनाफा एक रुपये से बढ़ाकर 2.10 रुपये करना चाहती है। उसका यह भी तर्क है कि एक रुपये का उसका मुनाफा 1994 से चल रहा है। ऐसे में इसमें बढ़ोतरी की जानी चाहिए। अगर सरकार के इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल जाती है तो इससे आबकारी विभाग को सालाना 22 करोड़ रुपये मिलेंगे।

वैसे इससे पहले दिल्ली सरकार ने देसी शराब की कीमतों में पिछले साल 30 सितंबर को बढ़ोतरी की थी। उस [illegible] देसी शराब की बोतल की थी जबकि अद्धे की कीमत 35 से बढ़ाकर 30 और पव्वे की कीमत 13 रुपये से बढ़ाकर 15 रुपये की थी। सूत्रों का कहना है कि इस बढ़ोतरी के लिए कैबिनेट की मंजूरी का इंतजार है। हालांकि इस प्रस्ताव पर सोमवार को ही कैबिनेट ने विचार करना था लेकिन मंगलवार की बैठक में इस पर विचार नहीं हुआ। अब उम्मीद है कि अगले सप्ताह इस प्रस्ताव को कैबिनेट में लाकर उसकी मंजूरी ली जाएगी।

गौरतलब है कि आमदनी के लिहाज से आबकारी विभाग सरकार के लिए सोने का अंडा साबित हो रहा है। पिछले साल जहां आबकारी विभाग की शराब की बिक्री से 1025 करोड़ रुपये का राजस्व मिला था, वहीं इस साल यह राजस्व बढ़कर [illegible] करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है। वैसे भी शराब से होने वाले रेवेन्यू में 23 फीसदी की बढ़ोतरी हो रही है। इसमें से 13 से 15 फीसदी हिस्सा देसी शराब का होता है।

मय की बोतल

- दाम बढ़ाने की घोषणा सरकार अगले दस दिन के भीतर कर सकती है
- सरकार अपना मुनाफा प्रति बोतल एक रुपये से बढ़ाकर 2.10 करना चाहती है
- नई दरें लागू होने पर पव्वा 20 का, अद्धा 35 का व बोतल 70 रुपये की मिलेगी

दिल्ली की लेटेस्ट खबरों के लिए देखें
www.delhi.nbt.in

नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली : 7 दिसंबर 2010

अब रेस्तरां परोसेंगे शराब

नई दिल्ली, (नगर प्रतिनिधि): राजधानी के ऐसे रेस्तरां जो अपने ग्राहकों को शराब परोसना चाहते हैं, उनके लिए अब लाइसैंस पाने की प्रक्रिया को सरल कर दिया गया है। दिल्ली सरकार ने शराब लाइसैंस जारी की प्रक्रिया में लगने वाले समय को कम कर दिया है और साथ ही मंजूरी की प्रक्रिया को भी सरल कर दिया। अब इन रेस्तराओं को लाइसैंस के लिए एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय के चक्कर नहीं काटने होंगे।

यह निर्णय यहां दिल्ली सचिवालय में मुख्यमंत्री शीला दीक्षित की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में लिया गया। बैठक के बाद संवाददाताओं से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने कहा कि पर्यटन विभाग को दिल्ली में रेस्तरां में साथ बार खोलने के लिए लाइसैंस जारी करने के कार्य को और सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से नोडल विभाग घोषित किया जा रहा है। इससे लाइसैंस जारी करने में हो रही देरी पर काबू पा[illegible]

मुख्यमंत्री ने कहा कि मौजूदा प्रक्रिया में विभिन्न विभागों से लाइसैंस और अनापत्ति प्रमाणपत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया एक के बाद दूसरे विभाग में शुरू की जाती है। जब तक पहला विभाग अपनी स्वीकृति नहीं दे पाता तो दूसरा विभाग इस बाबत अपनी प्रक्रिया शुरू नहीं कर पाता। दिल्ली में रेस्तरां खोलने के लिए इच्छुक व्यक्ति या कम्पनी को वर्तमान में दिल्ली नगर निगम, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद, दिल्ली छावनी बोर्ड से हैल्थ ट्रेड लाइसैंस, पुलिस से इंटिंग हाऊस रजिस्ट्रेशन और अग्निशमन विभाग से अनापत्ति प्रमाणपत्र लेना पड़ता है। अलग से रेस्तरां के मामले में उपरोक्त तीनों स्वीकृति के अलावा पर्यटन विभाग से भी लाइसैंस लेना आवश्यक होता है। यह सारी प्रक्रिया पूरी होने के बाद विभाग लाइसैंस जारी करता है।

- सरकार आसान बनाएगी प्रक्रिया
- बार लाइसैंस मिलना होगा सरल

सरकार के फैसले के बाद अब से पर्यटन विभाग नोडल विभाग के रूप में कार्य करेगा और आवेदक सभी संबंधित विभागों में अलग-अलग एक ही समय में अनापत्ति प्रमाणपत्र हेतु आवेदन कर सकेंगे। संबंधित विभाग आवेदन की जांच करेगा और जरूरी निरीक्षण करेगा लेकिन दूसरे विभाग की अनुमति की प्रतीक्षा नहीं करेगा। पर्यटन विभाग में काम का बोझ बढ़ जाने के मद्देनजर विभाग में चार अधिकारी, कर्मचारी डायवर्टिड कैपेसिटी में तैनात किए जाएंगे। ऐसा तब तक जारी रहेगा जब तक नियमित पदों का सृजन नहीं हो जाता। इसके साथ ही मंत्रिमंडल ने पर्यटन विभाग के अतिरिक्त सचिव व विशेष सचिव की अध्यक्षता में एक समन्वय समिति तथा प्रधान सचिव पर्यटन की अध्यक्षता में सर्वोच्च समिति के गठन का फैसला किया है। इससे नई प्रक्रिया पर नजर रखी जा सकेगी ताकि किसी देरी या बाधा को दूर करना सुनिश्चित किया जा सके। इससे पारदर्शिता [illegible] बनाई रखी जा सकेगी और प्रक्रिया सुचारू बनेगी।

पंजाब केसरी दैनिक, नई दिल्ली : 7 दिसंबर 2010

भ्रष्टाचार के किले पर जोरदार प्रहार

सीबीआई के घेरे में राजा

राजा के मंत्री भी घिर सकते हैं

हिन्दुस्तान दैनिक, नई दिल्ली : 9 दिसंबर 2010

पंजाब केसरी दैनिक, नई दिल्ली : 8 दिसंबर 2010

प्लास्टिक के पाउच में नहीं बिकेंगे गुटखा, पान मसाले

नई दिल्ली, (भाषा): उच्चतम न्यायालय ने गुटखा और पान मसाले जैसे तंबाकू उत्पादों के मार्च 2011 से प्लास्टिक पाउच में बिक्री पर रोक लगा दी और सरकार को आठ हफ्ते के अंदर इन उत्पादों के बुरे प्रभावों पर एक सर्वेक्षण कराने का निर्देश दिया। न्यायमूर्ति जीएस सांघवी और एके गांगुली की पीठ ने उत्पादकों को मार्च तक पैकिंग के लिए वैकल्पिक सामग्री की खोज और इसपर निर्णय लेने की मोहलत दी। गुटखा उत्पदकों के भय को न्यायालय ने मामले से इंकार कर दिया जिसमें आशंका जताई गई कि इस निर्देश से हजारों गुटखा और पान मसाला उत्पादक इकाइयां बंद हो सकती है। उत्पादकों में से एक के वकील ने दावा किया कि इससे सारा उद्योग ठहर सा जाएगा तो पीठ ने कहा, ''ऐसा हो जाने दीजिए।'' कागज के पैक में बेचे जाने वाले सिगरेट को इस फैसले से बाहर रखा गया है। पीठ ने सरकार को तंबाकू उत्पादों के बुरे प्रभावों को जानने के लिए एक सर्वेक्षण कराने का निर्देश दिया और कहा कि इन उत्पादों के प्लास्टिक पाउच में होने से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की भी जांच की जाए। उच्चतम न्यायालय की पीठ ने सॉलिसिटर जनरल गोपाल सुब्रह्मण्यम का हलफनामा भी दर्ज किया जिसमें उन्होंने कहा कि सरकार गुटखा, पान मसाले सहित अन्य तंबाकू उत्पादों के हानिकारक प्रभाव और पैकेजिंग सामग्री के तौर पर प्लास्टिक पाऊच के इस्तेमाल किए जाने का असर जानने के लिए राष्ट्रीय लोकस्वास्थ्य संस्थान से जरूरी सर्वेक्षण कराएगी। पीठ ने केंद्र को प्लास्टिक प्रबंधन और निपटान नियम 2009 को भी आठ हफ्तों में पूरा कर लागू करने का निर्देश दिया। न्यायालय ने कहा कि 2009 में नियम तैयार हो जाने के बाद भी अधिकारियों ने इसे अब तक लागू नहीं किया है। देश की शीर्ष न्यायालय ने यह निर्देश एक सिविल सोसाइटी की याचिका पर सुनाया।

- बंद होती हैं तो हो जाने दो गुटखा, पान मसाला उत्पादक इकाइयां : आदेश मार्च 2011 से होगा लागू

नया वर्ष : नया संकल्प

कुसुम जैन

किसी पर्व/त्यौहार/स्मरणीय दिन को मनाने का श्रेष्ठतम तरीका क्या हो सकता है? यह जिज्ञासा आपके मन में भी उठती होगी? कभी आपने संकल्प लेकर कोई कार्य किया है? यदि हाँ, तो आप मुझसे अवश्य सहमत होंगे कि बिना समय-सीमा निश्चित किए कार्य पूरा कर पाना कठिन होता है, काम टलता ही जाता है। पर जब हम यह निश्चित कर लेते हैं कि इस समय-सीमा में कार्य पूरा करना है तो लक्ष्य को पाना सरल हो जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि हम किसी पर्व/त्यौहार को किसी संकल्प के साथ मनाते हैं, और उस संकल्प को निष्ठापूर्वक पूरा करते हैं तो उस पर्व को मनाने का उद्देश्य ही पूरा नहीं होता अपितु हम एक आंतरिक आनन्द की भी अनुभूति करते हैं।

तो फिर बताइए कि नववर्ष को किस संकल्प के साथ मना रहे हैं या मनाया है। अभी तक कोई संकल्प नहीं किया है तो आज कीजिए... पर कीजिए जरूर.....। याद रखिए कि हमें यह मनुष्य पर्याय, हमारे अनन्तानन्त पुण्य कर्मों के कारण हमें मिला है। इस दुर्लभ मनुष्य पर्याय को पाकर भी यदि हम संयम को जीवन में ग्रहण नहीं कर पायें, तो इस पर्याय को पाने का कोई अर्थ ही नहीं। भगवान महावीर ने सबसे अधिक बल संयम की आराधना पर दिया। देवता भी केवल संयम आराधना के कारण ही इस पर्याय के आगे नतमस्तक होते हैं। अतः चाहे छोटे रूप में ही सही संयम के बीज को अपने अंदर प्रस्फुटित तो होने दीजिए। यह बीज ही एक दिन वटवृक्ष के रूप में फलित होकर आपको मुक्ति के मार्ग पर ले जाएगा।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैचारिक प्रदूषण सबसे भयंकर प्रदूषण है। जो धीमे जहर की भांति जीवन में नैतिकता को समाप्त कर देता है। अतः वर्तमान परिदृश्य में सद्विचारों का संप्रेषण एक महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है और यह कार्य सद्-साहित्य के प्रचार-प्रसार के माध्यम से ही संभव है। मेरी दृष्टि में यदि आज कोई सबसे बड़ा पुण्य कार्य है 'सद् ज्ञान' का प्रचार-प्रसार एवं सद्-ज्ञान का अर्जन।

यदि आप सचमुच अपनी चंचल लक्ष्मी का सदुपयोग करना चाहते हैं तो इस विचार पर अवश्य चिंतन-मनन करें। इससे अच्छा विनियोग दूसरा कोई नहीं हो सकता। अपना विनियोग करते समय उसके स्थायी महत्व पर अपनी दृष्टि अवश्य दें। साथ ही यह भी सच है कि पुण्यवान भव्यात्माओं का द्रव्य ही इस क्षेत्र में लगता है अन्यथा तो वह फिजूल- खर्ची, दिखावे-प्रदर्शन में ही व्यय होता है।

आज समाज से नैतिकता लुप्त होती जा रही है? आखिर क्यों? क्योंकि आज हमारे जीवन में झूठ-फरेब आवश्यकता से अधिक है। जीवन में सादगी का सर्वथा अभाव है। यदि हम दूसरों से जिस तरह के व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं, वैसा ही व्यवहार दूसरों से करने की आदत डालेंगे तो शायद स्वतः ही अप्रत्यक्ष रूप से नैतिकता हमारे जीवन में दृष्टिगत होने लगेगी।

आज हमने अपनी आवश्यकताओं को अनावश्यक रूप से बढ़ा लिया है। हमें अपनी आवश्यकताओं को जितना संभव हो सीमित करना चाहिए। यदि आपके पास आवश्यकता से अधिक संसाधान हैं तो उनका उपयोग दूसरों के कल्याण में करें। ऐसी योजनाओं के क्रियान्वयन में रुचि ले, जिससे अभावों में जी रहे परिवारों को राहत की सांस मिल सके। यह संकल्प ही हमें जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि के सोपान तक पहुँचा सकेगा। सदैव याद रखिए! गरीब की दुआ से बड़ा उपहार कोई नहीं हो सकता। वह आपकी बड़े से बड़ी समस्या का समाधान दे सकता है।

संपादिका : 'णाणसायर'
बी-5/263 यमुना विहार, दिल्ली-110053

स्वागतम् नूतन वर्ष 2011

नये साल के प्रथम पृष्ठ पर, अंकित है नेह पगा पैगाम।
ओ उजली भोर की रश्मियों! स्वीकार करो हमारा सलाम।।

मधु सुधियों के प्रीति-पुष्प, महकायें सदैव जीवन उपवन।
देहरी पर हौले से विहंसा, आह्लादाच्छित हरित सावन।।

विकास के विशाल व्योम में, उकेरें पुरुषार्थ के सतरंगे चित्र।
आत्म-राग प्राणों में स्पंदित, तिरोहित समग्र अज्ञान तमिस्त्र।।

नये विश्व सृजन में योगभूत, सत्य-अहिंसा-सौहार्द मंत्रोच्चार।
पर्यावरण-व्यसन मुक्ति-शाकाहार, कन्या संरक्षण सृष्टि का आधार।।

मंगल भावों का ऊर्ध्वारोहण, खोले सुप्त मन के बंद द्वार।
शुभ शगुनों का अभिनंदन, सच! मानव जीवन अनमोल उपहार।।

आओ! नये संकल्पों से नवयुग का श्रृंगार करें।
मैत्री मंत्र का भूमण्डल तक हम विस्तार करें।।

◆ **पुष्पा सिंघी,** ***जैन हैंडलूम एम्पोरियम***
चौधरी बाजार, नन्दी शाही, कटक - 753001 (उड़ीसा)

चलें उजालों की तलाश में

मुनि सम्बोधकुमार

चलो आज फिर इक नये उजाले की तलाश में चलें,
स्याह अंधेरों से दूर रोशनी के अहसास में पलें।।

फड़क पाये ना गम का साया किसी के इर्द-गिर्द,
हर जिगर में हमेशा बस खुशी का दीया जले।।

फिरका परस्ती के हर जलजले, बुझा आये अब हम चलो,
टूट जाये धमाकों की दहशतों के सिलसिले।।

प्यार ममता की छांह से महरूम ना हो कोई भी सर,
चैनो-सुकून के मेघ बरसें, रिश्तों के अम्बर तले।।

लहलहाये अमन की फसलें वतन के अर्श पर,
अंगड़ाई ले आये नया सूरज, आके ना ढले।।

पत्थर सहने पड़ते हैं

हिंसा-फरेब-हादसों से,
सहमा-सहमा जनजीवन है।
आधुनिकता यह कैसी है?
फैशन में नंगापन है।

कितने स्वांग रच रहा व्यक्ति?
मुस्कानों में दुबकी छुरियां।
शब्द मधुर हैं दिल कठोर है,
नकली कितना अपनापन है?
त्याग की बस बातें करते हैं,
स्वार्थ भरी शातिर नजरें हैं।
लम्हे सुकून के मिलना मुश्किल,
कितना शोर ठौर-ठौर है?
कहलाते हैं साहूकार पर,
मन में दबा हुआ चोर है।
भोग-विलास के दास हो गए,
यह कैसा परिवर्तन है?
भूलकर अपनी संस्कृति को
मानव कितना दुर्जन है?

सन्मार्ग के राही को भी,
शूलों के पथ मिलते हैं।
सांसारिक जीवन के दुःख,
पहले से ही कितने हैं?
फल से लदे हुए पेड़ों को,
पत्थर सहने पड़ते हैं।

■ **हुकमचंद सोगानी**
श्रीपाल प्लाजा, द्वितीय माला
फ्लैट नंबर - 201, महावीर मार्केट,
नई पेठ, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

इस दिन हम अपने पिछले वर्ष की गलतियों और उपलब्धियों पर दृष्टि डालकर भविष्य के लिए अपना रास्ता तय कर सकते हैं। समाज में गत वर्ष जिन व्यक्तियों के बीच में किसी भी प्रकार की कटुता रही उस कटुता को मिटाकर हम उन्हें पुनः मित्रता के सूत्र में बांध सकते हैं। इसी प्रकार स्थानीय परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए अन्य अनेक ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं, जो देश में आपसी भाईचारे और संगठन की भावना को मजबूत करें।

कैसे मनाएं नव वर्ष

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

पिछले लगभग दो दशक से विकसित हो रही एक परंपरा अमेरिका में अब धीरे-धीरे जड़ जमाती जा रही है। परम्परा यह है कि नववर्ष पर वहाँ स्कूलों के बालक काफी बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण करते हैं। यह वृक्षारोपण लगभग एक सप्ताह तक और कहीं-कहीं जनवरी के अन्त तक चलता है। बच्चों के अतिरिक्त बड़े व्यक्ति भी इसमें भरपूर सहयोग करते हैं। वृक्षारोपण केवल स्कूल या अन्य शिक्षण संस्थाओं में ही नहीं, सभी सार्वजनिक स्थानों पर निर्धारित योजना के अंतर्गत किया जाता है। इस कार्यक्रम का देश की सभी पत्र-पत्रिकाएं तथा दूरदर्शन भली प्रकार प्रचार करते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। इससे वहाँ वन महोत्सव जैसे औपचारिक कार्यक्रमों की आवश्यकता नहीं पड़ती। वहाँ नव वर्ष ही वन महोत्सव दिवस भी बन गया है।

जापान में भी इसी प्रकार नव वर्ष पर एक ऐसी आदर्श परम्परा का पालन किया जाता है, जो हमारे लिए अनुकरणीय है। इस दिन सभी जापानी अपने पिछले सम्पूर्ण ऋण को चुका देना अपना प्रथम और पुनीत कर्त्तव्य मानते हैं। यदि ऋण चुकाने के लिए किसी के पास पर्याप्त धन नहीं होता तो वह अपने घर की किसी वस्तु को बेचकर भी अपना ऋण चुका देना चाहता है। इसके लिए वहाँ एक विशेष बाजार भी लगता है, जहाँ पर जापानियों को अपने सामान का उचित मूल्य मिल जाता है। प्रायः देखा जाता है कि आवश्यकता पड़ने पर कुछ लोग अपने मित्र या परिजनों से ऋण ले लेते हैं और उसको चुकाने की बात भुला देते हैं या उसे टालते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि उस व्यक्ति की अपने उस मित्र या परिजन से हमेशा के लिए शत्रुता हो जाती है। यह स्थिति सामाजिक शान्ति, भाईचारे और आपसी सद्भाव के लिए अत्यन्त घातक है तथा इस स्थिति से बचने के लिए नव वर्ष पर सम्पूर्ण ऋण चुकाने की जापानी परम्परा एक अनुकरणीय आदर्श है।

इस संदर्भ में कनाड़ा के केर्नाफ मेयर्स का नाम भी उल्लेखनीय है। कनाड़ा में उनका फास्ट फूड का लम्बा-चौड़ा कारोबार है। अपने इस कारोबार को फैलाने के लिए वे 1985 में मैक्सिको गये। वहाँ वे एक शानदार होटल में ठहरे। 31 दिसम्बर की रात्रि का समय था। अन्य अनेक लोगों के समान वे भी होटल में नव वर्ष का स्वागत करने के हास विलास में लगे थे। अचानक ही उनकी दृष्टि होटल के बाहर, गन्दी बस्ती के उन बच्चों पर पड़ी, जो वहाँ इस इंतजार में खड़े थे कि नव वर्ष का स्वागत करने के उपरांत होटल से लौटने वाले व्यक्ति उन्हें कुछ खाने-पीने का सामान दे सकें। उस भिक्षा के न मिलने पर वे होटल से बाहर फेंकी जाने वाली जूठन और बची हुई गन्दी वस्तुओं को चाटकर भी अपना पेट भरने के लिए तैयार थे। इस दृश्य ने केर्नाफ मेयर्स को द्रवित कर दिया। उन्होंने उसी समय होटल से खाने-पीने का सामान काफी मात्रा में खरीदा और उसे उन बच्चों में वितरित कर दिया। इसके बाद तो मेयर्स ने अपने जीवन का यह सिद्धांत ही बना लिया कि प्रत्येक नव वर्ष पर वे अपनी आमदनी का काफी बड़ा हिस्सा गरीब और भूखे लोगों में वितरित कर दें।

हमारे यहाँ नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र से माना जाता है और उसी समय नववर्ष का उत्सव भी मनाया जाता है। इस उत्सव में सामान्यतः कोई विशेष आयोजन नहीं होता। अपने-अपने घरों पर केवल तरह-तरह के पकवान बनाकर खा लिये जाते हैं। पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित लोग 31 दिसंबर तथा प्रथम जनवरी की मध्य रात्रि को नववर्ष का आयोजन और स्वागत करते हैं। इस आयोजन में नृत्य, गायन तथा खानपान आदि उसी रूप में शामिल होते हैं, जैसे पश्चिमी देशों में होते हैं। स्पष्ट ही इन दोनों आयोजनों (भारतीय तथा पश्चिमी पद्धति) में मूलतः कोई विशेष अंतर नहीं। दोनों में ही भौतिकवादी तथा भोगवादी प्रवृति की प्रधानता है, जिसका हमारी गरीब जनता से कोई सम्बन्ध नहीं। यदि हम अपने इस आयोजन के स्वरूप को थोड़ा बदल सकें तो निश्चित ही नववर्ष का पर्व, राष्ट्रीय पर्व बन सकेगा। पूर्वोक्त अनुकरणीय और आदर्श परम्पराओं के संदर्भ में हम इस दिन वृक्षारोपण के कार्यक्रम को अपना सकते हैं, पिछले ऋण को चुकाकर रूठे हुए मित्र परिजनों को पुनः अपना बना सकते हैं तथा भूखे और गरीब लोगों को भरपेट भोजन देकर उन्हें भी इस पर्व के आयोजन में शरीक कर सकते हैं। इस दिन हम अपने पिछले वर्ष की गलतियों और उपलब्धियों पर दृष्टि डालकर भविष्य के लिए अपना रास्ता तय कर सकते हैं। समाज में गत वर्ष जिन व्यक्तियों के बीच में किसी भी प्रकार की कटुता रही, उस कटुता को मिटाकर हम उन्हें पुनः मित्रता के सूत्र में बांध सकते हैं। इसी प्रकार स्थानीय परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए अन्य अनेक ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं, जो देश में आपसी भाईचारे और संगठन की भावना को मजबूत करें।

10/611, मानसरोवर,
जयपुर-302020 (राजस्थान)

कमलसिंह चौहान की कविताएं

नये साल के फूल

सुबह सवेरे पहले उठना,
नया साल अब आ गया अंगना।
छा गई खुशबू फूलों की,
प्रेम प्यार धरती का गहना।

रीना टीना और मदीना,
सूरज निकला कभी न सोना।
ठंडी ठंडी हवा चली अब,
सिहर उठा है घर का कोना।

नये साल के फूल खिले हैं,
भंवरे तितली गले मिले हैं।
मुस्कुराहट की चादर फैली,
बच्चा बच्चा स्वेटर पहना।

नये साल की पुस्तक खोलो,
प्रेम प्यार से सबसे बोलो।
पढ़-लिखकर तुम नाम कमाओ,
सबसे तुम हिलमिल कर रहना।

सूरज और हवा

चिड़िया बोली तितली डोली,
बच्चों ने अब आँखे खोली।
सूरज ने किरणें बिखराई,
शुद्ध हवा ने ठंडक घोली।

डाली में कलियां शरमाई,
तोते ने भी टेर लगाई।
डूबा चंदा तारे छिप गये,
मेंढक भी अब टर्र-टर्र बोली।

फूलों ने अब घूंघट खोला,
कांव कांव कर कौआ बोला।
फुदक रहा है बछड़ा देखो,
में - में करती बकरी भोली।

हिलमिल कर रहते हैं सारे,
धरती मां के बच्चे प्यारे।
अच्छा काम हो नाम बड़ा,
यह कहते मां हंसकर बोली।

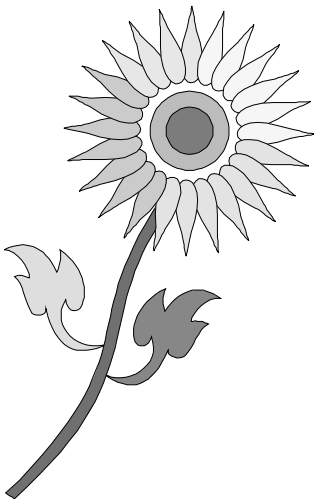

शुद्ध पर्यावरण

तारों का देखो टिमटिमाना,
मुस्कुराकर धरती पर उतर आना।
चंदा का नदी के पानी पर तैरना,
मेंढक का छपक-सा कूद जाना।

फूलों का तितली देख रूठना,
भौरों का कानों में गुनगुनाना।
मधुमक्खी का लटकना छत्ते पर,
शुद्ध पर्यावरण का मौसम सुहाना।

बछड़ों का उछलना-कूदना,
गायों का ममता में देख रंभाना।
मंदिर की बजती हुई घंटियां,
अजान का ऊँचे स्वर में उठना।

पलकों पर थिरकता बचपन,
शुद्ध हवा की लहर में अपनापन।
जीव जंतु मगन हो नाचने लगते,
प्रेम में सारा जगत समा जाना।

कविता निवास, दुर्गा मंदिर के पास
रेल्वे स्टेशन रोड़, बीड़
जिला-खंडवा (म.प्र.) 450110

अनुकरणीय व्यक्तित्व

स्वामी वाहिद काज़मी

कभी भ्रूण-हत्या (विशेष रूप से कन्या भ्रूण) के विरुद्ध विषवमन करने लगना, कभी दहेज-प्रथा के खिलाफ मुट्ठियां तानकर नारेबाजी करना। स्त्री के प्रति आदरभाव, नारियों के प्रति सम्मान की बातें करना आदि में क्या लगता है! हर कोई ऐसे गाल बजा सकता है! लेकिन कभी कोई माई का लाल बहुत मुश्किल से ऐसा नज़र आ जाता है, जो ऐसे तमाशों से अलग वास्तव में कुछ ठोस, कुछ सार्थक, कुछ उपयोगी व प्रेरक कर दिखाता है। अपनी बात स्पष्ट करने के लिए मैं यहाँ ऐसे ही दो नेक दिल माई के लालों उर्फ़ नर-रत्नों की चर्चा कर रहा हूँ! जो ऐसी दिखावटी लफ्फाजी से किनारा कर प्रेरक कर दिखाते हैं।

रियासत पटियाला के सुविख्यात वैद्य स्व. श्री ईश्वरचन्द्र शर्मा मेरे बुजुर्ग स्नेही थे। अक्सर उनसे मिलने पटियाला जाता था। दो-तीन दिनों तक कितने ही विषयों पर विचार-विमर्श होता। चर्चाएं होतीं। एक बार उन्होंने एक प्रौढ़वयः सज्जन से मिलवाया, जिनकी वहाँ चांदी-सोने के जेवरात की पुश्तैनी दुकान थी। वैद्यजी ने उनका परिचय जगत-मामाजी कहकर दिया। बाद में उन्होंने स्पष्ट किया 'स्वामीजी! ये जनाब जगत-मामा यों ही शालीनतावश नहीं कहे जाते। ये वास्तव में ऐसी तमाम लड़कियों के मामा लगते हैं, जिनके कोई मामा न हो।' बात चली तो आगे खुलासा हुआ! पता चला कि जब किसी लड़की की शादी होती और दुर्भाग्य से उसका मामा नहीं होता तो जनाब उसके मामा बनकर शादी में शरीक होते और भांजी को बाकायदा वस्त्राभूषण भेंट कर सगे मामा की भूमिका पूरे तौर पर निभाते, ताकि उस लड़की को कभी भी यह कमी न खले कि हाय! अगर आज मेरा मामा होता तो....! मैंने मामाजी को गले लगा लिया। यह तो हुई एक मिसाल। अब दूसरी।

फरीदाबाद निवासी बोधराज कपूर ने कन्या-शिशु को बढ़ावा देने के लिए अनोखा तरीका निकाला है। वे इलाके में हर कन्या-जन्म पर उसे चांदी के कंगन भेंट करके उसके अभिभावकों को प्रोत्साहित करते हैं। अब तक वे 375 कंगन भेंट कर चुके हैं। यद्यपि वे फरीदाबाद में और मैं अम्बाला छावनी में हूँ, पर उनके बारे में मुझे प्रामाणिक जानकारी है। अपने राकेश चौरसिया हैं न! सन 1947 के विभाजन के दौरान उनका परिवार ट्रेन से कुरुक्षेत्र पहुँचा था जिसमें 3600 लोग सवार थे और कबाइली हमले में 2300 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया था! तब उनका परिवार कुरुक्षेत्र शिविर में रुका। इसी शिविर में बोधराज का जन्म हुआ। बाद में वे फरीदाबाद आ बसे। अब वे स्वर्णकार संघ और साहित्यिक संस्था 'सार्थक प्रयास' के भी प्रधान इसलिए हैं कि जनाब लघु कहानीकार भी हैं।

सैनिक कॉलोनी के शान्ति निकेतन स्कूल में सन् 2004 में कन्या भ्रूण-हत्या पर एक सेमिनार हुआ था, तभी उन्होंने मंच से कन्या शिशु दर को बढ़ावा देने के लिए कन्याओं को कंगन देने की घोषणा की थी। सेमिनार में नेहरू नगर स्लम बस्ती के भी कुछ लोग आए थे। अगले ही दिन वे कुछ लड़कियों को लेकर उनकी दुकान पर पहुँच गए। इस प्रकार 'कपूर के कंगन' रूपी अभियान का श्रीगणेश हो गया।

श्री कपूर अब तक 375 से अधिक कन्याओं को कंगन भेंट कर चुके हैं। एक जोड़ी कंगन की कीमत लगभग 400-500 रुपये होती है। फरीदाबाद ही नहीं वे तो दिल्ली, गाज़ियाबाद, मेरठ की कन्याओं को भी कंगन भेंट कर चुके हैं। जो लोग उनके पास कंगन लेने आते हैं, वे उनके सामने कंगन की संदूक रख देते हैं, जिनमें तरह-तरह के डिज़ाइन के कंगन होते हैं। जिसे जो भी पसंद आता है वह उसे ले लेता है।

इतना ही नहीं, कपूर साहब ने कुछ नवजात कन्या शिशुओं को सोने की बाली व अंगूठियां भी उपहार के तौर पर दी हैं। यह एक अलग बात है कि वे केवल उन्हीं नवजात कन्याओं को स्वर्णाभूषण देते हैं, जो दो के बाद तीसरी या चौथी कन्या होती है! मज़े की बात यह कि उन्होंने कई जुड़वां कन्याओं को भी कंगन भेंट किए हैं।

यहाँ एक बात और उल्लेखनीय है कि पहले लोग उनके पास नवजात कन्या शिशु (और कभी-कभी उसकी जननी) को लेकर आते थे। इससे उन्हें एहसास हुआ कि इस प्रकार बच्चा और जच्चा दोनों को कष्ट होता है। तब उन्होंने अभिभावकों को ही बुलाना शुरू कर दिया। लेकिन इसमें छल-फरेब और बेईमानी होने लगी। अतः अब वे मित्रों की सलाह पर कन्या का जन्म प्रमाणपत्र देखकर ही कंगन देते हैं। उनके पास लगभग डेढ़ सौ बर्थ-सर्टिफिकेट भी हैं।

इस कंगन भेंट अभियान के पीछे कोई विचार, सिद्धांत, उपदेश आदि नहीं। श्री कपूर बस इतना ही कहते हैं कि कन्याओं से उन्हें विशेष स्नेह है। वे ही परिवार का आधार होती हैं। विवाह पूर्व पिता के घर में सभी का खयाल रखती हैं और शादी के बाद ससुराल जाकर भी। कुछ मूढ़ लोग कन्याओं को बोझ मानकर भ्रूण-हत्या करा देते हैं। व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्तर पर भी कपूरजी कन्या शिशुओं को बचाए रखने पर जोर देते हैं। इन दोनों नर-रत्नों को मेरा नमन।

10, राज होटल, पुल चमेली,
अम्बाला छावनी 133001 (हरियाणा)

सेहत भरी सुबह की सैर

डॉ. विनोद गुप्ता

प्रत्येक व्यक्ति ताउम्र स्वस्थ और निरोगी रहना चाहता है, लेकिन कितने लोगों की यह मनोकामना पूर्ण होती है? दरअसल हम समय रहते अपनी सेहत का ख्याल नहीं रखते। यहाँ तक कि दो कदम पैदल चलना भी नहीं चाहते। लोग तभी सुबह की सैर करने निकलते हैं जब डॉक्टर उन्हें पर्ची पर लिखकर देता है। काश, यदि व्यक्ति शुरू से ही सुबह की सैर करता रहे तो उसे डॉक्टर के पास जाने की जरूरत ही न पड़े।

वैसे तो आप चाहे जब पैदल घूम सकते हैं, लेकिन सुबह की सैर सेहत भरी होती है। क्योंकि इस समय प्रदूषण नहीं होता और वायुमंडल में शुद्ध हवा मिलती है। इस समय ऑक्सीजन भी ज्यादा मिलती है। सुबह सूर्योदय के पूर्व या सूर्योदय के समय घूमना सर्वाधिक लाभदायक है।

सुबह की सैर के फायदे

सुबह की सैर एक ऐसा हल्का व्यायाम है जिसे हर उम्र के व्यक्ति कर सकते हैं। प्रातःकाल घूमने से आनंद की अनुभूति होती है, जिससे व्यक्ति का मन प्रफुल्लित हो जाता है तथा उसमें ऊर्जा एवं उत्साह का संचार होता है जो उसे दिनभर चुस्त-दुरुस्त बनाए रखता है।

पैदल घूमना सौ रोगों की दवा है और अनेक रोगों से बचने का उपाय भी। मोटापे के शिकार लोग यदि नियमित रूप से सुबह की सैर करें, तो उनकी चर्बी घट सकती है मोटापे से निजात पाने के लिए डाइटिंग या अन्य उपाय आजमाने की तुलना में पैदल घूमना निरापद है।

बहुत से लोगों का कहना है कि उनकी जिंदगी इतनी व्यस्त है कि वे चाहकर भी सुबह की सैर नहीं कर सकते। यह उनका एक बहाना तो हो सकता है, मजबूरी नहीं। क्योंकि जहाँ चाह वहाँ राह। यदि व्यक्ति एक घंटा जल्दी उठने लगे तो वह सुबह की सैर का लाभ उठा सकता है। जब किसी हादसे के बाद डॉक्टर सैर अनिवार्य कर देता है तब भी तो आप घूमेंगे। तो किसी हादसे का इंतजार क्यों करें, गृहिणियों को भी अपनी दिनचर्या सुबह की सैर से ही करनी चाहिए। घर और दफ्तर का काम बाद में, पहले अपनी सेहत की चिंता करें।

नियमित रूप से पैदल चलना हृदय रोग से बचाता है और यदि किसी को हृदयरोग है, तो यह उसमें लाभ पहुँचाता है। इससे हृदय की मांसपेशियों को मजबूती मिलती है और वह अधिक अच्छे से काम करता है।

मधुमेह के रोगियों के लिए तो सुबह की सैर करना किसी रामबाण दवा से कम नहीं है। इससे उनकी ऊर्जा खर्च होती है। इससे उनका ब्लड-शुगर सही बना रहता है।

पाचन संस्थान यदि सही काम न करे तो अनेक उदर रोग पैदा होते हैं। नियमित रूप से सुबह की सैर करने से पेट संबंधी रोगों से निजात मिलती है, भोजन का पाचन सही होता है, क्योंकि आंतों की क्रियाशीलता बढ़ती है। इससे कब्ज भी दूर होती है। परिणामस्वरूप कब्ज जनित एसिडिटी, अफारा, गैस आदि की शिकायत दूर हो जाती है।

सुबह की सैर करने से शरीर सक्रिय होता है तथा रक्त संचार तेज होता है, जिससे शरीर की कोशिकाएं पुष्ट होकर सही ढंग से कार्य करती हैं। पसीने एवं मूत्र के जरिए उपद्रव्य शरीर से बाहर निकल जाते हैं।

शरीर की मांसपेशियों को पुष्ट बनाने के लिए सुबह की सैर बहुत जरूरी है। इससे ढीली मांसपेशियां पुष्ट होती हैं। यही नहीं मांसपेशियों में अकड़न जैसी बीमारियां भी दूर होती हैं जिन लोगों के हाथ, पैर के जोड़ दुखते हों उनके लिए तो पैदल चलना बहुत जरूरी है। इससे शरीर के जोड़ खुलते हैं, उनमें लचीलापन आता है और उनकी सक्रियता बढ़ जाती है।

सैर के साथी

सुबह की सैर आप अकेले भी कर सकते हैं और किसी के साथ भी। यदि पति-पत्नी दोनों साथ सैर करते हैं तो दोनों को ही इसका लाभ मिलता है। आप समूह में भी सैर कर सकते हैं पर वह चार या छह से अधिक बड़ा न हो तथा उसमें शामिल सदस्य हम उम्र के हों। समूह में शामिल

सदस्यों की घूमने की गति एक समान हो तो अच्छा है। सैर करते समय कम से कम बातचीत करना चाहिए।

कितनी सैर करें

व्यक्ति को प्रतिदिन कितनी सैर करनी चाहिए, यह उसकी इच्छा व सुविधा और सामर्थ्य पर निर्भर करता है। लेकिन कम से कम दो किलोमीटर का लक्ष्य तो होना ही चाहिए। यह दूरी पाँच किलोमीटर तक बढ़ा सकते हैं।

सैर के दौरान दम फूलने लगे, सीने में दर्द का अहसास हो तो रुक जाएं तथा डॉक्टर से अपना चैकअप कराएं।

कैसे चलें

सुबह की सैर करते समय यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है कि कोई कैसे चले। चलते समय शरीर को सीधा रखें। सीना तान कर, कंधे पीछे और गर्दन सीधी रखकर चलें। अपनी नजर सामने की ओर रखें। झुककर न चलें।

यदि वृद्धावस्था या शारीरिक अशक्तता के कारण छड़ी लेकर चलना मजबूरी हो तो वैसा कर सकते हैं। लेकिन यदि शोकिया तौर पर हाथ में छड़ी या डंडा लेकर चलते हैं तो चाल सही नहीं रह पाती है।

महिलाओं को चाहिए कि यदि वे साड़ी पहनकर सुबह की सैर करना चाहती हैं तो साड़ी को पिनअप कर लें ताकि साड़ी संभालते हुए चलने की नौबत नहीं आए। जो पुरुष धोती पहनते हैं, उन्हें भी एक हाथ से धोती पकड़ कर नहीं चलना चाहिए। इसी प्रकार जेब में हाथ डालकर या हाथों को आगे या पीछे बांधकर भी नहीं चलना चाहिए।

चलते समय सांस लंबी व गहरी लें तो अधिक लाभ मिलता है।

कैसी हो गति

प्रातः घूमने का लाभ तभी है जबकि आप तेज गति से चलें ताकि फेफड़ों को अधिक ऑक्सीजन मिले। तेज चलने का मतलब दौड़ लगाना नहीं है। न ही चींटी की चाल से चलें कि दो घंटे में एक किलोमीटर भी घूम नहीं पाएं। इतना तेज भी न चलें कि दम फूलने लगे, अन्यथा लाभ की बजाय हानि ही अधिक होगी।

पोषाक का चयन

सुबह की सैर करते समय मौसम के अनुरूप पोषाक का चयन करना चाहिए। सर्दियों में गर्म कपड़े पहने तथा गर्मियों में कॉटन के। जो भी पोषाक आप पहनें, वह अत्यधिक चुस्त होने के बजाय थोड़ी ढीली हो, ताकि चलने में परेशानी न हो। जो भी पहनें वह घूमने के लिए सुविधाजनक हो।

अगर आप रोज सुबह सैर पर जाते हैं तो सही डिजाइन के जूते पहनें जो आरामदेह हों। गलत जूते पहनकर घूमने या दौड़ने से आस्टो आर्थराइटिस की शिकायत हो सकती है।

मार्ग का चयन

सुबह की सैर करने के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात मार्ग का चयन करने की है। ऐसा मार्ग चुनें, जहाँ वायु एवं ध्वनि प्रदूषण न हो। जहाँ वाहनों की आवाजाही ज्यादा हो, कारखानों की चिमनियां धुआं उगलती हों, ऐसे स्थान सुबह की सैर के लिए उपयुक्त नहीं हैं। जिस मार्ग पर हरियाली हो, दोनों ओर घने वृक्ष हों, वह अधिक उपयुक्त है।

सुबह की सैर के लिए वही मार्ग चुनें, जो चढ़ाई वाला न हो यानि समतल हो अन्यथा थोड़ी ही देर में दम फूलने लगेगा। मार्ग कीचड़ भरा न हो न ही बारिश की वजह से फिसलन हो। मुख्य सड़कों पर घूमते समय चौकन्ने रहें कि पीछे से कोई वाहन टक्कर न मार दे।

महिलाओं को सुनसान रास्तों पर सुबह की सैर के लिए नहीं जाना चाहिए। अलसुबह अंधेरा भी रहता है और उनके साथ कोई हादसा भी हो सकता है। वैसे भी सुबह घूमते वक्त जेवर आदि न पहनने में ही बुद्धिमानी है।

समय की कमी का बहाना

बहुत से लोगों का कहना है कि उनकी जिंदगी इतनी व्यस्त है कि वे चाहकर भी सुबह की सैर नहीं कर सकते। यह उनका एक बहाना तो हो सकता है, मजबूरी नहीं। क्योंकि जहाँ चाह वहाँ राह। यदि व्यक्ति एक घंटा जल्दी उठने लगे तो वह सुबह की सैर का लाभ उठा सकता है। जब किसी हादसे के बाद डॉक्टर सैर अनिवार्य कर देता है तब भी तो आप घूमेंगे। तो किसी हादसे का इंतजार क्यों करें, गृहिणियों को भी अपनी दिनचर्या सुबह की सैर से ही करनी चाहिए। घर और दफ्तर का काम बाद में, पहले अपनी सेहत की चिंता करें।

43/2 सुदामा नगर, रामटेकरी,
मंदसौर (मध्यप्रदेश) 458001

इनको कभी न ठगें

समणी मल्लिप्रज्ञा

वर्तमान की मूल समस्या भ्रष्टाचार का सटीक समाधान है विश्वास को धक्का न दिया जाए। जनता का जन प्रतिनिधि के प्रति जो विश्वास है। जन सेवकों को जी जान से उस पर खरा उतरना चाहिए। बिना किसी धोखाधड़ी, घोटाले के लिए जनता के अधिकारों, आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। ताकि पूरे समाज का अभ्युदय हो।

कुछ व्यक्तियों के ऐसे वर्ग हैं जिनको कभी भी धोखा नहीं पहुँचना चाहिए। क्योंकि उनका हृदय, भाव एवं आचारण तथा व्यवहार प्रायः सबके प्रति कल्याणकारी होते हैं तथा उनकी रक्षा से विश्व-मानव की मूल्य व्यवस्था भी बनी रह सकती है। यदि अच्छे व्यक्तियों के साथ भी ठगी का व्यवहार या लेनदेन होगा तो मानव समाज का आचार संहिता, नैतिकता और सामाजिक, आर्थिक स्वास्थ्य भी चरमरा जाएगा।

फलस्वरूप ऐसे लोग जो सही समझ सूझबूझ से समाज को सही दिशा देने में समर्थ हैं वे खामोश हो जाएंगे। इसलिए प्रसिद्ध नीतिकार जैनाचार्य जिनदत्त सूरि ने स्वप्रणीत ग्रन्थ 'विवेक-विलास' में सात प्रकार के व्यक्तियों को समझदार के द्वारा न ठगने की सुंदर प्रेरणा दी है। उन व्यक्तियों के वर्ग का नामोल्लेख इस प्रकार है

''स्वच्छ स्वभावा विश्वस्ता गुरु नायक बालकाः।

देवा वृद्धाश्च न प्राज्ञैर्वञ्चनीयाः कदाचनः।।

स्वच्छ स्वभावी

अच्छे स्वभाव का होना भी कठिन है। स्वच्छ स्वभाव का निर्माण तो और भी गहरी साधना और सावधानी मांगता है। समाज में बहुत कम ऐसे व्यक्ति होंगे जिनका स्वभाव अच्छा और निर्मल दोनों हो। स्वच्छ स्वभाव के लिए वर्तमान की जागरूकता तथा पूर्वार्जित आत्म-शुद्धि आवश्यक है। स्वच्छ स्वभावी आत्मोत्सर्ग करके भी मित्रता को आंच नहीं आने देता। हर कीमत पर सबका हित सोचता है, हित चिंता करता है तथा हित साधने की भी कोशिश करता है। वह दोगला व्यवहार नहीं करता। उसे छल-कपट का क, ख भी नहीं आता। एसे व्यक्तियों के साथ स्वप्न में भी मायाचार का सहारा नहीं लेना चाहिए। प्रत्यक्ष में तो स्वच्छ-हृदयी व्यक्ति के साथ कभी भी धोखा करना ही नहीं चाहिए। ऐसे आचरण से अच्छाई और अच्छे व्यक्तियों की संख्या एवं गुणवत्ता में बढ़ोतरी होगी जो किसी भी समाज के लिए 'शुभ भविष्य है सामने' इस तुलसी युक्ति को चरितार्थ करेगी।

विश्वस्त

सृष्टि संचालन का मूल आधार है विश्वास। प्राकृतिक नियम भी विश्वास की धारणा को पुष्ट कर रहे हैं। दिन-रात का समय चक्र विश्वस्त क्रम से चलता है जिससे दुनिया के सारे क्रिया-कलाप व्यवस्थित चल रहे हैं। उसी तरह मानव समाज के सारे व्यवहार का मुख्य आधार विश्वास है। विश्वास एक मूल्य है जो विश्वमानव की चेतना को विशिष्ट बनाता है। विश्वस्त व्यक्ति के साथ लाखों, करोड़ों और अरबों क व्यापार किया जाता है तब भी सौदाकर्ता को चिंता नहीं होती। अनेक अमीर भाइयों ने तंगहाली भाइयों को विश्वास के चलते मोटी रकम उधार दी। गरीबी से निजात पाने के बाद उन व्यक्तियों ने दाता को न केवल आजीवन सम्मान ही दिया साथ में उनका जीवन पर्यन्त सहयोग भी करते रहते हैं।

विश्वस्त व्यक्ति और जिसने विश्वास किया उन दोनों का एक संकल्प रहता है कि वे एक-दूसरे के लिए श्वास खो सकते हैं पर विश्वास नहीं खोते। आज भोगवादी सोच के चलते विश्वस्त के साथ धोखा हो रहा है तथा जिसने जिस पर विश्वास किया वह भी माया से उसका विश्वास खोता जा रहा है। यह समाज के हर वर्ग के लिए सबसे बड़ा खतरा बन रहा है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राजनीति, धर्मनीति तथा अर्थनीति इन सबमें सारे संबंधों का आधार विश्वास रहता है। जब तक समाज में विश्वस्त के साथ धोखा नहीं होगा तब तक समाज स्वस्थ, समृद्ध तथा कल्याणकारी रहेगा। भूलचूक कर भी विश्वासी के साथ न तो कभी शठता करनी चाहिए। न ही कभी विश्वस्त को जिन्होंने उस पर विश्वास किया है उसे ठगना चाहिए।

वर्तमान की मूल समस्या भ्रष्टाचार का सटीक समाधान है विश्वास को धक्का न दिया जाए। जनता का जन प्रतिनिधि के प्रति जो विश्वास है। जन सेवकों को जी जान से उस पर खरा उतरना चाहिए। बिना किसी धोखाधड़ी, घोटाले के लिए जनता के अधिकारों, आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। ताकि पूरे समाज का अभ्युदय हो।

गुरु सदा पूज्य रहें

धर्म और कर्म दोनों क्षेत्रों में विकास एवं शिखर तक पहुँचने के लिए प्रायः एक गुरु अर्थात् दिशा-निर्देशक की जरूरत रहती है। खिलाड़ी के लिए कोच गुरु है। विद्यार्थी के लिए अध्यापक गुरु है। व्यापारी के लिए वरिष्ठ व्यापारी गुरु स्थानीय है। जन प्रतिनिधि के लिए अनुभवी राजनीतिज्ञ स्वामी कहलाते हैं। व्यवस्था प्रबंधन में भी कौशल हासिल करने के लिए इस क्षेत्र के विशेषज्ञ मेनेजमेंट गुरु के नाम से प्रसिद्ध है। फिल्म उद्योग में भी निर्देशक की

भूमिका बहुत मायने रखती है। साहित्य जगत में भी प्रोढ़ लेखक गुरु सम पूजनीय है। 72 कलाओं, 64 शिल्पों के भी कलाचार्यों का भी राजगुरु के रूप में सदा ऊँचा स्थान रहा है। जीवन के हर क्षेत्र और मोड़ पर सही दिशा दर्शन और दृष्टि देने वाला प्रकृति का कण-कण गुरु की गरिमा को पा सकता है। मानव समाज का दर्शन और चिंतन जगत सदैव गुरु-शिष्य परम्परा से विचारों की संस्कृति तथा संसृति पनपाता रहा है।

किसी भी क्षेत्र की दक्षता, अनुभव-प्रवणता, योग्यता, वैशिष्ट्य व्यक्ति को गुरुता का दर्जा दिलाती है। प्रत्येक व्यक्ति जो कि थोड़ा-सा भी समझदार है। वह अपने क्षेत्र में सर्वोच्च सफलता पाने के लिए अपने गुरु को कभी भी विस्मृत नहीं कर सकता है। गुरु का अनन्त उपकार भूलने वाले को इंसान कहना भी शर्मसार बात होगी। गुरु को सदा अपना आदर्श मानकर उनकी महिमा को बढ़ाना चाहिए। उनको दगा देना या उनकी शिक्षाओं को अपने नाम से प्रचारित करना गुरु को धोखा देना है। उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने में हमारी निष्ठा रहे। गुरु के साथ कतई मायापूर्ण व्यवहार तो सोचना भर भी नहीं चाहिए।

धर्म के क्षेत्र में तो गुरु का स्थान सर्वोपरि होता है। गुरु स्वयं आत्मसाक्षात्, आचार प्रवण, ज्ञान-संपन्न होकर अपनी शिष्य संपदा तथा मानव समाज का कल्याण करता है। शिष्यों में शक्ति संप्रेषण से उनकी सुप्त चेतना को जागृत करता है। अर्जुन को श्रीकृष्ण मिले, शिष्य गौतम को भगवान महावीर मिले, आनन्द को महात्मा बुद्ध मिले, स्वामी विवेकानन्द को रामकृष्ण परमहंस मिले, महाप्रज्ञ को तुलसी गुरु मिले इस तरह भारतीय ऋषि परम्परा में गुरु-शिष्य परम्परा का इतिहास अति प्राचीन है। यहाँ पर गुरु का स्थान भगवान से भी ऊँचा रखा गया। आत्मदर्शन और परमात्मा मिलन में सिर्फ और सिर्फ गुरु योगभूत बनते हैं। गुरु वह है जो कुमति के निवारक हैं, यथार्थ का ज्ञापक, सुगति, कुगति के भेदकारक, कर्त्तव्याकर्त्तव्य के ज्ञाता और समस्याओं के समाधायक हैं। ऐसी विशिष्टात्मा को ठगने का कोई भी औचित्य नहीं रहता।

नायक है नमनीय

समाज के विकास में नेतृवर्ग का बहुत हाथ रहता है। नेता यदि दूरदृष्टि सम्पन्न है, सेवाभावी है, जनता के मार्गदर्शन में सक्षम है उसको अधिमान देना देश के हर नागरिक का कर्त्तव्य है। आम जनता प्रायः अनुयायी होती है उसे नेता जैसे मोड़ता है वह उसी दिशा में प्रस्थित हो जाती है। नायक सदा देशहित को समर्पित रहता है उसे यदि ठगा जाएगा तो सामान्य व्यक्ति की क्या गति होगी।

नायक सबको विकास का अवसर देता है। आधारभूत जरूरतों की पूर्ति करने के रास्ते बताता है। समस्याओं का समाधान करता है। दुःख दूर करता है। सुख, शांति बनाए रखता है। ऐसे हितैषी को धोखा कैसे दिया जा सकता है? प्राचीन समय में राजा को नायक कहा जाता था। उसका प्रथम कर्त्तव्य होता है कि वह प्रजा के हित में तत्पर रहे। प्रजा का कल्याण कर्ता राजा को सदैव सम्मान दिया जाता। उससे माया करना तो जिस थाली में रोटी खाए उसी में छेद करने जैसा होगा। उसका परिणाम भयंकर, सजा भी हो सकती है। वर्तमान में जन-प्रतिनिधि राज्य और केन्द्रीय मंत्री तथा पदस्थ व्यक्ति जो नायक कहलाते हैं। उन सबको भी वफादार होने की आवश्यकता है। क्योंकि नायक के हाथ में जनता के भाग्य की बागड़ोर होती है।

एक ओर नायक को संयमी परार्थी एवं परमार्थी होना जरूरी है। दूसरी ओर जनता को धनबल के आधार पर अधीनस्थ, पदस्थ को अपनी स्वार्थ की संपूर्ति में गलत साधनों का उपयोग नहीं करना चाहिए। भौतिक प्रलोभन के सामने नीति न छोड़ें। अपने नेता के प्रति पूर्ण विश्वास तथा उसके द्वारा दिये दायित्व को पूरा निभाना चाहिए। संसाधन वितरण में जनता और नायक दोनों को धोखा नहीं देना चाहिए। माया, धोखाधड़ी, रिश्वत भ्रष्टाचार आदि गलत नीतियों से पूरे देश की प्रसिद्धि एवं समृद्धि दोनों को ठेस लगती है तथा विकास बनाम विनाश की स्थिति का निर्माण होता है। प्रामाणिकता, नैतिकता जैसे मानवीय मूल्य एवं मानवता दोनों की रक्षा के लिए भी नायक को कभी धोखा नहीं देना चाहिए

बालक : ईश्वर के अवतार

बाल मन साफ होता है। उसके मन रूपी दर्पण पर अभी मोहमाया की धूल नहीं जमी है। उसका हृदय बाहर, भीतर अलग-अलग नहीं होता। उसे सच को झूठ या फिर झूठ को सच करने, कहने या दिखाने के गलत तौर-तरीके मालूम नहीं होते। उसे इसी वजह से ईश्वर का अवतार कहा जाता है। उसे धोखा कैसे दिया जा सकता है।

निर्दोष को ठगना अनीतिपूर्ण होता है। उसका हर्जाना भी कर्मोदय के समय उठाना ही पड़ता है। बालक निर्दोष होता है। उसके साथ कपटी व्यवहार, लज्जा से अधिक और क्या घृणित कार्य होगा। संभव है उसके साथ किये दुर्व्यवहार को भगवान भी माफ न करे। कहीं तो रहम

भौतिक प्रलोभन के सामने नीति न छोड़ें। अपने नेता के प्रति पूर्ण विश्वास तथा उसके द्वारा दिये दायित्व को पूरा निभाना चाहिए। संसाधन वितरण में जनता और नायक दोनों को धोखा नहीं देना चाहिए। माया, धोखाधड़ी, रिश्वत भ्रष्टाचार आदि गलत नीतियों से पूरे देश की प्रसिद्धि एवं समृद्धि दोनों को ठेस लगती है तथा विकास बनाम विनाश की स्थिति का निर्माण होता है। प्रामाणिकता, नैतिकता जैसे मानवीय मूल्य एवं मानवता दोनों की रक्षा के लिए भी नायक को कभी धोखा नहीं देना चाहिए

खाना चाहिए। इस सामान्य आचार व्यवस्था के तहत् भी बालक को तीन काल में भी कभी नहीं ठगना चाहिए। बचपन का विश्वास आजीवन प्रभाव छोड़ता है। इसीलिए भी कच्चे मन को माया से ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए।

देव

देव अर्थात् आदर्श व्यक्ति जिसका जीवन दर्शन हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करे उसे ठगना कितना ओछा कार्य होगा। देवतुल्य मनुष्य जिनका आचार, व्यवहार, स्वभाव बहुत ही अच्छा हो। जो सबकी मदद करते हों। उनको धोखा नहीं देना हमारा धर्म है। देव पुरुष धीर, वीर एवं गंभीर होते हैं। अपनी समयज्ञता, सूझबूझ, समझदारी से विश्व मानव का कुशल निर्देशन करते हैं। उनकी बुद्धिमत्ता से देश की अनेक समस्याओं का समाधान होता है। सही, सटीक टिप्पणियों से जनता एवं सरकार जागरूक रहते हैं। कर्त्तव्य प्रतिबोधक होते हैं। जीवन मूल्यों के धारक एवं प्रचाकर होते हैं। उत्कृष्ट कोटि के रचनाकार हो सकते हैं, साहित्यिक सेवा से देश की सृजनशीलता का परचम फहराते हैं। ज्ञान, विज्ञान, कला, शिल्प, खेल, तकनीक, सभ्यता, संस्कृति आदि अनेक क्षेत्रों में सफलता के शिखर को छूते हैं। परिवार, समाज एवं राष्ट्र तथा विश्व का नाम रोशन करते हैं। उक्त असाधारण व्यक्तित्व के धनी देवपुत्रों के साथ माया करना समाज पर कलंक है। इनके साथ सद्व्यवहार करने से एक ओर प्रतिभा पलायन रुकेगा तो दूसरी ओर भारत का नाम ऊँचा होगा।

वृद्ध

अनुभव का खजाना है जिसमें अतीत से सबक लेने की, वर्तमान में आगे बढ़ने की तथा भविष्य की योजना बनाने की सामग्री भरी पड़ी है। बुजुर्ग पीढ़ी ने जमाने को जीया है। उनके खट्टे-मीठे अनुभव, जीवन सूत्र एवं मूल्य वर्तमान पीढ़ी के लिए सीख, सावधानी का कार्य करते हैं तथा भावी पीढ़ी के लिए धरोहर के रूप में विरासत जैसे उपयोगी बनते हैं। वयोवृद्ध वर्ग से जीवन में उतार-चढ़ाव, लाभ हानि, निन्दा-प्रशंसा, जन्म-मरण, मान-अपमान जैसी अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों में सम रहने के अनुभूत उपाय हासिल किये जा सकते हैं। उन्हें ठगना स्वयं को अनुभव हीन करार देना है।

आचारवृद्ध, तपोवृद्ध, मर्यादावृद्ध आदि अनेक प्रकार के अनुभवी वर्ग के माध्यम से उनके अमूल्य अनुभव एवं व्यवहारिक ज्ञान के माध्यम से लाभ उठाया जा सकता है। विकट, संकटपूर्ण स्थितियों का पार पाया जा सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को वृद्धों का सम्मान करना उसका अपना धर्म है। उनके साथ मायापूर्ण व्यवहार न करें।

स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ परिवार एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में उपरोक्त मानवीय गुणों से सम्पन्न मानववर्ग के साथ सदा ईमानदारी बरती जाए तो परिपार्श्व का पूरा वातावरण कल्याण की सुवास से सुरभित होगा तथा खुशबू को फैलाता जाएगा।

राष्ट्र चिन्तन

◆ रचनात्मकता हासिल करने के लिए आपको बेजोड़ बनना होगा और बेजोड़ बनने के लिए आपको काफी ज्यादा संघर्ष करना होगा। आपको सबसे मुश्किल लड़ाई तब तक लड़नी होगी जब तक आप समाज में अपना बेजोड़ स्थान हासिल नहीं कर लें। विज्ञान के कई फायदे हैं, लेकिन इसे उस स्तर तक ले जाने की जरूरत है, जहां आम आदमी की दैनिक जिंदगी में वह कोई फर्क ला सके। हमें उन लाखों लोगों की चिंता करनी होगी जिनकी जिंदगी में विज्ञान आमूलचूल बदलाव ला सकता है।
युवा विद्यार्थियों को तब सबसे ज्यादा प्रोत्साहन मिलेगा जब उन्हें अध्ययन करते हुए वैज्ञानिक तजुर्बे हासिल करने का मौका मिले।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, *पूर्व राष्ट्रपति*

◆ सियासतदानों ने आज देश को चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है। राजनीति को विशुद्ध व्यापार बना कर यह काम किया गया है। मीडिया की विश्वसनीयता भी पूरी तरह दागदार बन चुकी है। इसकी वजह यही है कि पत्रकारिता भी कारोबार बन गई है। ऐसा क्यों हो रहा है इसमें ज्यादा दिमाग खपाने की जरूरत नहीं है क्योंकि लोकतंत्र में राजनीति और पत्रकारिता दो सगी मौसेरी बहनें होती हैं। जिस प्रकार का चरित्र राजनीति और राजनीतिज्ञों का होगा उसी प्रकार का चरित्र पत्रकारिता और पत्रकारों का होगा। लोकतंत्र के अलावा जितनी भी शासन प्रणालियां हैं उनमें पत्रकारिता के लिए कोई स्थान नहीं है।
जिस प्रकार राजनीति में गैर राजनीतिक व्यक्तियों को प्रतिष्ठापित किया जा रहा है उसी प्रकार पत्रकारिता में गैर पत्रकार प्रतिष्ठापित हो रहे हैं। जिस प्रकार राजनीतिज्ञों का एकमात्र उद्देश्य धन कमाना हो गया है ठीक उसी के समानान्तर पत्रकारों का लक्ष्य भी धनोपार्जन हो चुका है। चूंकि दोनों का ही नजरिया मुनाफा कमाना है इसलिए दोनों मिल-बांट कर अपनी हसरतों को जनता के नाम पर अंजाम देते रहते हैं।

अश्विनी कुमार, *संपादक : पंजाब केसरी*

'अणुव्रत' से मिटाइए भ्रष्टाचार

डॉ. निज़ामउद्दीन

अनैतिक कर्म हिंसा है। भ्रष्टाचार अनैतिक है, इसलिए यह भी हिंसा है। यह हिंसा व्यक्ति, समाज और देश के प्रति है। सभी कह सकते हैं कि यह भ्रष्टाचार देश-व्यापी ही नहीं, विश्व-व्यापी है। इसे कर्त्तव्योन्मुखी व्यक्ति कभी नहीं मान सकता। जिम्मेदार व्यक्ति यह बात तसलीम नहीं कर सकता। हाँ, जहाँ उत्तरदायित्वहीन व्यक्ति होगा वहीं इसमें 'हाँ-में-हाँ' मिल सकती है। कभी किसी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को भ्रष्टाचार में लिप्त देखते हैं, तो कभी सेना के उच्च अधिकारी को। कभी किसी आई-ए-एस. अधिकारी को भ्रष्टाचार की दलदल में फंसा देखते हैं, तो कभी किसी केन्द्रीय मंत्री को। ऐसा लगता है इस हम्माम में सब नंगे हैं। जिस गुलशन की प्रत्येक शाख़ पर उल्लू बैठा हो, उस गुलशन को वीराने की अग्नि से कौन बचा सकता है? छोटे-छोटे अधिकारी की रिश्वत लेने के कारण सब खुलकर भर्त्सना करते हैं, लेकिन कोई 'बड़े अधिकारी' की दुष्कर्म करते, देश और समाज के प्रति गद्दारी करने की भर्त्सना क्यों नहीं करते? हम गर्व से कहते हैं कि हमारी पाँच हजार वर्ष की सांस्कृतिक परंपरा है, लेकिन क्या वह परंपरा भ्रष्टाचारोन्मुख है? क्या उस गौरवमयी परंपरा में देश को दुर्बल और खोखला बनाने का घिनौना मार्ग दर्शाया गया है। अनैतिक आचरण का जैसा शर्मनाक खेल इस देश में खेला जा रहा है, चाहे वह कुछ भ्रष्ट व्यक्तियों के द्वारा ही सही, उसे अनुकरणीय तथा भावी पीढ़ी के लिए कोई आदर्श माना जा सकता है?

हम छाती फुलाकर कभी गांधी की अहिंसा का नाम लेते हैं कभी गौतम व नानक की प्रशंसा व गुणगान करते हैं। कभी नेलसन मंडेला और किंग लूथर तक पहुँच जाते हैं। हम भगवान राम, भगवान कृष्ण, भगवान महावीर का सुस्मरण कर श्रद्धावनत होते हैं। लेकिन हमारा आचरण उनके आदर्शों के कितना अनुकूल है, कितना प्रतिकूल है, कभी इस विचार पर मंथन किया है? हमारे धर्मगुरु विशाल पंडालों में हज़ारों व्यक्तियों को धर्मोपदेश देते हैं, शांति और अहिंसा की बातें करते हैं। मुनि सुशील कुमार, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य विद्यानंदजी, आचार्य विद्यासागर, आचार्य महाश्रमण, श्रीश्रीरविशंकरजी, स्वामी अग्निवेश, मौलाना वहीउद्दीन खां, बापूजी, सुधांशुजी प्रभृति महान धर्मोपदेशकों की शरण में जाकर हम कुछ क्षणों के लिए उनकी मंगलकारी प्रवंचनावली सुनकर मानसिक शांति प्राप्त करते हैं, लेकिन सुसज्जित, भव्य पण्डाल की चमक-दमक में प्रदर्शन में तदनुसार आचरण करना भुला देते हैं। सदुपदेशों से हमारा व्यवहार मेल नहीं खाता। अनैतिकता और भ्रष्टाचार की सुरसा हमें अपना ग्रास बना रही है और हम चेतते नहीं। अनैतिकता की काली छाया नित् प्रति हमें लीलती जा रही है कि हम कुंभकरण बने गहरी नींद में डूबे हैं।

अणुव्रत का उजास ही अनैतिकता और भ्रष्टाचार के अंधकार को नष्ट कर सकता है। व्यक्ति का, समाज का नव निर्माण अणुव्रती बनकर किया जा सकता है। समाज की संरचना अणुव्रत के आधार पर की जाये तो हिंसा, बलात्कार, भ्रष्टाचार, अनाचार, घृणा, लोभ आदि सभी प्रकार के दुर्गुणों पर सहज विजय पाई जा सकती है। समय की धारा को बदला जा सकता है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का अनुपालन करने से व्यक्ति का, समाज का नवनिर्माण किया जा सकता है। भगवान महावीर स्वामी कहते हैं, दुःख किसी को प्रिय नहीं, इसलिए किसी को दुःख नहीं देना चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञ ने हिंसा का सबसे बड़ा कारण परिग्रह माना है। बलात्कार, हत्या, अपहरण की जड़ में परिग्रह ही होता है। यदि अपरिग्रह को परम धर्म मानकर उसकी आभा से अपने तन-मन को आभान्वित करें तो निश्चय ही समाज का चेहरा बदल सकता है। प्रेम की, समता की, सद्भाव की चमक आ सकती है। तीर्थंकर वर्धमान महावीर का कथन है 'मित्ती से सर्वभूतेषु वैरं मज्झं न केणई।' यही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का शंखनाद है। अणुव्रत प्रेम का प्रसार करता है, सबको अपना बनाता है, यह धर्म, जाति से बालातर है। चाहे किसी धर्म या जाति का व्यक्ति हो वह अणुव्रती बनकर समाज की संरचना में अपना योग दे सकता है। अणुव्रत का अर्थ है आत्मा का, समता का, सद्भाव का विस्तार। इससे हृदय में विशालता आती है, आँखों में प्रेम छलकता है। भगवान ऋषभनाथ के पुत्रों भरत-बाहुबली में अहिंसक युद्ध हुआ। तुलसी का 'धर्मरथ' रामचरितमानस में अहिंसा का सबसे अच्छा उदाहरण प्रतीत होता है। इसी से दिलों पर राज किया जाता है, हिंसा से नहीं। 'धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है' (डॉ. इक़बाल)। महावीर स्वामी की यही अहिंसा है और 'अणुव्रत' इसी अहिंसा का प्रतिबिम्ब है जो बढ़ते अनैतिक भ्रष्टाचार को नष्ट कर सकता है।

ग्राम व पोस्ट - बालैनी
जिला - मेरठ (उ.प्र.) 250626

निस्पृह और पुरुषार्थी व्यक्तित्व
ओमप्रकाश सोनी

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'

ओमप्रकाश सोनी ने जहाँ भी जिस पद पर काम किया पूरी निष्ठा, पूरे समर्पण और सच्ची लगन के साथ कार्य किया। अणुव्रत समिति लाडनूं के साथ जुड़कर अणुव्रत के प्रचार-प्रसार एवं विस्तार के लिए उन्होंने जो कार्य किये हैं वे सदैव लाडनूं के जन-जन के मानस पटल पर अंकित रहेंगे। वे भले ही संसार छोड़कर चले गये किन्तु उनके द्वारा किये गये कार्य, फैलायी गयी सुगन्ध सदैव उनकी याद दिलाती रहेगी।

विगत लम्बे समय से अणुव्रत से जुड़े हुए 'अणुव्रत सेवी' ओमप्रकाश सोनी का 25 नवम्बर 2010 को रात्रि 8 बजे निधन हो गया। यह खबर अणुव्रत से जुड़े हुए सभी व्यक्तियों के लिए सदमे जैसी थी। जीवन पर्यन्त कार्य करते रहे, दूसरों के हित की चिंता करते रहे, अणुव्रत के प्रचार-प्रसार के बारे में चिंतन करते रहे, किन्तु कभी अपने बारे में नहीं सोचा, अपने परिवार की कभी चिंता नहीं की। इसे पुण्य कर्मों का ही योग कहेंगे कि वे चलते-फिरते इस दुनिया से चले गये। एक भी दिन किसी की सेवा नहीं ली। किसी को इलाज का अवसर नहीं दिया। 10 मिनट में ही, सारा खेल खत्म हो गया। हंसते-विहंसते क्षणभर में 79 वर्ष की वय में श्री सोनीजी इस संसार से विदा हो लिए और छोड़ गये अपने पीछे ऐसी रिक्तता जिसका भर जाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

मुझे वह दिन याद है जब 1993 में अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी की प्रेरणा से लाडनूं में अणुव्रत समिति का पुनर्गठन किया गया। एक साधारण सदस्य के रूप में श्री सोनी समिति से जुड़े। कुछ समय पश्चात सहमंत्री बने, इसके बाद समिति के उपाध्यक्ष बने, वरिष्ठ उपाध्यक्ष बने फिर कार्याध्यक्ष बने और अध्यक्ष का दो वर्षीय कार्यकाल सम्पन्न कर 1 जनवरी 2010 को पुनः सर्वसम्मति से आगामी दो वर्ष के लिए अध्यक्ष चुने गये थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें संसार छोड़कर जाने का अहसास होने लगा था तभी तो विगत दस दिनों में तीन बार अध्यक्ष पद छोड़कर दूसरे को अध्यक्ष बनाने की बात कही थी। तीनों बार मैंने यह कहकर उन्हें शान्त किया था कि अब अध्यक्ष पद का लगभग एक वर्ष का कार्यकाल शेष है, इसे पूरा होने दीजिए फिर संरक्षक के रूप में समिति आप से मार्गदर्शन प्राप्त करती रहेगी। किसी भी संस्था के साधारण सदस्य से जुड़कर उस संस्था के शीर्ष तक पहुँचना यह किसी पुरुषार्थी व्यक्तित्व की ही उपलब्धि हो सकती है। 1995 में समिति के द्वारा लाडनूं क्षेत्र के 101 गांवों में जनजागरण अभियान चलाया गया। उस अभियान में मेरे साथ स्थायी सदस्य के रूप में उनके कार्य की जितनी प्रशस्ति की जाय कम है। अन्य कार्यकर्ता दो-चार दिन के लिए जुड़ते रहे किन्तु उन्होंने उस अभियान में जो कार्य किया था उसका कोई सानी नहीं। जून मास की तमतमाती गर्मी और लू के थपेड़े जैसी विषम स्थिति में एक गांव से दूसरे और दूसरे से तीसरे गांवों की धूल भरी आंधी के बीच में यात्रा करना, लोगों को एक स्थान पर इकट्ठा करना और ग्रामीणों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना नशामुक्ति का माहौल बनाकर उन्हें संकल्प दिलाना, सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागृत करना आदि ऐसे कार्य थे जिसके माध्यम से उनके परिपक्व व्यक्तित्व की याद ताजा होती है। नागौर जिले के स्कूलों में नशामुक्ति अभियान और नागौर जिले में चुनावशुद्धि अभियान के लिए उन्होंने जो कार्य किये थे, उनकी प्रस्तुति शब्दों में संभव नहीं है।

'कर्म ही पूजा है' को आधार मानकर श्री सोनी आजीवन अणुव्रत की लौ जलाते रहे। कोई भी कार्यक्रम की आयोजना हो और वे आधा घंटे पहले न पहुँचे यह कैसे संभव हो सकता है? अर्थात् प्रत्येक कार्यक्रम में पहले से पहुँचकर व्यवस्था-पक्ष देखते थे। अणुव्रत के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। कार्य के बदले कभी कुछ अपेक्षा नहीं की। पारिवारिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। यों तो वे श्री जे.बी.सी. हायर सेकेंडरी स्कूल में इतिहास के व्याख्याता से रिटायर हुए थे। फण्ड जरूर मिला था, किन्तु पेंशन के न होने से आर्थिक दृष्टि से कमजोर ही थे किन्तु इसका अहसास कभी किसी को नहीं होने दिया और अपने द्वारा दिये जाने वाले समय और श्रम का कभी कोई प्रतिदान या प्रतिफल नहीं चाहा। इससे सिद्ध होता है कि वे एक निस्पृह और निर्लोभी व्यक्ति थे। सम्मान आदि से दूर रहने की कोशिश

करते थे। अणुव्रत अनुशासता आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने जयपुर में उन्हें ''अणुव्रत सेवी'' का संबोधन प्रदान किया। समिति के कार्यकर्ताओं ने एक कार्यक्रम में सम्मानित करना चाहा तो उन्होंने साफ इंकार कर दिया कि मेरे लिए कोई कार्यक्रम आयोजित नहीं होगा। ऐसे कार्यकर्ता थे श्री सोनी। हालांकि समिति के लोग भी कहाँ मानने वाले थे। एक कार्यक्रम में अकस्मात उनका सम्मान कर अपने मन की मुराद पूरी की। उस युग में जब कोई एक तिनका भी इधर से उधर करता है तो वह उसका ढिंढोरा पीटकर उसका प्रतिदान प्राप्त करने की कोशिश करता है। पाश्चात्य चिंतक बेंथम तो यहाँ तक कहता है कि आज के युग में बिना स्वार्थ के कोई कनिष्ठ अंगुली भी नहीं हिलाना चाहता, किंतु ऐसे युग में श्री सोनी ने निःस्वार्थ भाव से लाडनूं अणुव्रत समिति की सेवा की।

समिति के द्वारा 28 नवम्बर 2010 रविवार को ऋषभद्वार में स्मृति सभा का आयोजन किया गया। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के संदेश का वाचन संरक्षक विजय सिंह बरमेचा ने किया। मुनिश्री ने उनके कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। साध्वी रामकुमारी ने उन्हें 'निश्चिन्त व्यक्ति' के रूप में और साध्वी काव्यलता ने कथनी-करनी की समानता वाला व्यक्तित्व के रूप में उनकी प्रशंसा की।

वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। शिक्षा जगत में लगभग 40 साल एक शिक्षक के रूप में उनकी सेवाएं अप्रतिम रही। स्कूल में एक नियमित शिक्षक के रूप में उनकी अलग साख थी। कैसी भी स्थिति हो समय पर स्कूल पहुँचना और बच्चों को पढ़ाना उनकी प्राथमिकता रहती थी। एक स्काउट गाइडर के रूप में भी उनकी सेवाओं को खूब याद किया जाता है। राजनीति से भी जुड़कर लाडनूं नगर की सच्ची सेवा की। वार्ड पार्षद के रूप में उनकी सेवायें सराहनीय रही। स्थानीय स्तर पर भाजपा के महामंत्री के रूप में कार्य करते हुए इस बात को प्रस्तुत किया कि राजनीति सेवा के लिए है। अतः राजनीतिक को सेवक के रूप में कार्य करना चाहिए।

'सब ठीक है' उनका तकिया कलाम था। कई संस्थाओं से जुड़े हुए थे। प्रायः हर संस्था में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो किसी की शिकायत कर, किसी को भड़काकर मजा लेने की कोशिश करते हैं। ऐसी ही कोशिशें कई बार उनके समक्ष भी की गयी, किन्तु सहज भाव से 'सब ठीक है' सुनकर लोगों को पता चल गया कि श्री सोनी को कभी भी मोहरा नहीं बनाया जा सकता। उन्होंने जहाँ भी जिस पद पर काम किया पूरी निष्ठा, पूरे समर्पण और सच्ची लगन के साथ कार्य किये। अणुव्रत समिति लाडनूं के साथ जुड़कर अणुव्रत के प्रचार-प्रसार एवं विस्तार के लिए उन्होंने जो कार्य किये हैं वे सदैव लाडनूं के जन-जन के मानस पटल पर अंकित रहेंगे। वे भले ही संसार छोड़कर चले गये किन्तु उनके द्वारा किये गये कार्य, फैलायी गयी सुगन्ध सदैव उनकी याद दिलाती रहेगी। ठीक ही कहा गया है

''इन्सान चला जाता है, यश सौरभ रह जाता है।

साथी छूट जाते हैं, बस यादें रह जाती हैं।।''

इन्हीं यादों के साथ इस कर्मशील व्यक्तित्व को नमन्।

निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
लाडनूं - 341306 (राजस्थान)

कष्ट

लघुकथा

वह बहुत दिनों से मुझे परेशान नज़र आ रहा था। उसे कई बार काम करते करते, शून्य में ताकते देखा था, वह कुछ सोचता-सोचता एक दम चुप-सा हो जाता था। मेरी हिम्मत नहीं होती थी कि मैं उससे इस बात का कारण पूछूँ। परन्तु एक दिन वह मेरी मेज़ पर आकर बैठ गया। मैंने चाय मंगवाई। हम दोनों चाय के साथ बिस्कुट खाने लगे। वह जैसे कुछ कहना चाह रहा हो परन्तु कह नहीं पा रहा था। मैंने हौसला जुटाकर पूछ ही लिया, ''क्या बात है बड़े दिनों से आपको परेशान देख रही हूँ।'' वह बोला, ''कुछ नहीं, आप शाम को घर आओ, घर पर ही बात करूँगा। शायद आपको कहकर मैं कुछ हल्का महसूस कर सकूँ।'' घर आकर मैंने अपना सारा काम निपटाया और अपने पति के साथ उनके घर चली गई। बच्चे और उनकी पत्नी सब घर पर ही थे। इतने में वह आया, बोला, ''बहन जी! मेरा बड़ा बेटा काफ़ी दिनों से परेशान है, किसी से बात नहीं करता, कई बार शाम को देरी से घर आता है। न ढंग से पहनता है न खाता है, मुझे सारा दिन इसकी चिन्ता लगी रहती है।'' मैंने कहा, ''भैया! बच्चे बड़े हो चुके हैं, उनकी कई निजी समस्याएँ हो सकती हैं, हमें उनमें दखल नहीं देना चाहिए, पर आप कहते हैं तो मैं उनसे पूछ लेती हूँ, मुझसे तो वह बचपन से बहुत प्यार करता है।'' मैंने उनके बड़े बेटे को बुलाया। औपचारिकता के बाद मैंने उससे पूछा, ''बेटा, पापा तेरे लिये इतने दिन से परेशान हैं, वह बीमार से लगने लगे हैं, क्या बात है तुम क्या किसी उलझन में हो?'' पहले वह चुप रहा, पर मेरे बहुत पूछने पर वह बोला, ''आँटी, मैं तो सिर्फ इन माँ-बाप से दुःखी हूँ, मैं इनके साथ नहीं रहना चाहता, मुझे अब अपनी ज़िन्दगी अपने ढंग से जीनी है। मैं अपने परिवार के साथ ऐश करना चाहता हूँ।'' वह सोफे पर बैठा और भी गहरा उसमें धंस गया, उसका मुंह पीला पड़ गया। मेरी आँखों से भी आँसू रुक नहीं पाए क्योंकि मैं उस ईमानदार, दयालु आदमी को जानती थी।

■ **शबनम शर्मा,** ***नवाब गली, नाहन, जिला सिरमौर, हि.प्र.-173001***

पाठक दृष्टि

◆ 'अणुव्रत' आ रहा है। जब आपके यात्रा विवरण आते हैं, उन्हें पढ़ने पर लगता है कि मैं भी आपके साथ हो गया हूँ। स्थानीय व्यक्तित्व और परिस्थितियां साथ-साथ उद्भासित होते रहते हैं। यह भी लगता है कि आप कितना व्यक्तिगत प्रयत्न अपने पद को सार्थक करने के लिए कर रहे हैं। अणुव्रत का संदेश जितना फैलेगा उतना ही सद्चरित्र का विकास होगा।

राजेन्द्र शंकर भट्ट, *जयपुर-राजस्थान*

◆ 'अणुव्रत' 1-15 अगस्त का अंक पढ़ा। विचारोत्तेजक संपादकीय पढ़कर लगा कि सोये हुए समाज को थपकी के बदले झकझोरकर उठाने की आवश्यकता है। मैंने आचार्यप्रवर से निवेदन भी किया कि एक वर्ष के लिए विभिन्न आयामों को विराम देते हुए संस्थाएं ''समाज सुधार'' का एक सूत्री कार्यक्रम हाथ में लें और उसके कार्यान्वयन में लग जायें। आपने सही लिखा है कि सिर्फ 2-3 प्रतिशत समाज का सम्पन्न वर्ग सुधार की दिशा में रोड़ा बना हुआ है। स्वस्थ समाज रचना हेतु आपका लेखक एक मील का पत्थर बनेगा, ऐसा विश्वास है। अपने क्रांतिकारी लेखन को जारी रखें।

महावीर चंद दरला, *टी-नगर चेन्नई*

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक 16-31 अगस्त अंक में आपने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी की आहट को शब्द दिये और आह्वान किया है कि देश के सभी लोग मिलावट नहीं करने और भ्रष्ट आचारण नहीं करने का संकल्प स्वीकार कर स्वस्थ समाज के निर्माण की दिशा में अग्रसर हों। आपने स्पष्ट किया है कि अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने व्यापार, व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहने का उद्घोष प्रारंभ से ही किया है। अणुव्रत का छठा नियम है मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुंचाऊंगा, छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा। कितना स्पष्ट दर्शन है दिशाबोध का। काश हमारे देशवासी इसे समझें, स्वीकारें और तदनुसार आचारण करें।

यह संपादकीय मिलावटियों को चेतन कर सकने में समर्थ है। बशर्ते कि वे इसे आप्त वाक्य व ईश्वरीय आदेश मानकर स्वीकारें। आपकी उद्विग्नता संपूरित सम्बद्धता एवं जागृति हेतु शंखनाद का स्वागत एवं साधुवाद।

रूपनारायण नारायण काबरा, *वैशालीनगर-जयपुर*

◆ मैं 'अणुव्रत' पत्रिका नियमित रूप से पढ़ती हूं। पत्रिका का संपादन, गुणवत्ता, भाषा-शैली एवं संयोजन अत्यंत सराहनीय है। आप नैतिक जागरणा हेतु महत्वपूर्ण दायित्व निर्वाह कर रहे हैं एवं साधुवाद के पात्र हैं। अमृत संसद के अधिवेशन के दौरान आपके विचार भी सुने, अच्छा लगा।

डॉ. वीरबाला छाजेड़, *उज्जैन-मध्यप्रदेश*

झाँकी है हिन्दुस्तान की

● पिछले 20 वर्षों में संसद की कार्यवाही पर प्रति मिनट होने वाले खर्च में 20 गुना बढ़ोतरी हुई है। आंकड़ों के मुताबिक, 1990-91 में संसद सत्र के दौरान प्रति मिनट 1,642 रुपए था। वर्ष 2009-10 में यह खर्च बढ़कर 34,888 रुपए प्रति मिनट हो गया। सरकार ने 2010-11 के बजट अनुमान इस खर्च में करीब दस फीसदी कटौती की उम्मीद जताई थी। पर बजट सत्र के दौरान दैनिक भत्ता एक हजार रुपए से बढ़ाकर दो हजार कर दिया गया। इसलिए यह खर्च लगभग दो गुना होने की उम्मीद है।

वर्ष 1951 में संसद की कार्यवाही चलने का प्रति मिनट खर्च सिर्फ 100 रुपए था। वर्ष 1966 तक यह खर्च बढ़कर 300 रुपए प्रति मिनट पहुंच गया। सन् 1990 के बाद खर्च में एकदम तेजी आई है। क्योंकि वर्ष 2000 में सांसदों को मिलने वाला दैनिक भत्ता बढ़ाकर 500 रुपए प्रति दिन हो गया। इसके बाद संसद में प्रति मिनट खर्च करीब 18 हजार रुपए प्रति मिनट। इसके बाद वर्ष 2006 में 24 हजार हो गया। अब संसद की कार्यवाही पर प्रति मिनट करीब 35 हजार रुपए खर्च होते हैं।

● राजस्थान में 6 से 14 साल के करीब 12 लाख बच्चों ने स्कूल नहीं देखा है। करीब 7.14 लाख लड़कियां और 4.77 लाख लड़के हैं। इन बच्चों को प्रशिक्षण देकर उनकी उम्र के हिसाब से कक्षाओं में दाखिला दिया जाना है। शिक्षा का अधिकार कानून के तहत इतनी बड़ी संख्या में बच्चों को स्कूल में दाखिला देकर मुख्यधारा में लाना और स्कूलों में पहली कक्षा से अंग्रेजी पढ़ाना राज्य सरकार के लिए बड़ी चुनौती है। राज्य में 'स्कूल जाने वालों' का प्रतिशत बढ़ा है। 6-14 साल की उम्र के एक करोड़ बच्चे हैं। इनमें से करीब 12 लाख स्कूल नहीं पहुंच पा रहे हैं। दूसरी चुनौती यह है कि लड़कियों के स्कूल जाने का प्रतिशत कम है। अभी भी जो बच्चे स्कूल आ रहे हैं, उनमें 60 प्रतिशत लड़के और 40 प्रतिशत लड़कियां हैं।

पर्यावरण संतुलन का मंत्र : संयम

साध्वी निर्वाणश्री

जीवन पदार्थ सापेक्ष है। प्राणी की जीवन यात्रा पदार्थ के अभाव में अवरुद्ध हो जाती है। श्वास, भोजन, पानी, वस्त्र आवास आदि की प्राप्ति का स्रोत पर्यावरण है। पर्यावरण की शुद्धता के आधार पर ही शुद्ध जीवन की परिकल्पना को आगे बढ़ाया जा सकता है। पर्यावरण के चक्र की असंतुलित गति प्रकृति के लिए ही नहीं, मानव सभ्यता के लिए भी एक बड़ा खतरा है। उस खतरे को लेकर समय-समय पर वैज्ञानिकों के द्वारा इस संबंध में उद्घोषणाएं भी होती रहती हैं। विनाश का चित्र खींचते हुए पर्यावरणविदों ने कहा 'धरती और आकाश एक दिन धूलि से पट जाएगा'। धरती का तापमान कहीं बहुत अधिक ठंडा और कहीं बहुत अधिक गर्म होगा। हिमखंड पिघल जाएंगे। समुद्र के जलस्तर की अभिवृद्धि से उसके तटवर्ती गांव और शहर जल-जलाकार हो जाएंगे। जल और स्थल विषाक्त हो जाएंगे। सभी प्राणियों का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा।'

महान् पर्यावरण संरक्षक भगवान महावीर की वाणी में उसी महाविनाश का एक चित्र भगवती सूत्र में प्राप्त होता है। वे कहते हैं 'उस समय में संवर्तक वायु चलेगी। उन प्रलयंकारी हवाओं से पहाड़ तक प्रकंपित हो जाएंगे। धूलभरी आंधियों से धरती और आकाश धूलिमय बन जाएंगे। चंद्रमा इतना शीतल होगा कि रात को व्यक्ति बाहर नहीं निकल पाएगा। दिन में सूर्य की गर्मी उसे झुलसा देगी। वैताड्ढय पर्वत (हिमालय) को छोड़कर सभी पहाड़ नष्ट हो जाएंगे। सिंधु और गंगा नदी के कुछ तट को छोड़कर शेष सभी नदियां विलुप्त हो जाएंगी। उस समय में बरसने वाले मेघ शरीर को रुग्ण करेंगे। वनस्पति, कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी, मनुष्य प्रायः नष्ट हो जाएंगे। बचे हुए मनुष्य चूहों की तरह गुफाओं में दुबककर जैसे-तैसे अपना समय पूरा करेंगे। मछलियां ही एकमात्र उनके जीवन का आधार होंगी।'

आज उपभोक्तावाद की चेतना प्रबल है। मानव मन सुविधाओं का अंबार लगाने को बेताब है। सुविधाओं का सोपान इतना ऊँचा हो गया है कि किसी भी कार्य को करने के लिए स्विच ऑन करने के लिए भी वह उठने-बैठने का कष्ट नहीं उठाना चाहता। उसके लिए उसे रिमोट अपने हाथ में चाहिए। विकास के ईगो के साथ उसे नियंत्रित करने के लिए संयम के सुपर ईगो का होना आवश्यक है। भगवान महावीर ने इस संबंध में अहिंसक चेतना की उपादेयता की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए कहा 'जीवन यात्रा के लिए अनिवार्य हिंसा अपरिहार्य हो सकती है। पर इसके साथ अहिंसा की महत्ता को समझें। अनावश्यक हिंसा से बचें।' महावीर वाणी का यह सूत्र सृष्टि संतुलन का अमोघ मंत्र है।

मानव प्रकृति को प्रदूषित कर उस महाविनाश को त्वरित गति से अपनी ओर आमंत्रित कर रहा है। खनिजों के अतिरिक्त दोहन से धरती खोखली बन रही है। परिणामतः भूकंप और भूस्खलन की घटनाओं में बीते दशकों की तुलना में कई गुणा इजाफा हो रहा है। उद्योगों से लेकर गृह कार्यों तक जल का जिस रूप में अपव्यय हो रहा है वह भूमिगत जल भंडार की दृष्टि से एक बड़ा खतरा है। करोड़ों-करोड़ों लोगों के समक्ष शुद्ध पेयजल एक चुनौती के रूप में है। ईंधन और बिजली की बढ़ती खपत को लेकर सभी राष्ट्र चिंतित है। विज्ञान निरंतर उसके विकल्पों की खोज में सचेष्ट है। बिजली की उपलब्धता का ग्राफ जब-जब घटता है सरकार को गांवों से लेकर महानगरों तक जनता का कोपभाजन बनना पड़ता है। बिजली वर्तमान जीवन की अहम जरूरत बन गई है। यातायात के बढ़ते संसाधनों एवं घरेलू जीवन में यांत्रिक उपकरणों के अंधाधुंध उपयोग ने वायुमंडल को प्रदूषित कर दिया है। शहरी जीवन में शुद्ध प्राणवायु की उपलब्धता एक प्रश्नचिह्न के रूप में है। भीड़ भरे माहौल में मास्क का उपयोग एक अनिवार्यता बन रहा है। कॉर्बन डाई-ऑक्साइड, मोनोक्साइड आदि जहरीले गैसों के घनत्व ने धरती के सुरक्षा कवच ओजोन को जिस तरह से विखंडित किया है वह बड़े खतरे के रूप में सबके सामने हैं।

''मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्षों को नहीं काटूंगा। पानी का अपव्यय नहीं करूँगा।'' इन संकल्पों का जितना अधिक विस्तार होगा हम उतने ही समाधान के करीब पहुँच पाएंगे। इस धरती की स्वर्गीय सुषमा शताब्दियों नहीं, सहस्राब्दियों तक इसी रूप में बनी रहेगी।

शान-शौकत और एय्याशी के नाम पर जिस तरह से आम आदमी वृक्षों को काटने के लिए बेपरवाह हो रहा है, वह ऋतुचक्र के असंतुलन का बहुत बड़ा हेतु है। मानव सभ्यता स्थान-स्थान पर अतिवृष्टि और अनावृष्टि के रूप में उस दंश को झेल रही है।

ग्रामस्तर से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर केवल संगोष्ठियां, सेमिनार, परिचर्चा आदि कर लेना ही प्रदूषण का स्थायी समाधान नहीं है,

अपितु इसके लिए व्यक्ति-व्यक्ति की चेतना को संयम के निनाद से निनादित करना होगा। विज्ञान को भी इसका समाधान पदार्थ के विस्तार में नहीं, अपितु उसकी सीमा में दृष्टिगत हो रहा है। अध्यात्म के मंच से हजारों वर्ष पूर्व यही घोषणा संयम के नाम से हुई। शाश्वत समस्याओं का समाधान शाश्वत के धरातल पर ही खोजा जा सकता है।

उपभोग/असंयम के संबंध में सर्वज्ञ भगवान महावीर की उद्घोषणा है 'हिंसा मोह है, मृत्यु है, नरक है और ग्रंथि है। उससे कभी व्यक्ति का अंतिम हित सिद्ध नहीं होगा। इससे अविद्या के संस्कार प्रबल से प्रबलतर होते चले जाएंगे।' पृथ्वी, पानी, अग्नि आदि जीवों की तरह अजीव का संयम भी आवश्यक है। साधकों के लिए सत्रह प्रकार के संयम की प्रेरणा इस संबंध में दी गई। यदि संयम का यह भाव गृहस्थ जीवन में स्थूल या आंशिक रूप में जुड़ता है तो जहाँ एक ओर पर्यावरण की विशुद्धि होती है वहीं दूसरी ओर जीवन तनाव मुक्त बनता है। जीवन को शांति और आनंदपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति संयम की ओर प्रस्थान करे।

सुखवाद और सुविधावाद की मानसिकता आज पर्यावरण प्रदूषण के लिए अग्नि में घी की आहूति का कार्य कर रही है। इच्छाओं का परिष्कार किए बिना यदि व्यक्ति अबाधगति से इसी दिशा में बढ़ता रहा तो यह स्वयं उसके अस्तित्व के लिए बहुत बड़ी चुनौती होगी। भगवान महावीर ने इस शाश्वत सत्य का प्रतिपादन करते हुए कहा जो लोक (जीव-जगत) के अस्तित्व का अपलाप करता है, वह अपने अस्तित्व का अपलाप करता है। जीवों की तेजी से विलुप्त होती प्रजातियां इसका प्रत्यक्ष निदर्शन हैं। तात्पर्य की भाषा में कहा जा सकता है कि परस्परानुग्रह बुद्धि से ही इस जगत् में भांति-भांति के जीवों का अस्तित्व टिका हुआ है। चिड़ियों पर प्रयोग करके देखा गया कि जब उन्हें आहार के रूप में कीट-पतंगे उपलब्ध नहीं हुए तो वे मानव शरीर का मांस नोचने को तत्पर हो उठीं। अतः पर्यावरण संतुलन के लिए स्थावर और जंगम, दृश्य और अदृश्य सभी जीवों के अस्तित्व को स्वीकार करना एवं उनके प्रति अहिंसक चेतना का जागरण आवश्यक है।

आत्मोपम्य की बुद्धि के जगाने पर संकुचित स्वार्थों पर स्वतः लगाम लग जाएगी। संयम का उच्छ्वास ही पर्यावरण की विशुद्धि का अचूक उपाय है। अणुव्रत आंदोलन इस संदर्भ में व्यक्ति-व्यक्ति से आह्वान करता है

''मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्षों को नहीं काटूंगा। पानी का अपव्यय नहीं करूँगा।''

इन संकल्पों का जितना अधिक विस्तार होगा हम उतने ही समाधान के करीब पहुँच पाएंगे। इस धरती की स्वर्गीय सुषमा शताब्दियों नहीं, सहस्राब्दियों तक इसी रूप में बनी रहेगी।

बाल कथा

नदी में पानी कम था। उस में पड़ी रेत और गोलगोल पत्थर सुंदर लग रहे थे। पास के टीले पर रहने वाला चूहा नदी तट पर पानी पीने पहुँचा। तभी उस की नजर सामने दूसरे तट पर पड़ी जहाँ एक लोमड़ खड़ा था।

नमस्ते, लोमड़ चाचा। क्या हालचाल है? चूहे ने कहा।

नमस्ते, चूहे भाई। हालचाल तो बुरे नहीं, पर बहुत अच्छे भी नहीं है, लोमड़ बोला, मेरी मांद तंग है। उसमें गर्मी रहती है, पर जब करवट बदलता हूँ तो बगले दीवारों से रगड़ खाती हैं।

मेरी मुसीबत उलटी है, चूहा बोला, बारिश से जमीन कट गई है, मेरा घर ज्यादा ही खुला हो गया है।

अरे, तो इस में कौन-सी मुसीबत की बात है?

तो चलो, अदला-बदली कर लेते हैं।

ठीक है, लोमड़ ने कहा, तुम्हारा घर कहाँ है?

उस टीले पर, वट वृक्ष के कोटरे में, चूहे ने बताया।

लोमड़ नदी पार कर के तट पर आ गया।

चूहा नदी के पत्थरों पर कूदता-फांदता हुआ उस पार चला गया। वह लोमड़ की मांद में पहुँचा। पहले तो उस ने चारों ओर सिर घुमा कर उसे देखा, फिर खुद को असुरक्षित महसूसकर पिछली टांगों पर बैठ कर रोने लगा, हाय, मैं इतनी बड़ी गुफा में क्या करूँगा? यहाँ तो कोई बिल्ली मुझे आ दबोचेगी।

कौआ देख लेगा और उठा ले जाएगा। यहाँ मैं तेज हवा में भी कहीं नहीं छिप सकता...।

चूहा रोता जा रहा था, तभी उस ने किसी के आने की आहट सुनी। वही लोमड़ था, चूहे ने जल्दी जल्दी आँसू पोछे और बोला, लौट क्यों आए?

तुम्हारे बिल में घुस नहीं पाया, लोमड़ बोला।

पहले मुंह नाक अंदर घुसानी चाहिए, चूहे ने बताया।

मैंने मुँह नाक घुसाने का प्रयास किया था। वह भी नहीं जाते, लोमड़ ने कहा।

यह नहीं हो सकता, चूहा बोला, चलो, मैं तुम्हारी नाक से अपनी नाक मिला कर देखता हूँ। चूहा लोमड़ की नाक पर लेट गया। फिर बोला, जरा सोचो तो, कितना छोटा हूँ मैं।

लोमड़ बोला, जरा देखो तो, कितना बड़ा हूँ मैं, अब हम क्या करें?

चलो फिर से अदला-बदली कर लेते हैं। अपने-अपने घरों में चले जाते हैं। अपने घर से प्यारा कोई नहीं, चूहे ने कहा।

हाँ, ठीक है, चलो, लोमड़ ने खुश हो समर्थन किया।

अब दोनों ही संतुष्ट व खुश थे। इस के बाद उन्होंने कभी अपने घर की शिकायत नहीं की।

■ **राजकुमार जैन 'राजन'**
चित्र प्रकाशन, आकोला - 312205 (चित्तौड़गढ़-राज.)

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में सांसद गोष्ठी

अणुव्रत से रुकेगा देश में व्याप्त भ्रष्टाचार

बीकानेर, 12 दिसंबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आचार्य तुलसी समाधि स्थल पर सांसदों की संगोष्ठी आयोजित हुई। इसमें विभिन्न राज्यों के नौ सांसदों ने भाग लेते हुए माना कि देश में भ्रष्टाचार विकराल रूप धारण करता जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम निजी तौर पर नैतिक बने रहने का प्रयास करते हैं। संगोष्ठी का विषय था ''नैतिकता की प्रतिष्ठा में सांसदों की भूमिका''। उपस्थित सांसदों ने माना कि अब आम जनता नेताओं की बात को तवज्जो नहीं देती। ऐसे में धर्मगुरुओं की पहल पर प्रभावी बदलाव हो सकता है।

आचार्य महाश्रमण ने अणुव्रत की आचार संहिता के नियमों का पालन करने की जरूरत बताई। सांसदों ने अणुव्रत के नियमों का पालन कर पहले खुद में सुधार कर बाद में अन्य सांसदों में भी बदलाव लाने का प्रयास शुरू करने का निर्णय किया।

अणुव्रत संसदीय समिति का गठन

उक्त गोष्ठी में अणुव्रत संसदीय समिति का गठन किया गया। समिति का संयोजक बीकानेर के सांसद अर्जुनराम मेघवाल को बनाया गया है। चंदुलाल साहु ने मेघवाल को संयोजक बनाने का प्रस्ताव रखा। इसका अनुमोदन प्रसन्न कुमार पारसाणी, डॉ. भोला सिंह, वीरेन्द्र कश्यप, डॉ. राजन सुशान्त, दिलीप गांधी, गोपाल व्यास और रघुवीर मीणा ने किया। अर्जुन मेघवाल ने बातचीत में पत्रकारों को बताया कि संसद में इसकी रूपरेखा पेश की जाएगी।

इस अवसर पर उपस्थित विभिन्न राज्यों के सांसदों के मुख्य रूप से विचार इस प्रकार रहे

भुवनेश्वर-उड़ीसा के सांसद प्रसन्नकुमार पारसाणी ने कहा चाहे राम हो या वर्तमान के जनप्रतिनिधि। जैसी प्रजा होगी वैसा ही राजा होगा। अणुव्रत वैज्ञानिक विचारधारा पर आधारित है। इस सिद्धांत का मैं समर्थन करता हूं।

नवादा-बिहार के सांसद डॉ. भोला सिंह ने कहा यह समय प्रतिक्रिया करने का नहीं बल्कि आत्मचिंतन करने का है। भ्रष्टाचार से हम विकास की ही भ्रूणहत्या कर रहे हैं। उत्पादन के सामूहिक और इस पर नियंत्रण व्यक्तिगत होने की स्थिति ने मनुष्यता को छीन लिया है।

कांगड़ा-हिमाचल प्रदेश के सांसद डॉ. राजन सुशान्त ने कहा हम खुद नैतिकता के बल का आशीर्वाद मांगने आए हैं। संसद पर जो तीर चलते हैं, वे हमें भी घायल कर जाते हैं। मैं खुद की जिम्मेदारी ले सकता हूं और अणुव्रत के नाम पर एक फोरम का गठन करने की हिमायत करता हूं।

महासमन्द-छत्तीसगढ़ के सांसद चन्दूलाल साहू ने कहा चुनाव प्रक्रिया में खामी गलत लोगों को संसद तक पहुंचने में मदद करती है। इसमें बदलाव किए जाने की जरूरत है। मतदान को अनिवार्य भी किया जाना चाहिए। भ्रष्ट सांसदों को सही रास्ते पर लाने के लिए अणुव्रत का सहारा लिया जा सकता है।

राज्यसभा सांसद-छत्तीसगढ़ गोपाल व्यास ने कहा एक संस्कृति रक्षा संसदीय मंच का निर्माण पहले से हो चुका है। अणुव्रत के नियम मानने वाले सांसदों को इसी संगठन की छाया में लाया जा सकता है।

उदयपुर के सांसद रघुवीर प्रसाद मीणा ने कहा लोग मंदिरों और मस्जिदों में विश्वास खोज रहे हैं। आज जन-प्रतिनिधियों की तुलना में संतों की प्रतिष्ठा अधिक है। संतों को छवि सुधारने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। इससे विश्वास बढ़ेगा।

शिमला-हिमाचल प्रदेश के सांसद वीरेन्द्र कश्यप ने कहा संसद के नौ सौ सदस्यों में से महज नौ यहां पहुंचे हैं। भले ही हम कम हों, लेकिन यह छोटी सी शुरुआत इतिहास बन सकती है।

अहमदनगर-महाराष्ट्र के सांसद दिलीप गांधी ने कहा वोट मांगने वाला समाज का सबसे कमजोर व्यक्ति होता है। वह सही को सही और गलत को गलत नहीं कह पाता। यह गोष्ठी देश को नई दिशा देने की क्षमता रखती है।

दो परम्पराओं के आचार्यों का मिलन

बीकानेर, 13 दिसंबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण एवं मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के आचार्य विजय धर्मधुरंदर सूरिश्वर का मिलन बीकानेर में गौडी पार्श्वनाथ मंदिर में हुआ। इस अवसर पर सामूहिक प्रवचन हुए। आचार्य महाश्रमण एवं तपःगच्छ के आचार्य विजय धर्मधुरंदर सुरिश्वर ने एक ही मंच से संबोधित करके यह संदेश दिया कि विचार भेद, मतभेद ये असहमति की दीवारें इतनी ऊंची न हो कि आपसी व्यवहार व बातचीत न हो। दोनों ही आचार्यों एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा भगवान महावीर के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने तथा जैन दर्शन के सिद्धांत के लिए एकजुट होकर कार्य करें।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि संप्रदाय से अधिक महत्व अहिंसा का है। धर्म से बढ़कर दूसरा कोई मंगल नहीं है। अहिंसा, संयम एवं तपस्या में धर्म है। प्राणीमात्र के प्रति अनुकम्पा की चेतना अहिंसा है। मानव में मानवता लाने के लिए अणुव्रत की आचार संहिता बनाई।

आचार्य विजय धर्मधुरंदर सुरिश्वर ने कहा आकृति से मानव बनाने से क्या होगा, जब तक प्रकृति से मानव नहीं बनेंगे। जब तक हममें पशुता है तब तक पूर्ण मानव नहीं है। सर्ववृति उसके बाद अणुव्रत एवं अणुव्रत से महाव्रत एवं महाव्रत से वीतरागता की पावनता को आत्मसात् करना चाहिए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा मानव में मानवीयता के गुण स्थापित हो।

प्रातः सोहन कोठी से एक भव्य जुलूस के रूप में आचार्य महाश्रमण अपनी धवल सेना के साथ महात्मा गांधी रोड, कोटगेट, जेल रोड पहुंचे तो आचार्य धर्मधुरंदर ने अपने साधुओं एवं श्रावकों के साथ में आचार्य महाश्रमण का स्वागत किया।

चरित्र का संकट देश का प्रमुख संकट

नई दिल्ली, 14 दिसंबर। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति की ओर से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मोतीलाल बोरा के निवास पर मुनि सुधाकर के सान्निध्य में 'राष्ट्र चरित्र निर्माण व अणुव्रत' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। मोतीलाल बोरा ने कहा राष्ट्र के समक्ष नाना प्रकार की समस्याएं हैं। उन सबमें मेरी दृष्टि से चरित्र का संकट सबसे बड़ी समस्या है। जब तक इस समस्या का समाधान नहीं होगा तब तक राष्ट्र का उत्थान संभव नहीं है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर हमें राष्ट्र चरित्र निर्माण की सही दिशा प्रदान की है। अणुव्रत के संकल्प चारित्रिक और नैतिक मूल्यों के विकास के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। अणुव्रत आंदोलन से जुड़कर गर्व की अनुभूति कर रहा हूं। ज्ञातव्य है कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री व उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रह चुके हैं।

मुनि सुधाकर ने कहा प्राचीन युग में भारत को विश्वगुरु होने का सम्मान प्राप्त हुआ है। यहां से सारे विश्व को धर्म और चरित्र निर्माण का प्रकाश प्राप्त हुआ था पर आज सत्ता और अर्थ के प्रभाव से चारित्रिक और नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। इसलिए अणुव्रत के कार्यक्रमों का महत्त्व सभी को स्वीकार करते हुए अणुव्रत को दैनिक जीवन के साथ जोड़ने की अपेक्षा है। संगोष्ठी में अनेक वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। अणुव्रत के कार्यकर्ताओं ने मोतीलाल बोरा को अणुव्रत साहित्य भेंट किया।

आचार्य महाप्रज्ञ की कृति 'प्रकृति विहार' का लोकार्पण एवं प्रज्ञा पुरस्कार

श्रीडूंगरगढ़, 30 नवम्बर, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में ओसवाल पंचायत भवन में पधारे। तुलसीराम चोरड़िया व अन्य कार्यकर्ताओं ने आचार्यश्री का स्वागत किया। आचार्यश्री पार्श्वनाथ मन्दिर में भी पधारे और वहां स्तोत्र पाठ किया। इस अवसर पर सभा भवन में दो चरणों में आयोजित कार्यक्रम के प्रथम चरण में 'प्रज्ञा पुरस्कार समर्पण' एवं द्वितीय चरण में आचार्य महाप्रज्ञ की कृति 'प्रकृति विहार' का लोकार्पण किया गया।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'मन, वचन और काया का अशुद्ध प्रयोग नहीं करना चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञ कहते थे 'जो वाणी का दुरुपयोग नहीं करता, वह श्रेष्ठ प्राणी है।' अच्छा और कुशल वक्ता वह होता है, जो अनावश्यक नहीं बोलता। जिसका मन शुद्ध रहता है, उसके भाव भी शुद्ध रहते हैं। व्यक्ति की जैसी भावना होती है, वैसे ही उसका कार्य होता है। मन, वचन और काया की सुरक्षा जिसने कर ली, उसकी आत्मा पवित्र बनी रहेगी।' प्रकृति विहार पुस्तक के संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने कहा 'आचार्य महाप्रज्ञ संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने मुनि अवस्था में अनेक बार संस्कृत में आशु कविताओं की रचना की। युवाचार्य काल में भी संस्कृत में लेखन का कार्य चलता रहा।

प्रथम चरण में प्रज्ञा पुरस्कार समर्पण कार्यक्रम रहा। इस वर्ष का प्रज्ञा पुरस्कार श्रीडूंगरगढ़ निवासी, गुवाहाटी प्रवासी भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी व जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलाधिपति तथा विकास परिषद के संयोजक लालचन्द सिंघी को प्रदान किया गया। पुरस्कार समर्पण कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल की बहनों के मंगल संगान से हुआ। भीखमचन्द पुगलिया ने आचार्यश्री के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। मुनि धनंजयकुमार ने अपनी जन्मभूमि में आचार्यश्री का स्वागत किया। उन्होंने अपने संसारपक्षीय अग्रज लालचन्द सिंघी के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। जैविभा के अध्यक्ष सुरेन्द्र चोरड़िया एवं मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. चारित्रप्रज्ञा ने प्रस्तुत संदर्भ में अपने उद्गार व्यक्त किए। कन्हैयालाल छाजेड़ ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया। अशोक दूगड़ ने लालचन्द सिंघी को प्रशस्तिपत्र एवं जैविभाध्यक्ष सुरेन्द्र चोरड़िया व उम्मेद दूगड़ ने मोमेंटो भेंट किया।

दूसरे चरण में आचार्य महाप्रज्ञ की कृति 'प्रकृति विहार' का लोकार्पण हुआ। बीकानेर कॉलेज के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. दुलीचन्द शर्मा ने प्रस्तुत कृति के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा 'आचार्य महाप्रज्ञ समुद्र की जलराशि के समान अथाह बुद्धि को धारण करने वाले थे। उनकी प्रज्ञा नये-नये विषयों को खोजने में लगी रहती थी।' आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन के अनेक घटना-प्रसंगों की चर्चा करते हुए मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने पुस्तक के संपादन में सहयोगी बने व्यक्तियों का नामोल्लेख किया और कहा 'हम आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में पूज्य गुरुदेव के कार्यों को आगे बढ़ाते रहेंगे।' कृति के संपादक मुनि राजेन्द्रकुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए ग्रंथ की प्रथम कृति पूज्य चरणों में उपहृत की। मुख्य नियोजिका ने कृति महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को भेंट की।

दिल्ली विश्वविद्यालय में नशामुक्ति अभियान

नई दिल्ली, 6 दिसंबर। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ एवं अणुव्रत महासमिति के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली विश्व-विद्यालय के नॉर्थ कैम्पस में स्थित टैगोर हॉल में अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में नशामुक्ति अभियान का शुभारंभ एक विशेष कार्यक्रम के माध्यम से हुआ। मुख्य अतिथि अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका, विशिष्ट अतिथि अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट थे। अध्यक्षता श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के प्रिंसिपल पी.सी. जैन ने की। कार्यक्रम का प्रारंभ राज गुनेचा द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ।

मुनि राकेशकुमार ने अपने उद्बोधन में कहा नशीले पदार्थों के सेवन से मनुष्य की विवेक चेतना लुप्त हो जाती है। आज जो नाना प्रकार के अपराध बढ़ रहे हैं नशा उसका प्रमुख कारण है। यदि स्वस्थ समाज और राष्ट्र का निर्माण करना है तो नशे की प्रवृत्ति का परित्याग जरूरी है। मनुष्य के खाद्य व पेय पदार्थ ऐसे होने चाहिएं जिससे शरीर और मन स्वस्थ बने। मादक द्रव्य शरीर और मस्तिष्क दोनों के लिए भयानक हानिकारक है। मुनिश्री ने विद्यार्थियों को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी व विश्वविद्यालय के परिसर को नशामुक्त बनाने का आह्वान किया।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने कहा आचार्य तुलसी ने वर्षों पूर्व कहा था नशा नाश का द्वार है जिसे आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। नशामुक्ति अभियान अणुव्रत आंदोलन का मुख्य कार्यक्रम है। मुनिश्री के सान्निध्य में जो अभियान चला है वह सफल बने ऐसी मंगल कामना करता हूं। अणुव्रत पाक्षिक के संपादक एवं अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा नशा मानव संस्कृति का शत्रु है। बढ़ते अपराध, आत्महत्याओं के आंकड़े, टूटते परिवार, बिखरते रिश्ते, बढ़ता भ्रष्टाचार जिनकी जड़ों में कहीं न कहीं नशा ही मुख्य कारण है। आज विद्यार्थी समाज भी नशे की गिरफ्त में उलझ रहा है। उन्होंने अपने कॉलेज जीवन के संस्मरणों के माध्यम से बताया कि विद्यार्थी का दृढ़ संकल्प उसे नशे की बुराई से बचा सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए एस.आर.सी.सी. के प्रिंसिपल पी.सी. जैन ने कहा विश्वविद्यालय का सौभाग्य है कि मुनिश्री का हमारे परिसर में आगमन हुआ है। जैन संतों का त्याग व तपस्या में जीवन स्वतः प्रेरणा का श्रोत बनता है। विद्यार्थियों में बढ़ती नशे की जड़ें जिन्हें जड़ मूल से मिटाना आज वक्त की जरूरत है। मुनिश्री से मेरा पहले भी मिलन हुआ है। हम विश्वास दिलाते हैं यह अभियान लाखों विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बनता हुआ उनके चरित्र-निर्माण का सशक्त माध्यम बनेगा।

मुनि सुधाकर ने कहा आज देश को जितना खतरा नक्सलवाद, आतंकवाद व भ्रष्टाचार से नहीं है उससे कई गुना अधिक खतरा बढ़ते नशे की प्रवृत्ति से है। छात्र संघ के सदस्यों को नशामुक्ति अभियान को आगे बढ़ाने के लिए द्रुत गति से कार्य करने की अपेक्षा है। छात्र संघ के अध्यक्ष जितेन्द्र चौधरी ने कहा हम मुनिश्री के आशीर्वाद से अणुव्रत महासमिति के साथ मिलकर छात्रों में बढ़ती नशे की वृत्ति को दूर करने का सतत् प्रयास करेंगे। छात्र संघ की उपाध्यक्ष प्रिया डबास ने मुनिश्री एवं अतिथियों का परिसर में स्वागत करते हुए अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प प्रकट किया।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रशिक्षक रमेश कांडपाल ने विद्यार्थियों को नशामुक्ति के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के संगठन मंत्री योगेन्द्र शास्त्री ने विद्यार्थियों को नशामुक्ति संकल्प ग्रहण करने की प्रेरणा दी। उसके पश्चात् विद्यार्थियों ने मुनिश्री के समक्ष नशा न करने का संकल्प लिया। संचालन छात्र संघ की सचिव नीतू डबास ने किया।

इस अवसर पर विद्यार्थियों ने मुनिश्री के साथ परिसर में पदयात्रा करते हुए नशामुक्ति रैली निकाली। जिससे विश्वविद्यालय में अणुव्रत का स्वर गूंज उठा। कार्यक्रम के प्रारंभ में दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के मुख्य कार्यालय के बाहर अणुव्रत आचार संहिता के बोर्ड का अनावरण किया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा, संयुक्तमंत्री बाबूलाल गोलछा, कोषाध्यक्ष रतन सुराणा, उपमंत्री डॉ. बी.एन. पांडेय, शिक्षा मंत्री राज गुनेचा, दिल्ली सभा के अध्यक्ष के.के. जैन, उपाध्यक्ष हेमराज बैद, नाथूराम जैन, महामंत्री नरपत मालू, अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष सुखराज सेठिया, पदमचंद जैन, दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के मंत्री प्रकाश भंसाली सहित अनेक विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे।

आपका मुँह
ऍश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

विद्यालय में अणुव्रत कार्यक्रम

हिरियूर। समणी निर्देशिका ज्ञानप्रज्ञा के सान्निध्य एवं अणुव्रत समिति हिरियूर के तत्त्वावधान में अणुव्रत महासमिति के निर्देशक धनराज तातेड़ के अथक प्रयासों से जवाहरलाल नेहरू रूरल हाई स्कूल, आदिवाल में अणुव्रत का कार्यक्रम रखा गया। धनराज तातेड़ की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम करीब दो घंटे चला। इस कार्यक्रम में स्कूल के बच्चे एवं अध्यापक संभागी बने। समणी ज्ञानप्रज्ञा ने आचार्य तुलसी का परिचय देते हुए अणुव्रत के नियमों का सरल भाषा में बच्चों को समझाया और बच्चों को आह्वान करते हुए कहा कि वे अपने जीवन में प्रामाणिकता एवं नैतिकता को प्रमुखता दें तथा सादगीपूर्ण जीवन शैली को जीवन में अपनाएं। तनाव दूर करने एवं स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु आसन एवं प्राणायाम के प्रयोग करवाए। इन प्रयोगों की बच्चों एवं अध्यापकों ने सराहना की।

इसी संदर्भ में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष एम. नागराज ने आचार्य तुलसी के जीवन के कुछ प्रसंग, अणुव्रत का सूत्रपात, इसकी उपयोगिता एवं इसके नियमों की विस्तार से चर्चा की। करीब 300 बच्चों एवं 15 अध्यापकों की उपस्थिति में अणुव्रत महासमिति के निर्देशक धनराज तातेड़ ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आचार्य तुलसी के अवदानों की विस्तार से चर्चा की एवं अणुव्रतों का उद्घोष क्यूं प्रत्येक मानव के लिए आवश्यक है? बताया और कहा कि अणुव्रती बनने के लिए किसी भी धर्म, संप्रदाय की बाध्यता नहीं है। उनका यह नारा कि इंसान पहले इंसान - फिर हिन्दू या मुसलमान। पूरे विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पाठ पढ़ाने एवं सबको एक सूत्र में बांधने के लिए पर्याप्त है एवं उनका यह दिवा स्वप्न साकार बनने की कामना करते हुए उन्हें मानव मात्र के हितैषी बताया। इस सभा में अणुव्रत समिति के सदस्य मांगीलाल तातेड़, जोगाराम, उदयराज चौपड़ा, मूलचंद चौपड़ा भी उपस्थित थे। अणुव्रत समिति हिरियूर द्वारा हर बार की तरह इस बार भी बच्चों में पुस्तकें एवं पेन वितरित किये गये।

पुष्पा सिंघी को श्रेष्ठ कवयित्री लेखिका सम्मान

कटक। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन कटक शाखा के द्वितीय महा अधिवेशन में मुख्य अतिथि उड़ीसा सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री देवी प्रसाद मिश्र एवं विशिष्ट अतिथि राज्यसभा सांसद राशिभूषण, कटक क्षेत्र के तीनों विधायक प्रभात विश्वाल, प्रभात रंजन त्रिपाठी, देवाशीष सामन्त राय उपस्थित थे। संस्था के अध्यक्ष सूर्यकांत सांगोनेरिया ने स्वागत वक्तव्य में कहा उड़ीसा में प्रवासित मारवाड़ी समाज के अवदान व वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विशिष्ट प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

सम्मान क्रम में श्रेष्ठ कवयित्री व लेखिका सम्मान पुष्पा सिंघी को प्रदान किया गया। उन्हें शाल्यार्पण, सम्मान पत्र व रजत प्रतीक चिह्न भेंट कर मुख्य अतिथि ने उनके उज्जवल भविष्य की मंगलकामना की। कार्यक्रम संयोजिका डॉ. नीना अग्रवाल ने कवयित्री की प्रकाशित आठ पुस्तकों का जिक्र करते हुए कन्या भ्रूणहत्या की समस्या पर लिखित उपन्यास 'अजन्मा अस्तित्व' को मिली लोकप्रियता का विशेष जिक्र किया। साहित्य क्षेत्र में इससे पूर्व भी पुष्पा सिंघी को कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इस अवसर पर उपस्थित संभागियों ने उन्हें बधाई दी। अणुव्रत महासमिति परिवार की हार्दिक बधाई।

प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान

दिल्ली, 4 दिसम्बर। अणुव्रत महासमिति के तत्त्वावधान में शिशु भारती स्कूल कृष्णानगर में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये गये। इसमें काफी विद्यार्थी लाभान्वित हुए। अणुव्रत महासमिति की शिक्षा मंत्री राज गुनेचा ने अणुव्रत गीत का संगान किया एवं विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान के प्रयोग भी करवाए। अणुव्रत महासमिति के अर्थमंत्री रतनलाल सुराणा ने बच्चों को वर्गीय अणुव्रत नियमों की जानकारी देते हुए विद्यार्थी अणुव्रत के संकल्प करवाये। अणुव्रत कार्यकर्ता प्रिया सोनी ने भी अपने विचार रखे। शिशु भारती की प्रधानाचार्य नीता कपूर ने अणुव्रत महासमिति के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा अणुव्रत महासमिति समाज सुधार की दिशा में अच्छा कार्य कर रही है। हम पूरी तरह से आपके साथ हैं। अणुव्रत महासमिति से प्रिंसिपल नीता को किट भेंट की गयी।

- **दिल्ली, 8 दिसंबर** को अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में सर्वोदय बाल विद्यालय राजगढ़ कॉलोनी में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोग अणुव्रत महासमिति की शिक्षा मंत्री व योग प्रशिक्षक राज गुनेचा द्वारा करवाये गये। जिसमें लगभग 1500-1600 बच्चों ने भाग लिया। सभी बच्चों को आसन, ध्यान व संकल्प करवाये गये। बच्चों को बहुत अच्छा लगा।

प्रधानाचार्य एस.के. जैन ने बच्चों को बताया कि अणुव्रत आंदोलन के तहत अणुव्रत महासमिति का एक अच्छा कार्य है। संकल्प से बच्चों में किस तरह से चेतना जागृत हो सकती है। कायोत्सर्ग से तनावमुक्त जीवन जी सकते हैं। कुछ बच्चों ने कहा कि अब हम प्रतिदिन नियमित रूप से प्रयोग करेंगे। कार्यक्रम की सफलता में सुंदर देवी चोरड़िया व स्नेहलता सेठिया का सराहनीय श्रम रहा। विद्यालय में अणुव्रत साहित्य भेंट किया गया। उपस्थित संभागियों ने अणुव्रत संकल्प के फार्म भरे।

विद्यार्थियों की वाद-विवाद प्रतियोगिता

हिसार। अणुव्रत समिति हिसार द्वारा साध्वी कंचनकुमारी 'लाडनूं' के सान्निध्य में ''संयुक्त परिवार - उपहार या भार'' विषय पर 'अणुव्रत सेवी' बलराज सिंगला की अध्यक्षता में विभिन्न स्कूलों के बच्चों की वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन सभा भवन कटला रामलीला चौक में किया गया। इसमें विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में पी. जी.एस.डी.सी.से. विद्यालय के छात्र अजीत प्रथम, इसी स्कूल की छात्रा दीक्षा द्वितीय स्थान पर रही। तृतीय स्थान जे.एन. आर्य गर्ल्स सी.से. की अनुराधा को मिला। ट्राफी पी.जी.एस.डी.सी.से. विद्यालय ने जीती।

कार्यक्रम में जयकुमार जैन महासचिव दिगम्बर जैन सभा हरियाणा, उषा जैन सेवानिवृत लेक्चरार, नन्द कुमार जैन महामंत्री हरियाणा प्रांतीय सभा ने निर्णायक की भूमिका निभाई। कुन्दनलाल गोयल अध्यक्ष अणुव्रत समिति हिसार ने सभी आगन्तुक अतिथियों व बच्चों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सभी विजेता प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न एवं साहित्य देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में नरेश जैन अध्यक्ष सभा हिसार, महावीर प्रसाद जैन, लक्ष्मीसागर जैन, धनपत सिंह जैन, राजकुमार जैन, प्रो. डी.के. जैन अध्यक्ष हरियाणा अणुव्रत समिति, महिला मंडल तथा अनेक भाई-बहन उपस्थित थे।

राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस

भिवानी। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के 97वें जन्मदिवस पर हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा प्रेक्षा विहार में एक्शन कैंसर हॉस्पीटल दिल्ली के सहयोग से निःशुल्क कैंसर एवं जनरल रोग निवारण शिविर का आयोजन किया गया। शुभारंभ कैंसर हॉस्पीटल के चेयरमैन मांगेराम अग्रवाल, नन्दकिशोर अग्रवाल एवं पदमचंद जैन ने साध्वी यशोमति के सान्निध्य में किया। शिविर में 350 मरीजों की विशेष जांच की गयी। इसमें 180 मरीजों को डॉ. जे.बी. गुप्ता ने जांच कर निःशुलक दवाइयां वितरित की।

साध्वी यशोमति ने कहा आचार्य तुलसी का जीवन समाज सुधार का जीवन था और कैंसर रोग निवारण जैसे शिविरों का आयोजन करना उनको सच्ची श्रद्धांजलि है। कैंसर हॉस्पीटल के डॉ. राजेश जैन ने कैंसर से बचाव के टिप्स बताते हुए कहा 40 प्रतिशत कैंसर जनित बीमारियों से स्वस्थ जीवन शैली द्वारा बचा जा सकता है। एक्शन हॉस्पीटल द्वारा शिविर में चयनित किए गए मरीजों को विशेष चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने की घोषणा की गयी। सुरेन्द्र जैन एडवोकेट एवं प्रो. देवेन्द्र जैन ने कहा आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत की आचार संहिता अपनाकर स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

इस अवसर पर लक्ष्मीसागर जैन, लाजपतराय जैन, घीसाराम जैन, शिवरतन गुप्ता, पवन बुवानीवाला, नरेश गर्ग, विकास जैन, माणिक चंद नाहटा, प्रेमलता जैन, आनन्द जैन, प्रीतम अग्रवाल, डॉ. जे.बी. शर्मा, डॉ. एस.के. दास, श्रुति भाटिया, मनीष पांडे, सुजीता सिंह, आशा अग्रवाल, जसलीन, विकास, रेहान, सुधाकर शर्मा, सुहैल अब्बास, विनोद जैन, रमेश जैन, मैना सेठिया, भरत सौलंकी, शेरसिंह आर्य, बजरंग जैन, महंत जगन्नाथ, मंजू जैन तथा रुचि बंसल सहित अनेक डॉक्टर एवं गणमान्य लोग उपस्थित थे।

शिविर का संयोजन समिति के मंत्री रमेश बंसल ने किया। समिति द्वारा सभी चिकित्सकों एवं अतिथियों का स्मृति चिह्न द्वारा सम्मान किया गया।

स्वाध्याय है ज्ञान का खजाना

देवगढ़। मुनि प्रसन्नकुमार ने सभा भवन में आयोजित ''करे अपनी पहचान'' विषयक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा हम अपनी पहचान ध्यान और स्वाध्याय से कर सकते हैं। स्वाध्याय ज्ञान का खजाना है। ज्ञानी बने बिना स्वयं की पहचान नहीं हो सकती और स्व-समय, पर-समय की जानकारी नहीं हो सकती है। भटकते और भ्रमित वही लोग होते हैं, जिनका ज्ञान का धरातल मजबूत नहीं होता है।

सम्यग् ज्ञान के बिना मिथ्या दृष्टि यानि मिथ्या धारणा दूर नहीं होती। गलत को गलत नहीं मानता है। करे धर्म तो फूटे कर्म करे पाप तो खाए धाप। इस धारणा से बुराई छूटती नहीं। इस जगह पर याद रहे देर है किन्तु अंधेर नहीं। इस धारणा से दृष्टिकोण बदल सकता है। अज्ञानता सबसे बड़ा दुख है। व्यक्ति में व्यसन, नशा आदि बुराइयां प्रवेश कर जाती हैं। उसमें सबसे बड़ा कारण अज्ञानता है। जुआ, चोरी, शराब, धूम्रपान की लत पड़ जाती है। इसके बाद व्यक्ति पश्चाताप करता है। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है एवं वह व्यसन की गिरफ्त में पड़कर अपने परिवार को बर्बाद कर चुका होता है। अतः जरूरी है कि व्यक्ति व्यसन से हमेशा दूर ही रहे, ताकि इसकी लत न पड़े।

विनम्रता से ही विद्या का विकास

समदड़ी। भगवान महावीर विद्या मंदिर समदड़ी में आयोजित ''मूल्यपरक शिक्षा का आयाम जीवन विज्ञान'' विषयक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुनि मदनकुमार ने कहा जीवन मूल्यों की शिक्षा ही सरभूत शिक्षा है। ज्ञान को ग्रंथों और पंथों से त्रिकाल जीवन व्यवहार में लाना होगा। इसके लिए शिक्षा को अध्यात्म ओर नैतिकता से अनुप्राणित करना जरूरी है। शिक्षा को अनुशासन, सहनशीलता, संयम और मधुर भाषा के द्वारा प्रायोगिक बनाया जा सकता है।

मुनि कोमलकुमार 'उमरी' ने कहा प्रज्ञा की साधना आत्मोन्नति का सोपान है। दृष्टि और आचरण की शुचिता के लिए प्रज्ञा का जागरण जरूरी है। जीवन निर्माण के लिए केवल पढ़ना और लिखना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि विनम्र बन सद्ज्ञान को दैनिक जीवन में आत्मसात बनाना जरूरी है। मुनिश्री ने कहानी के माध्यम से विनम्र बनने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर शिवकुमार गुप्ता ने सभी का स्वागत किया। पिश्ता देवी छाजेड़ ने अणुव्रत गीत का संगान किया। मोतीलाल ढेलड़िया ने विचार रखे। विकास जोशी, किशोर सेन, लीला देवी पामेचा उपस्थित थे। सभी छात्रों ने वर्गीय अणुव्रत संकल्प किये।

- मुनि मदनकुमार ने महिला मंडल द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर के संभागियों को संबोधित करते हुए कहा विनम्रता से विद्या का विकास होता है। और ज्ञान बढ़ता है। अहंकार व्यक्ति के विवेक को नष्ट कर देता है। अहंकार के कारण ज्ञान धूमिल हो जाता है और अज्ञान बढ़ जाता है। विनम्रता के विकास से हम अहंकार पर विजय प्राप्त करें। क्रोध की स्थिति का परिष्कार करना ही नवीनता का उजागर होना है। धर्म एक ऐसा तत्त्व है, जिसके द्वारा नवीनता आती रहती है। जैसे भोजन करते ही ताकत आ जाती है वैसे ही धर्म के द्वारा शीघ्र ही नवीनता आ जाती है।

मुनि कोमलकुमार ने कहा ये छोटे-छोटे बच्चे कल के भविष्य हैं। बहुत जरूरी है उनमें नैतिकता व अच्छे संस्कारों का बीजारोपण हो। अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों को अपने जीवन में उतारें, तभी जीवन में बदलाव संभव है। इस अवसर पर रेश्मा छाजेड़, धनराज छाजेड़, जिन्नदेवी छाजेड़, मांगीलाल जीरावला, प्रशिक्षक डालचंद नौलखा, विजयराज संकलेचा, मुनि शान्तिप्रिय ने अपने विचार रखे।

वृद्ध अभिभावकों के प्रति सेवाभाव

दिल्ली, 1 दिसंबर। वर्तमान में मूल्य संकट एवं पाश्चात्य कुसंस्कृति के प्रभावों के कारण भारतीय समाज एवं परिवारों में अपने वृद्ध अभिभावकों के प्रति सेवाभाव में आ रही कमी एक बहुत भयंकर समस्या है। जिसका सही समाधान है मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम से बच्चों में प्रारंभ से ही ऐसे सुसंस्कारों का निर्माण जो इस बात को निश्चित करे कि वे बच्चे युवा होने पर अपने वृद्ध माता-पिता एवं पारिवारिक जनों का न केवल कर्त्तव्य भावना के साथ अपितु अत्यन्त विनम्रता, प्रेम एवं सेवाभावना के साथ श्रवण कुमार की भांति आजीवन परवररिश करेंगे। समय आने पर अपने तुच्छ स्वार्थों एवं विलासिता की जीवनशैली का परित्याग कर अपने आप को न्योच्छावर करने के लिए भी तैयार रहेंगे।'' ये उद्गार प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने एज-केयर-इण्डिया द्वारा इण्डिया इन्टरनेशनल सेंटर में आयोजित ''वृद्ध दिवस'' पर बृहद समारोह में व्यक्त किए। समारोह का उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने किया।

मुनिश्री ने अपने भाषण में इस बात पर बल दिया कि जब तक हम प्रायोगिक शिक्षा द्वारा मूल्यों के बीज वपन नहीं करेंगे, सेवा भावना का पल्लवन नहीं हो सकेगा। वृद्ध जनों की चित्त समाधि एवं मानसिक शांति के लिए उन्हें प्रेक्षाध्यान, अनुप्रेक्षा, कायोत्सर्ग एवं योग के सरल प्रयोगों का अभ्यास करवाना चाहिए जिससे वे अपने स्वभाव में परिवर्तन कर सके। पारिवारिक जीवन को कलहमुक्त एवं शांत सहवासमय बनाने के लिए जीवन विज्ञान की शिक्षा ही एकमात्र उपाय है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने कहा यद्यपि सरकार द्वारा वृद्ध एवं अपाहिजों के कल्याणार्थ काफी योजनाएं चलाई जा रही हैं, पर भ्रष्टाचार के कारण उन तक कितना पहुंच पाता है, यह कहना कठिन है। वृद्ध जनों को इन योजनाओं का सही लाभ मिल सके इसलिए एज-केयर-इण्डिया जैसी संस्थाएं आगे आएं। शीला दीक्षित ने इस संस्था के पदाधिकारियों को साधुवाद दिया तथा उपस्थित वृद्ध महिलाओं एवं पुरुषों का सम्मान किया।

कार्यक्रम में मुनि सुमतिकुमार, मुनि अजितकुमार, मुनि अभिजीत कुमार एवं मुनि आदित्यकुमार ने अपने विचार रखे। संयोजन प्रेक्षासाधक डॉ. जे. सी. बत्रा (वरिष्ठ एडवोकेट, सुप्रीमकोर्ट) ने किया। वरिष्ठ आयु:प्राप्त वसंतराज भण्डारी (जीनीवा) का विशेष सम्मान किया गया।

तनावमुक्ति का उत्तम उपाय है कायोत्सर्ग

कोलकाता। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में कोलकाता सभा भवन में तनाव मुक्ति विषयक कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने कहा साधना का प्रारम्भ कायोत्सर्ग से होता है। कायोत्सर्ग का अर्थ है चैतन्य के प्रति जागरूकतापूर्वक शरीर का उत्सर्ग। कायोत्सर्ग ध्यान की अनिवार्य भूमिका है।

साध्वीश्री ने कहा कि कायोत्सर्ग तनाव मुक्ति की उत्तम प्रक्रिया है। इससे मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक तनाव दूर होता है। तनाव जनित रोगों से सहज ही मुक्ति मिलती है। उच्च रक्तचाप, दिल का दौरा, नाड़ी तंत्रीय अस्त-व्यस्तता, पाचनतंत्रीय दुर्बलता इन सारी बीमारियों का कारण है मानसिक या भावनात्मक तनाव। शिविर के मुख्य प्रशिक्षक बजरंग जैन ने पारिवारिक स्वास्थ्य संवर्द्धन में प्रेक्षाध्यान का महत्व पर विभिन्न दृष्टियों से रोचक प्रस्तुति देते हुए कायोत्सर्ग से शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक प्रसन्नता और भावनात्मक पवित्रता उपलबध होती है।

साध्वी मधुलता ने ध्यान और कायोत्सर्ग के प्रयोग करवाए। जतन बैंगानी ने बजरंग जैन का साहित्य भेंट कर सम्मान किया। संचालन वीणा श्यामसुखा ने किया।

प्रेक्षाध्यान के वैज्ञानिक प्रमाणों की प्रस्तुति

दिल्ली। ''इण्डिया हैबीटेट सेंटर'' में आयोजित पंचदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जैन, बोध, वेदान्त एवं योग दर्शन में प्रतिपादित ध्यान-पद्धतियों के वैज्ञानिक अध्ययन में विश्व-विख्यात वैज्ञानिकों एवं ध्यानसाधकों के बीच हुए संवाद से यह स्पष्ट सिद्ध हो गया है कि मनुष्य के मस्तिष्कीय परिवर्तत एवं व्यवहार-परिष्कार में ध्यान की अहम भूमिका है। सम्मेलन का आयोजन माइंड एण्ड लाइफ इन्स्टीट्यूट, यू. एस. ए. द्वारा किया गया। इस संस्थान के अध्यक्ष दलाई लामा है।

जैन ध्यान पद्धति पर वैज्ञानिक दृष्टि से प्रकाश डालते हुए प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने बताया किस प्रकार प्रेक्षाध्यान के द्वारा चेतना के सूक्ष्म स्तरों पर परिवर्तत घटित कर मनुष्य की उन मस्तिष्कीय प्रक्रियाओं में परिष्कार किया जा सकता है जो मनुष्य के नकारात्मक संवेगों एवं व्यवहारों के लिए जिम्मेवार है। उन्होंने जैन साधना पद्धति में प्राचीन काल से प्रचलित विभिन्न प्रकार के अभ्यासों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उपस्थित सभी परंपराओं के संभागियों ने इस प्रस्तुति की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

दलाई लामा ने कहा ''मैं इस प्रस्तुति से अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ। अन्य वैज्ञानिकों ने भी इसी प्रकार प्रेक्षाध्यान की विभिन्न प्रक्रियाओं के महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक स्वरूप को बहुत ही पसंद किया। मुनि अभिजीतकुमार ने संभागी वैज्ञानिकों के साथ व्यक्तिशः सम्पर्क स्थापित किया तथा प्रेक्षाध्यान के विषय में वैज्ञानिक आधारों पर चर्चा की।

संभागियों में दलाई लामा, डॉ. रिचर्ड डेविडसन, पी.एच.डी. हावर्ड विश्वविद्यालय, डॉ. जॉन डून, एमोरी विश्वविद्यालय, डॉ. डेनियल गोलमेन, मनोवैज्ञानिक एवं प्रख्यात लेखक, डॉ. पी.एन. टण्डन, नेशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर, हरियाणा, डॉ. कपिला वात्स्यायन, एम.पी. राज्यसभा की प्रमुख उपस्थिति रही।

जीवन विज्ञान दिवस समारोह

शास्त्री नगर-जयपुर। स्वस्थ जीवन, स्वस्थ तन और स्वस्थ मन ही जीवन विज्ञान का प्रमुख लक्ष्य है। जीवन विज्ञान समस्याओं का समाधान है। विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 8 तक के विद्यार्थियों में जीवन विज्ञान का अध्ययन समग्र रूप से सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक रूप में निरंतर चल रहा है। इससे बच्चों में नैतिकता और अनुशासन में वृद्धि हुई है। जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों में शरीर और स्वास्थ्य के साथ मानसिक, भावात्मक और बौद्धिक क्षमता का विकास हुआ है। ये विचार स्थानीय विद्यालय के प्रधानाचार्य उमेश गौड़ ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। विद्यालय में आचार्य महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस को ''जीवन विज्ञान दिवस'' के रूप में मनाया गया।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में जीवन विज्ञान रैली का आयोजन किया गया। इसमें जीवन विज्ञान के स्लोगन और विचारों का प्रचार-प्रसार किया गया। रैली के पश्चात् विद्यालय प्रांगण में पर्यावरण संरक्षण पर वार्ता आयोजित हुई। इसमें बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण पर चित्रांकन किया। बच्चों को योगाभयास भी कराया गया।

दूसरे चरण में विद्यार्थियों की भाषण प्रतियोगिता और कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। संयोजन दीपक ओझा ने किया।

www.terapanthinfo.com

साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस

चेन्नई। तमिलनाडु प्रादेशिक अणुव्रत समिति के तत्वावधान में ''अणुव्रत दिवस'' पर साम्प्रदायिक सौहार्द व सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन मुनि धर्मेशकुमार के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम में तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग के चेयरमेन विन्सेंट चिन्नदुरै, मुख्य काजी मुफ्ती डॉ. सलाऊद्दीन मोहममद अयुब, बौद्ध भिक्षु डॉ. वी.एम. मौर्य मेतापाल, गुरूनानक सत्संग सभा के मंत्री हरबंस सिंह आनंद, राजयोग प्रशिक्षिका ब्रह्मकुमारी निलिम बेन एवं तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य प्यारेलाल पीतलिया मुख्य रूप से उपस्थित थे। प्रारंभ मंजू गेलड़ा, सरिता चोरड़िया एवं सरिता मूथा द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

तमिलनाडु अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संपतराज चोरड़िया ने अणुव्रत आंदोलन की महत्ता पर विचार रखे एवं सम्मेलन में आमंत्रित विविध धर्मगुरुओं एवं अतिथियों का संक्षिप्त परिचय भी दिया। अणुव्रत पत्रिका के तमिल संस्करण की संपादिका माला कातरेला ने आचार्य तुलसी के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए कहा बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, झोपड़ियों से लेकर संसद भवन एवं राष्ट्रपति भवन तक एवं अज्ञानी से लेकर प्रखर प्रकाण्ड विद्वानों के दिलो-दिमाग में गुरुदेव तुलसी की अटूट छाप थी। उन्होंने मजदूर, व्यापारी, विद्यार्थी, शिक्षकगण, राजनेता, सरकारी या गैर-सरकारी दफ्तर, ऑफिसर सभी वर्ग के व्यक्तियों को अणुव्रत के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र कल्याण में संपूर्ण योगदान दिया।

इस अवसर पर उपस्थित सभी धर्मगुरुओं ने साम्प्रदायिक सौहार्द को युगीन मांग कहते हुए तमिलनाडु अणुव्रत समिति के प्रति आभार व्यक्त किया। सभी का मानना था कि कोई भी धर्म या मजहब, आपस में लड़ना, वैर-विरोध करना नहीं सिखाता। राजनीति से मुक्त विविध धर्मगुरुओं का समय-समय पर एक मंच पर सम्मेलन होने से विविध धाराओं के विचारों का, भावनाओं का सौहार्दपूर्ण वातावरण में आदान-प्रदान होगा।

मुनि धर्मेशकुमार ने कहा आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर स्वस्थ समाज की दिशा में नैतिकता का पाठ पढ़ाया। आचार्य तुलसी राजनीति में धर्माचरण के प्रबल पुरोधक थे। ऐसे क्रांतिकारी सत्पुरुष द्वारा जनकल्याण हेतु प्रदत्त अवदानों को हमें आगे बढ़ाकर राष्ट्र कल्याण एवं समृद्ध राष्ट्र निर्माण में हम सबको अपना योगदान देना है। आचार्य तुलसी के जन्म दिवस की आयोजना तभी सार्थक बनेगी। समारोह में आगत अतिथियों का मोमेन्टो द्वारा सम्मान किया गया।

अणुव्रत समितियों से निवेदन

अणुव्रत महासमिति से सम्बद्ध सर्व स्थानीय, जिला, प्रादेशिक अणुव्रत समितियां निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें

- जिन समितियों का दो वर्ष का कार्यकाल पूरा हो गया है, वहां नया चुनाव शीघ्र करावें।
- अपने दो वर्ष के कार्यकाल का प्रतिवेदन शीघ्र अणुव्रत महासमिति कार्यालय दिल्ली में प्रेषित करें।
- आगामी नयी कार्यकारिणी नैतिक एवं अणुव्रत भावना के अनुरूप असांप्रदायिक हो।
- नयी कार्यकारिणी की सूची शीघ्र अणुव्रत महासमिति कार्यालय दिल्ली में प्रेषित करें।
- अणुव्रत आंदोलन को गति देने हेतु समय पर चुनाव होने अति आवश्यक है।

निर्मल एम. रांका, *अध्यक्ष*

अहिंसा यात्रा 2011

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण की प्रस्तावित अहिंसा यात्रा का संभावित यात्रा पथ एवं तिथियां

तिथि	दिन	स्थान	यात्रा (किमी. में)
जनवरी-2011			
1	शनिवार	चाड़वास	12
2	रविवार	छापर	4
3	सोमवार	कुहाड़िया	14
4	मंगलवार	भोजासर	12.3
5	बुधवार	रतनगढ़	11.5
22	शनिवार	पायली	8.8
23	रविवार	राजलदेसर (बाहरी)	4
24	सोमवार	राजलदेसर प्रवेश	
फरवरी-2011 (राजलदेसर से किशनगढ़)			
15	मंगलवार	पड़िहारा	
17	वृहस्पतिवार	छापर	
18	शुक्रवार	सुजानगढ़	
19-21	शनिवार-सोमवार	लाडनूं	
25-27	शुक्र-रविवार	खाटू	
मार्च-2011			
3-4	वृहस्पति-शुक्रवार	बोरावड़	
9	बुधवार	किशनगढ़	

www.terapanthinfo.com

विद्यार्थी अपनी सोच को बदले

भीलवाड़ा, 2 दिसंबर। समग्र विद्यार्थी जीवन की आब है शोभा। विद्यार्थी अपने जीवन को चाहे जैसे बना सकता है। अच्छा या बुरा। मिट्टी के बर्तन को छोटा-बड़ा किसी भी आकार में तैयार किया जा सकता है, परन्तु पकने के बाद आकृति में बदलाव नहीं आ सकता। ठीक उसी प्रकार से बाल्यावस्था में आकृति और प्रकृति दोनों को बदला जा सकता है। इसलिए विद्यार्थी अपने जीवन को निर्मित करने के लिए अपनी सोच को बदले ताकि जीवन नये ढंग से निर्मित हो सके। ये विचार मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने न्यू मॉर्डन पब्लिक माध्यमिक विद्यालय के 700 विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा धार्मिक सहिष्णुता की कमी आधुनिक समाज का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। सबको अपना-अपना धर्म सुप्रियर लगता है, लेकिन दूसरों के धर्म के प्रति सहिष्णुता भूलते जा रहे हैं। धर्म की मान्यताओं को हम ओढ़ लेते हैं किन्तु धर्म की वास्तविक शिक्षाओं का अनुसरण नहीं करते। यह सोच मानव जाति को बेहद नुकसान पहुंचा रही है। अणुव्रत का उद्घोष है व्यक्ति दूसरों के धर्म का खंडन न करे। यदि वे वृत्ति समाज में व्यापक रूप ले ले तो व्यक्ति में ही बदलाव नहीं राष्ट्र में भी बदलाव आ सकता है। युगधारा में तभी बदलाव लाया जा सकता है।

इस अवसर पर मुनिश्री ने अणुव्रत विद्यार्थी आचार संहिता की चर्चा करते हुए कहा परीक्षाओं में अवैधानिक (नकल) तरीके अपनाना अपने ही जीवन को मुसीबत में डालना है। विद्यार्थी अपने जीवन को आदर्श बनाये ताकि राष्ट्र आदर्श बन सके। मुनिश्री की प्रेरणा से 700 विद्यार्थियों ने अणुव्रत के 7 संकल्पों को स्वीकार किया।

अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण

टमकोर, 1 दिसंबर। टैगोर उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रसार निदेशालय जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की निर्देशिका समणी प्रतिभाप्रज्ञा के सान्निध्य में अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर समणी प्रतिभाप्रज्ञा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा श्रम और स्वच्छता जीवन को उन्नत बनाते हैं। विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों की स्थापना के साथ-साथ शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक विकास के लिए अणुव्रत की महती आवश्यकता है। अणुव्रत अर्थात् छोटे-छोटे संकल्पों के द्वारा विद्यार्थियों में सुनहरे भविष्य को देखा जा सकता है।

समणी समताप्रज्ञा ने संकल्प शक्ति व आत्मविश्वास के विकास में अणुव्रत की महती आवश्यकता पर बल देते हुए लघु कथा के माध्यम से बतलाया कि हम जीवन को न अच्छा जीते हैं और न ही खराब। हम जीवन को ठीक-ठीक जीते हैं। अणुव्रत के द्वारा इसके सिद्धांतों को अपनाकर हम अपने जीवन स्तर को उच्च कोटि का बना सकते हैं। स्थानीय विद्यालय में प्रथम चार स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को साहित्य, पैन आदि दिये गये। इस अवसर पर पर्यवेक्षक प्रिंस कुमार चौरसिया व के.जी. मूंदड़ा ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में स्थानीय रा.बा. उ.मा.वि. में 35, रा.उ.मा.वि. में 180, सेठ रावतमल मेमोरियल मा. वि. में 53 तथा टैगोर उ.मा.वि. में कुल 134 विद्यार्थी सम्मिलित हुए। परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। आभार व्यक्त संस्था प्रधान रमेश कुमार ने एवं संचालन कन्हैया मोहन ने किया।

अध्ययन-मनन योग्य कृति

दिव्य जीवन

बिरदीचंद पोखरना

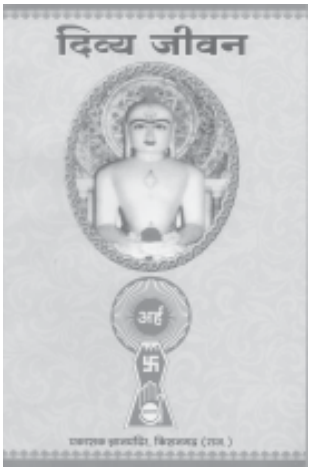

पुस्तक : दिव्य जीवन
संकलन : केवल चंद जैन, बैंगलोर
संपादन : कृष्णचन्द्र टवाणी, सुरेश जामड़
पृष्ठ : 232 ● मूल्य : 60 रुपए
प्रकाशक : ज्ञानमंदिर, सिटी रोड़, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.) 305801

प्रस्तुत कृति 'दिव्य जीवन' ज्ञान का एक बहुमूल्य खजाना है। इसमें अनेक धर्मों की विशिष्ट जानकारियों को इस प्रकार संजोया गया है, जिसमें वास्तविक जीवन की अनुभूतियां परिलक्षित है। इस ग्रंथ का अध्ययन कर पाठक भाव-विभोर होकर ज्ञान की दीप्ति एवं प्रज्ञा की ज्योति से अपनी अंतरात्मा में एक नवीन प्रकाश का अनुभव करता है। नास्तिक व्यक्ति भी आस्तिक बनकर प्रभु भक्ति में समर्पित हो जाता है। आज हमारे देश में श्रेष्ठ साहित्य का अभाव है। साहित्य समाज का दर्पण है। आज सुसंस्कारों के अभाव में जीवन विषमताओं के घनघोर अंधकार में डुबकी लगा रहा है। अंधकार से प्रकाश की ओर अज्ञान से ज्ञान की ओर, पाप से पुण्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर ले जाने वाली यह कृति निश्चय ही साहित्यिक क्षेत्र की अमूल्य धरोहर है।

जैन धर्म का अनेकांतवाद, गीता का उपदेश, रामायण का ज्ञान, गायत्री मंत्र का महत्व, बौद्ध धर्म की शिक्षाएं, राम एवं कृष्ण की महिमा, शिव की उपासना, ऋग्वेद का सार, पुराणों का ज्ञान, महाभारत का संग्राम, आगम का सार, महावीर का उपदेश, श्रीमद्भागवत गीता की महिमा इत्यादि का रसास्वादन लेना हो तो प्रस्तुत ग्रंथ निश्चय ही गीता, रामायण, आगम की तरह प्रत्येक भवन की शोभा को अलंकृत कर सकता है।

प्रस्तुत कृति में वेद, उपवेद, पुराण, स्मृति, दर्शन, शास्त्र, बौद्ध त्रिपिटिक, जैन दर्शन, पदम पुराण आदि की व्यापक ढंग से व्याख्या की गयी है। निःसंदेह यह कृति भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। जिससे सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र्य का जीवन में अनुसरण करने से सच्चे स्वरूप की ज्ञान-वृद्धि होती है। सत्संग जीवन का कोहिनूर हीरा है। इस कृति का तन्मयता से जो भी मानव अध्ययन-मनन एवं चिंतन करेगा उसे निश्चय ही परमानंद की प्राप्ति होगी। विश्व में जिस प्रकार ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, उसी प्रकार कृति के एक-एक शब्द, एक-एक वाक्य में ईश्वर तत्त्व विद्यमान है।

लेखक सभी धर्मों की तुलनात्मक समीक्षा भी करते तो अत्युतम रहता। भाषा, सरल, सुबोध एवं तेजोमय है। पाठक को गद्य-पद्य आदि का आनंद एक साथ आएगा। मेरी दृष्टि में पुस्तक का मूल्य न्यून है। यह पुस्तक प्रतिदिन मनन करने योग्य है।

धानमंडी, किशनगढ़, शहर (अजमेर)

www.terapanthinfo.com